

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी, जर्मनी;
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, वम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क १०

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

प्राकृतानन्द

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

प्राकृतानन्द

सम्पादक,

पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजय

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३

प्रथमावृत्ति ७५०

ख्रिस्ताब्द १९६२

मुद्रक- निर्णयसागर प्रेस, बम्बई

मुख पृष्ठ आदि के मुद्रक-श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

मूल्य ४.२५

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

द्वारा सम्पादित ग्रन्थ

- १ त्रिपुराभारती लघुस्तव - कर्ता-सिद्ध सारस्वत श्री लघुपण्डित
- २ कर्णामृतप्रपा - कर्ता-महाकवि ठक्कुर सोमेश्वर
- ३ बालशिक्षा व्याकरण - कर्ता-ठक्कुर संग्रामसिंह
- ४ पदार्थरत्नमञ्जूषा - कर्ता-पं० कृष्णमिश्र
- ५ शकुनप्रदीप - कर्ता-पं० लावण्य शर्मा
- ६ उक्तिरत्नाकर - कर्ता-पं० साधुसुन्दरगणी
- ७ प्राकृतानन्द - कर्ता-रघुनाथ कवि
- ८ हम्मीरमहाकाव्य - कर्ता-नयचन्द्र सूरि
- ९ राठौड़ारी वंशावली
- १० सचित्र राजस्थानी भाषा साहित्य ग्रन्थ सूची
- ११ मीरां वृहत् पदावली
- १२ रत्नपरीक्षादि सप्त ग्रन्थ संग्रह - कर्ता-ठक्कुर फेरू

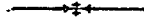


विषयविवरणम्

—००५००—

१-प्रास्ताविकं वक्तव्यम्	१-३
२-प्राकृतानन्दस्य सूत्रानुक्रमणिका	४-१२
३-प्राकृतानन्द-प्राकृतप्रकाशयोः सूत्राणां भेदानुक्रमणिका	१३-१७
प्रथमे परिच्छेदे	
४-अजन्तपुल्लिङ्गप्रकरणम्	१-१८
५-अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्	१९-२३
६-अजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्	२३-२७
७-हलन्तपुल्लिङ्गप्रकरणम्	२७-३३
८-हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्	३४ वां
९-हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्	”
१०-निपाताधिकारः	३५-३७
द्वितीये परिच्छेदे	
११-धातुप्रकरणम्	३८-५२
परिशिष्टम्	
क-प्राकृतशब्दानुक्रमणिका	५३-७६

प्रास्ताविक वक्तव्य



प्रस्तुत 'प्राकृतानन्द' ग्रन्थ प्राकृत भाषा का एक संक्षिप्त व्याकरण है। इसकी रचना पण्डित रघुनाथ ने की है जो कवि-कण्ठीरव के विरुद्ध से अपने आपको उल्लिखित करते हैं। ये ज्योतिर्विद् सरस के पुत्र थे। इसके अतिरिक्त इनके समय और स्थान आदि के बारे में कुछ उल्लेख नहीं मिलता। इस ग्रंथ की एक पुरानी हस्तलिखित पोथी विद्वद्वर्य आगमप्रभाकर मुनिराज श्री पुण्य-विजयजी महाराज को शायद वीकानेर में मिली थी। जिस पर से उन्होंने स्वयं इसकी प्रतिलिपि की थी। यह प्रति जैसा कि इसके अन्त में लिखा मिलता है— संवत् १७२६ में लाभपुर अर्थात् लाहोर में लिखी गई थी। सन् १९५२ में जब मेरा वीकानेर जाना हुआ तो उन्होंने यह ग्रन्थ मुझे दिखलाया। मैंने इसे राज-स्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकट करने का अपना विचार प्रदर्शित किया तो उक्त सौजन्य-मूर्ति मुनिवर ने अपनी वह प्रतिलिपि बड़े आनन्द के साथ मुझे दे दी। मैंने उसको छपने के लिये बम्बई के निर्णय सागर प्रेस में दी। दीर्घकाला-वधि में यह ग्रन्थ प्रेस ने छाप कर पूरा किया। कुछ अन्यान्य कारणों से भी ग्रन्थ के प्रकाशन में और अधिक विलम्ब होता रहा। इस तरह प्रतिलिपि के प्राप्त होने के बाद कोई १० वर्ष अनन्तर अब यह ग्रन्थ पाठकों के कर-कमलों में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त कर रहा है।

'प्राकृतानन्द' प्राकृत भाषा का एक छोटा-सा व्याकरण है। ग्रन्थकार का कहना है कि जो पण्डित के कुल में पैदा हुआ है परन्तु अल्पबुद्धि है और कुछ साहित्य का रसास्वाद करना चाहता है उसके ज्ञान के लिये यह प्रयत्न किया गया है। संस्कृत की तरह प्राकृत भाषा में लिखित साहित्य-संपत्ति बहुत ही विशाल है। विविध विषय के हजारों ही ग्रंथ प्राकृत भाषा में लिखे गये हैं। यद्यपि ब्राह्मण-सम्प्रदाय में प्राकृत साहित्य का उतना अधिक संचय नहीं मिलता है, परन्तु जैन और बौद्ध संप्रदाय में प्राकृत भाषा ही का प्राधान्य रहा और इसलिये इन दोनों संप्रदायों में इस भाषा में लिखित साहित्य-संपत्ति की विशालता बहुत अधिक है। बौद्ध साहित्य की प्राकृत भाषा जो कि मूल रूप में 'मागधी' भाषा कहलाती है, अब 'पाली' के नाम से प्रसिद्ध हो गई है। परन्तु जैन साहित्य-संपत्ति मुख्य रूप से प्राकृत के व्यापक नाम से ही प्रसिद्धि प्राप्त करती रही है। भाषा-विदों ने जैन साहित्य की प्राकृत भाषा को 'अर्द्धमागधी'

और 'महाराष्ट्री' प्राकृत के नाम से विभक्त किया है। प्राचीन जैन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी संमिश्रित है और बाकी का सारा साहित्य प्रायः 'महाराष्ट्री' और 'शौरसेनी' संमिश्रित है। जैन सम्प्रदाय का मौलिक वाङ्मय प्रायः सारा इसी प्रकार की प्राकृत भाषा का अपूर्व भंडार है।

द्रविड़ जाति के भारतीय जन-समूहों की द्रविड़कुलीन भाषाओं के अतिरिक्त समग्र आर्य जातीय जन-समूह की जो विद्यमान भाषायें हैं उनकी उत्पत्ति इस मूल पुरातन प्राकृत से है। शाक्य भगवान् बुद्ध और ज्ञात पुत्र तीर्थंकर महावीर के समय से लेकर वर्तमान काल तक की आर्य-भाषाभाषी व भारतीय जनता की मातृ-भाषा प्राकृत के नाम से संबोधित की जाती रही है। वह प्राचीन प्राकृत अब अनेक उपभाषाओं और देश-विशेष की बोलियों में विभक्त हो गई है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है जैन संप्रदाय का सारा ही मौलिक साहित्य प्राकृत में है। कई ब्राह्मण विद्वानों ने भी प्राकृत भाषा में कुछ विशिष्ट ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें काव्य और नाटक ग्रंथ मुख्य हैं। गौडवहो, सेतुबन्ध, लीलावई, गाय्या सत्तसई आदि उत्कृष्ट प्राकृत काव्यकृतियां हैं जो ब्राह्मण विद्वानों की देन हैं। इसी तरह कर्पूरमंजरी आदि अनेक नाटक कृतियां भी प्राकृत के प्रभाव को प्रकट करती हैं।

जिस तरह संस्कृत भाषा का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करने के लिये पाणिनी आदि अनेक प्राचीन-अर्वाचीन विद्वानों ने नाना प्रकार के व्याकरण-ग्रन्थों की रचनायें की हैं उसी तरह प्राकृत भाषा का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से वररुचि आदि अनेक विद्वानों ने प्राकृत व्याकरण ग्रन्थों की रचनायें की हैं। यों तो प्राकृत भाषा के बीसों छोटे-बड़े व्याकरण-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं पर उनमें वररुचि का 'प्राकृत-प्रकाश' सब से प्राचीन ग्रन्थ समझा जाता है। प्राकृत-भाषा का सर्वांग संपूर्ण व्याकरण ग्रन्थ हेमचन्द्र सूरि का है जो उनके महान् व्याकरण ग्रन्थ 'सिद्धहेमशब्दानुशासन' का अष्टम अध्याय स्वरूप है। इस महान् व्याकरण ग्रन्थ के सात अध्यायों में संस्कृत भाषा का परिपूर्ण व्याकरण ग्रथित है और अष्टम अध्याय में प्राकृत भाषा का परिपूर्ण व्याकरण है। इसमें प्राकृतोत्तरकालीन अपभ्रंश भाषा का भी विस्तृत व्याकरण है जो उनकी मौलिक देन है। हेमचन्द्र सूरि के बाद अनेक छोटे-बड़े प्राकृत व्याकरण बनते रहे और उनमें से अनेक ग्रन्थ प्रकाशित भी हो गये हैं।

वररुचिकृत 'प्राकृत-प्रकाश' हेमचन्द्रसूरि के 'प्राकृत व्याकरण' की अपेक्षा संक्षिप्त और अपूर्ण-सा है परन्तु प्राचीन होने के कारण उसका महत्त्व अवश्य है।

प्रस्तुत 'प्राकृतानन्द' वररुचिकृत 'प्राकृत-प्रकाश' का ही एक प्रक्रियात्मक संकलन है। संस्कृत के लघुकौमुदी आदि प्रक्रियात्मक शैली के अनुकरण में रघुनाथ कवि ने 'प्राकृत-प्रकाश' को इस प्रकार प्रक्रियात्मक रूप देकर इस प्राकृतानन्द का संकलन किया है। इसमें कुल ४१६ सूत्र हैं, इससे मालूम देता है कि मूल 'प्राकृत-प्रकाश' के कुछ सूत्र छोड़ भी दिये हैं। पर, साथ में कुछ ऐसे भी सूत्र दिये हैं जो 'प्राकृत-प्रकाश'की प्रसिद्ध पुस्तक में नहीं मिलते। चौखम्भाग्रन्थावलि में भामहकृत मनोरमाव्याख्या सहित जो प्राकृत प्रकाश छपा है उसमें कुल ४८७ सूत्र हैं जिनमें के ८७ सूत्र इस प्राकृतानन्द में नहीं हैं; और साथ में इसमें २१ सूत्र ऐसे हैं जो प्राकृत-प्रकाश में नहीं मिलते। तुलना की दृष्टि से दोनों ग्रन्थों की सूत्र-सूचि इसके साथ दी जाती है। संशोधक विद्वानों को इसका कुछ उपयोग होगा। मुद्रित प्राकृत-प्रकाश के और प्राकृतानन्द के सूत्रों में कुछ पाठ-भेद भी दृष्टि-गोचर होते हैं। लिपिकर्ताओं के कारण ऐसे पाठ-भेदों का होना स्वाभाविक है।

यह ग्रंथ अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है। ऑफ़्ट ने अवश्य ही इसका सूचन 'कॅटेलागस कॅटलॉगरम्' भा. १; पृ. ३६१ पर किया है। इस कृति का नाम सूचीकार को लाहोर के पण्डित राधाकृष्ण के 'पुस्तकानां सूचीपत्रम्' में मिला है, जो काश्मीर-निवासी पं० राजाराम शास्त्री ने लिखा था और एशियाटिक सोसाइटी बंगाल के प्रोसीडिंग्स, जून १८८० ई. में इसका उल्लेख हुआ है। प्रस्तुत पुस्तक की प्रेस-काँपी जिस प्रति से तैयार की गई है वह भी सं. १७२६ वि में लाहोर में ही लिखी गई थी।

सौजन्यमूर्ति विद्वद्वत्तन मुनिवर श्री पुण्यविजयजी महाराज के प्रति हम अपना हार्दिक कृतज्ञभाव प्रकट करते हैं कि जिन्होंने स्वयं अपने हस्ताक्षरों में प्रस्तुत रचना की सुन्दर प्रेस कापी कर के हमको राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकट करने के लिये प्रदान की। प्रेस की कठिनाई के कारण इसके प्रूफादि संशोधन कार्य कार्यालय द्वारा ही किया गया अतः कुछ अशुद्धियाँ भी रह गई हैं। विद्वज्जन उसे स्वयं शुद्ध कर लेंगे, ऐसी विज्ञप्ति के साथ कवि रघुनाथ ने स्वयं ग्रन्थ के प्रारंभ में इस विषय में जो बहुत ही सुन्दर उक्ति प्रकट की है उसी को हम भी यहां पुनः उद्धृत कर देना चाहते हैं।

दोषदुष्टमिदमित्यवज्ञया हातुमिच्छत न जानु साधवः।

शैवलं किल विहाय केवलं निर्मलं किमु न पीयते जलम् ॥

प्राकृतानन्दस्य सूत्रानुक्रमणिका



क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
१	अइ षले सम्भाषणे	३००
२	अंकोठे ललः	२००
३	अः क्षमा-श्लाघयोः	१७२
४	अक्ष्यादिषु छः	११८
५	अचि मइच	३
६	अज्ज आमन्त्रणे	३०६
७	अत आ मिपि वा	३२६
८	अत ए से	३१८
९	अत ओत् सोः	८
१०	अतोऽमः	१५
११	अत् पथि-हरिद्रा-पृथिवीषु	१६५
१२	अदसो दो मुः	२८१
१३	अदातो यथादिषु वः	४५
१४	अद् दुक्कले वा लस्य द्वित्वम्	१८६
१५	अधो म-न-याम्	४०
१६	अन्मुकुटादिषु	५८
१७	अन्त्यस्य हलः	२६
१८	अपौ ङ्विः	३०६
१९	अमि ह्रस्वः	१५८
२०	अम्हे जस्-शसोः	२६७
२१	अम्हेहितो अम्हेसुत्तोभ्यसि	२७४
२२	अम्हेहि भिसि	२७२
२३	अम्हेसु सुपि	२७८
२४	अयुक्तस्य रिः	६५
२५	अलाहि निवारणे	२६६
२६	अवाद् गाहेर्वाहः	३५३
२७	अव्वो अम्मो दुःखा-ऽऽक्षेप-विस्मापनेषु	३०१
२८	अव्वो दुःख-सूचना-सम्भावनेषु	२६८
२९	असेर्लोपः	३७१
३०	अस्तेरासिः	३७३
३१	अस्थिनि	२१७

क्रमाङ्क		सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
३२	अस्मदो हमहमह्रं सी	२६५	३२
३३	अहम्मिरमि च	२६६	३२
३४	आङि च ते दे	२५६	३१
३५	आङि मे ममाई	२७०	३२
३६	आङो ज्ञादेशस्य	१७०	२१
३७	आच्य गीरवे	१६७	२५
३८	आन्च सी	१५५	१८
३९	आ णो-णमोरङ्सि	२३२	२८
४०	आत्मनो अप्पाणो वा	२३९	२९
४१	आदीती बहुलम्	१७४	२१
४२	आदेरतः	२७	४
४३	आदेर्यो जः	३९	५
४४	आपीडे म	५३	७
४५	आमः एसि	२२३	२७
४६	आमन्त्रणे वा विन्दुः	२३३	२८
४७	आमि सि	२४६	३०
४८	आमो णं	२३८	२९
४९	आम्र-ताम्रयोर्वः	२०८	२६
५०	आलाने न लोः	२१४	२६
५१	आल्विल्लोल्लालवत्तोत्ता मत्तुपः	३१४	३७
५२	आवे च	४०२	४९
५३	आ समृद्ध्यादिपु वा	४३	६
५४	आहे इआ काले	२५५	२७
५५	इअं भूते	३२९	३९
५६	इच्च बहुपु	३२७	३९
५७	इज्जस्-शसोदीर्घश्च	१८५	२३
५८	इट्-मयोमिः	३२५	३९
५९	इत् एत् पिण्डसमेपु	१२१	१४
६०	इत्तेस्तः पदादेः	३११	३६
६१	इत् पुरुषे रोः	६४	८
६२	इत् सैन्धवे	१६४	२४
६३	इत्व-द्वित्ववर्जं राजवदनादेशे	२४०	२९
६४	इदद्वित्वे	२३७	२९
६५	इदम इमः	२२६	२८
६६	इदम्-एतत्-कि-यत्-तद्-यन्टा इणा वा	२२०	२७

क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
६७	इदीपत्-पक्व-स्वप्न-वेतस-व्यञ्जन-मृदङ्गाऽङ्गरेषु २८	४
६८	इदुतोः शसो णो १४०A	१७
६९	इद् ईतः पानीयादिषु ५१	७
७०	इद् ऋष्यादिषु ४८	६
७१	इद्भ्यः स्सा-से २८५	३४
७२	इर-किर-किला अनिश्चिताख्याने २९३	३५
७३	इवे व्वः ३०८	३६
७४	ईअ भूते ३२८	३९
७५	ईत् सिंह-जिह्वयोश्च ५०	७
७६	ईत् स्त्रियाम् ४१९	५२
७७	ईदूतोर्ह्रस्वः १७७	२२
७८	ईद् धैर्ये १९५	२४
७९	उत्त ओत् तुण्डरूपेषु ५५	७
८०	उत्तामे स्सा हा च ३३५	४०
८१	उत्तारीया-ऽनीययोर्यस्य जो वा ८६	११
८२	उत्समोर्लः ३४३	४२
८३	उत् सौन्दर्यादिषु ७६	९
८४	उदुम्बरे दोर्लोपः २०९	२६
८५	उदूखले द्वा वा १८७	२३
८६	उदूतो मधूके १८८	२३
८७	उदो विजः ३७९	४६
८८	उद् ऋत्वादिषु २९	४
८९	उद्घ्मो धूमा ३६३	४४
९०	उपरि लोपः क-ग-ङ-त-द-प-ष-साम् ३६	५
९१	उः पद्म-तन्वीसमेषु १७९	२२
९२	उर्जस्-शस्-टा-ङ्स्-सुप्सु वा १५३	१८
९३	उलूहले ल्वा वा १८७A	२३
९४	उ-सु-मु-विध्यादिष्वेकस्मिन् ३३१	३९
९५	ऋत्त आरः सुपि १५२	१८
९६	ऋतोऽत् १२०	१४
९७	ऋतोऽरः ३६५	४४
९८	ऋत्वादिषु तो दः ६२	८
९९	एकाचो हीअ ३३०	३९
१००	ए च सुप्यङि-ङसोः १४	२
१०१	एच वत्वा तुमन्-तव्य-भविष्यत्सु ३३४	४०

क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
१०२ एत इद् वेदना-देवरयोः	६८	६
१०३ एतदः सात्वोत्वं वा	२४७	३०
१०४ एत् नीडा-ऽऽपीड-कीदृगीदृशेषु	५२	७
१०५ एन्नूपुरे	१६०	२४
१०६ ए भ्यसि	१४३	१७
१०७ ए शय्यादिपु	४१	५
१०८ एषामामो ष्हं	१४८	१७
११० ऐत एत्	६६	६
१११ एरावते च	८२	१०
११२ ओ च द्विधा कृञः	३१२	३७
११३ ओतोऽद् वा प्रकोष्ठे कस्य वः	७२	६
११४ ओदवा-ऽपयोः	३१०	३६
११५ ओ वदरे देन	१८६	२३
११६ ओ सूचना-परचाताप-विकल्पेषु	२६२	३५
११७ ओत्, ओत्	७३	६
११८ क-ग-च-ज-त-प-य-वां प्रायो लोपः	१०	२
११९ कवन्वे वो मः	८७	११
१२० कार्पापरौ	१२४	१४
१२१ कालायसे यस्य वा	२१०	२६
१२२ काशेर्वासः	३५१	४३
१२३ कि-यत्-तद्भ्यो ङस आसः	२२२	२१
१२४ किरौ प्रस्ने	२६७	३५
१२५ किमः कः	२१६	२७
१२६ किराते चः	६१	८
१२७ कुब्जे खः	६३	११
१२८ कृञः का भूत-भविष्यतोश्च	३६५	४८
१२९ कृजः कुणो वा	३६४	४८
१३० कृ-दा-श्रु-वचि-गमि-रुदि-दृशि-विदिरूपाणां काहं-दाहं सोच्छं वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं	३६७	४४
१३१ कृष्णो वा	१३३	१५
१३२ कैटभे वः	६०	११
१३३ कौशले वा	७५	६
१३४ क्ते	४१२	५१
१३५ क्ते तुरः	४११	५१
१३६ क्तेन दिष्णादयः	४१३	५१

क्रमाङ्क		सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
१३७	क्ते :	१०	५१
१३८	क्त्व ऊणः	४१५	५१
१३९	क्मस्य	१८१	२३
१४०	क्रीञ्जः किरणः	३९६	४८
१४१	क्रुधेर्भूरः	३८५	४७
१४२	क्लिष्ट-द्विलिष्ट-रत्न-क्रिया-शाङ्गेषु तत्स्वरवत् पूर्वस्य	१७१	२१
१४३	क्वचिद् डसि डचोर्लोपः	२३	३
१४४	क्वचिद् युक्तस्यापि	५४	७
१४५	क्वथेर्दः	३५८	४३
१४६	क्षमा-वक्ष-क्षणेष्वा वा	६७	८
१४७	क्षियोभिज्जः	३४०	४१
१४८	ख-घ-थ-ध-भां-हः	५९	७
१४९	खादि-धाव्योः खा-धौ	३३९	४१
१५०	गद्गदे रः	८४	१०
१५१	गमादीनां द्वित्वं वा	४०५	५०
१५२	गर्त्तडः	११७	१३
१५३	गर्भिते णः	८०	१०
१५४	गृहे घरोऽपती	२१२	२६
१५५	ग्रसेविसः	३५२	४३
१५६	ग्रहे दीर्घो वा	४०९	५१
१५७	ग्रहेर्गणहः	४००	४९
१५८	घुणो घोळः	३४८	४२
१५९	घे क्त्वा-तुमुन् तव्येषु	४१६	५१
१६०	ङसश्च द्वित्वं वाऽन्त्यलोपश्च	२३६	२९
१६१	ङसा से	२४५	३०
१६२	ङसि तुमो-तुह-तुज्झ-तुम्ह-तुम्भा	२६१	३१
१६३	ङसेः आ-दो-दु-हयः	२०	३
१६४	ङसो वा	१४४	१७
१६५	ङसो वा	१६२	१९
१६६	ङसौ तत्तौ तइत्तौ तुमादो तुमादु तुमाहि	२५९	३१
१६७	ङे ए म्मी	२२	३
१६८	ङेर्हि	२२४	२७
१६९	ङेस्सि-म्मि-त्थाः	१३६	१६
१७०	ङौ च मइ मए	२७१	३२

क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
१७१	डी तुमम्मि	३२
१७२	चतुरश्चत्तारो चत्तारि	२७
१७३	चतुर्थी-चतुर्दशयो स्तुना	२२
१७४	चतुर्थ्याः पण्ठी	३
१७५	चन्द्रिकायां मः	२०
१७६	चित्र चेन्न अवधारणे	३५
१७७	चित्रश्चित्राः	४७
१७८	चिन्हे घः	२५
१७९	च्चो व्रज-नृत्योः	४१
१८०	चौर्यसमेपु रिञ्चं	२५
१८१	छायायां हः	२०
१८२	जल्पेलो मः	४२
१८३	जस् शस्-डसि-आम्सु दीर्घः	१३
१८४	जस्-शस्-डसो णो	२३१
१८५	जस्-शसोर्लोपः	१२
१८६	जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च	१४०
१८७	जस ओश्च यूत्वम्	१३९
१८८	जसो वा	१५७
१८९	जिघ्रतेः पा-पाञ्चौ	३६२
१९०	जभो जंभाञ्च	३४६
१९१	ज्ञो जाण-मुणौ	३९८
१९२	ज्ञो राज्ज-एव्वी वा	३०८
१९३	ज्यायामीत्	१७३
१९४	भयि तद्धर्गन्तः	७
१९५	टाऽऽमोर्णः	१६
१९६	टा-डम्-डीनामिदेवदातः	१६०
१९७	टा-डचोस्तइ तए तुमए तुए	२५५
१९८	टा णा	१४१
१९९	टा णा	२३५
२००	टो डः	८८
२०१	ठा-भा-गाश्च-वर्तमान-भविष्यद्-चिध्याद्येकवचनेषु	३६१
२२०	ठो डः	१९९
२०३	डस्य च	१९८
२०४	णवरः केवले	२९५
२०५	णवरि आनन्तर्ये	२९६

क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
२०६	एण्वि वैपरीत्ये	३६
२०७	शिच एदादेरत आत्	४६
२०८	गुदेर्लोणः	४७
२०९	णो शसि	३२
२१०	त्तं वाऽमि	३०
२११	तद ओश्च	३०
२१२	तदेतदोः सः सावनपुंसके	३०
२१३	तल्-त्वयोर्दी-त्तणी	३७
२१४	तालवृन्ते षठः	२६
२१५	तिणिण जस्-शस्भ्याम्	१५
२१६	तुज्भे तुम्हे जसि	३०
२१७	तुज्भेसु तुम्हेसु सुपि	३२
२१८	तुज्भेहि तुम्हेहि तुब्भेहि भिसि	३१
२१९	तुमाइ च	३१
२२०	तुम्हाहितो तुम्हासुतो भ्यसि	३१
२२१	तुर्य-धैर्य-सौन्दर्या-ऽऽश्चर्य-पर्यन्तेषु रः	२४
२२२	तून इरः शीले	५१
२२३	तृपस्थिम्पः	४८
२२४	ते तिपोरिदेती	३५
२२५	तो डसेः	३०
२२६	तो-त्थयोस्तो लोपः	३०
२२७	तो दो डसेः	२७
२२८	त्य-थ्य-द्यां च्च-च्छ-ज्जाः	७१
२२९	त्रसेर्वज्जः	४६
२३०	त्रेस्ती	१५
२३१	त्वस्तुवरः	४३
२३२	थास्-सिपोः सि से	३६
२३३	दशादिषु हः	१४
२३४	दाढादयो बहुलम्	२६
२३५	दिक्-प्र वृषोः सः	३३
२३६	दिवसे सस्य	१२
२३७	दुहि-लिहि-वहां दुब्भ-लिब्भ-वब्भा	५०
२३८	दूङो दूमः	४७
२३९	दृशेः पुलञ्च-शिञ्चक-अवक्खाः	४५
२४०	दैत्यादिष्वइः	७०

क्रमाङ्क	सूत्रा	पृष्ठाङ्क
२४१	द्वैवे वा	२४
२४२	दोला-दण्ड-दशनेपु डः	११
२४३	दोहदे णः	११
२४४	द्वे रो वा	१२
२४५	द्विवचनस्य बहुवचनम्	२
२४६	द्वेदुवे दोणि वा	१७
२४७	द्वेर्दो	१७
२४८	घातोर्भविष्यति हिः	४१
२४९	घ्य-ह्योर्भः	१२
२५०	न डि-डस्योरेदातो	१७
२५१	नलो हलि	४
२५२	न त्यः	२२९
२५३	न घृत्तादिपु	११६
२५४	न नपुंसके	२१६
२५५	नपुंसके स्वमोरिदमिणामिणामौ	२८७
२५६	न विन्दु परे	१३०
२५७	न र-होः	११४
२५८	न विद्युति	२८
२५९	न शिरो-नभसी	२८८
२६०	न-सान्त-प्रावृट्-शरदः पुंसि	२४२
२६१	न स्तम्बे	१०९
२६२	नाऽऽतो ऽदातो	१६१
२६३	नाऽऽमन्यो सावोत्व-दीर्घत्व विन्दवः	२५
२६४	नानेकाचः	३२२
२६५	निपाताः	२८९
२६६	निरो माङो माणः	३७७
२६७	नीडादिपु च	१९३
२६८	नो णः सर्वत्र	९
२६९	नोत्सुकोत्सवयोः	१२६
२७०	न्त-माराणी शतृ-शानचोः	४१८
२७१	न्ति-हेत्या मो-मु-मा बहुषु	३२३
२७२	न्तु ह मो बहुषु	३३२
२७३	न्मो म्मः	९६
२७४	पटेः फलः	३४५
२७५	पत्तने	२०४

२७६	पदस्य	२५०	३०
२७७	पदः पालः	३८२	४७
२७८	परुष-परिष-परिखासु फः	६३	८
२७९	पर्यस्त-पर्याण-सौकुमार्येषु ल्लः	२०३	२५
२८०	पितृ-भ्रातृ-जामातृणामरः	१५४	१८
२८१	पृष्ठा-ऽक्षि प्रश्नाः स्त्रियां वा	१५६	१९
२८२	पो वः	८५	१०
२८३	पौरादिष्वउः	७४	९
२८४	प्रतिसर-वेतस-पलाकासु डः	३३	५
२८५	प्रथम-शिथिल-निप्रधेषु ढः	९२	११
२८६	प्रदीप्त-कदम्ब-दोहदेषु दोलः	८३	१०
२८७	प्रादेर्भवः	३३९	४१
२८८	प्रादेर्मौलः	३४९	४२
२८९	पो भः	९१	११
२९०	बाधेऽश्रुणि हः	१२३	१४
२९१	विसिन्यां भः	१८०	२२
२९२	बुड-खुप्पी मस्जेः	३९०	४८
२९३	बृहस्पती व-होर्भ-औ	१४५	१७
२९४	ब्रह्माद्या आत्मवत्	२४१	२९
२९५	भाव-कर्मणोर्वश्च	४०४	५०
२९६	भिदि-च्छिदोरन्तस्य न्दः	३९३	४८
२९७	भिन्दिपाले णडः	१२८	१५
२९८	भियो भा-बीही	३७६	४६
२९९	भिसो हि	१७	३
३००	भुजादीनां क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु लोपः	४१४	५१
३०१	भुवो हो-हुवी	३१६	३८
३०२	भ्यसो हितो सुत्तो	२१	३
३०३	मं ममं	२६८	३२
३०४	मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे आमि	२७६	३३
३०५	मत्तो मइत्तो ममादो ममादु ममाहि ऊसौ	२७३	३२
३०६	मध्यान्हे हस्य	१०६	१२
३०७	मध्ये च	३२१	३८
३०८	मन्मथे वः	९५	११
३०९	मममि डी	२७७	३३
३१०	मयूर-मयूख-योर्वा वा	४२	६
३११	मलिले लिनोरिलौ वा	२११	२६

क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
३१३	मातुरात्	२३
३१४	मिना स्सं वा	४०
३१५	मि-मो-मु-मानामघो हरच्	४५
३१६	मृजेर्लुभ-पुसौ	४६
३१७	मृदो लः	४८
३१८	मे मम मह मज्झ डसि	३३
३१९	मो विन्दुः	२
३२०	मो-मु मैहि-स्सा-हित्या	४०
३२१	मन-ज्ञ-पञ्चाशत् पञ्चदशेषु एः	१५
३२२	म्मिव-मिअ-विआ इवार्ये	३६
३२३	म्लै वा-वाओ	४३
३२४	यक ईअ-इज्जो	५०
३२५	यमुनाया मस्य	२०
३२६	यट्यां लः	२२
३२७	यावदादिषु वस्ये	१६
३२८	युवतस्य	३१
३२९	युधि-बुध्योर्भः	४७
३३०	युष्मदस्तं तुम्	३०
३३१	राज्ञश्च	२३०
३३२	रुदेवं	३७५
३३३	रुधेर्ध-म्मौ	३९२
३३४	रुपादीनां दीर्घः	३८४
३३५	रे अरे हिरे सम्भापण-रतिकलहा-ऽऽक्षेपेषु	३०४
३३६	रो रा	२८४
३३७	त्स्य टः	१३५
३३८	र्य-शय्या-अभिमन्युषु जः	११२
३३९	लवण-नवमल्लिकयोर्वेन	१६४
३४०	लादेशो वा	३१९
३४१	लाहल लाङ्गल-लाङ्गलेषु वा एः	९८
३४२	लृत्तः क्लृप्त इलि	१९१
३४३	लोपोऽरप्ये	१८३
३४४	वक्रादिषु	५
३४५	वर्गेषु युजः पूर्वः	३७
३४६	वर्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्ज्जः ज्जा वा	३२०
३४७	वसति-भरतयोर्हः	८१
३४८	विद्युत्-पीताभ्यां वा लः	३१५

३४९	विप्रकर्षः	३०	४
३५०	विह्वले म्भ-ही वा	१२९	१५
३५१	वृक्षे वेन र्वर्वा	६६	५
३५२	वृधेर्दः	३५५	४३
३५३	वृन्दे वो रः	२१३	२६
३५४	वृश्चिके ञ्छः	४७	६
३५५	वृष-कृष-मृष-हृषामृतोऽरिः	३५४	४३
३५६	वेः क्के च	३९७	४९
३५७	वेष्टेश्च	३४२	४२
३५८	वो च शसि	२५४	३१
३५९	वो भे तुजभायां तुम्हाणामामि	२६३	३१
३६०	शरुादीनां द्वित्वम्	३८७	४७
३६१	शकेस्तर-चञ्च-तीराः	३८८	४७
३६२	शद्-वृ-पत्योर्दः	३५७	४३
३६३	शारदो दः	२७९	३३
३६४	शाषोः सः	४४	६
३६५	शस एत्	२३४	२८
३६६	शेषः संस्कृतात्	३०७	३७
३६७	शेष-ऽऽदेशयोर्द्वित्वमनादौ	३५	५
३६८	शेषाणामदन्तता	३६९	४५
३६९	शेषोऽदन्तवत्	१३७	१६
३७०	श्च-त्स-प्सां छः	१२५	१४
३७१	श्मश्रु-श्मशानयोरान्दः	२०१	२५
३७२	श्रदो धो दहः	३७८	४६
३७३	श्रु-हु-जि-लू-धुवां ण्योऽन्त्येह्रस्वः	३५०	४२
३७४	द्वादीनां त्रिव्यनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा	३६६	४४
३७५	षट्-शावक-सप्तपर्णानां छः	९९	१२
३७६	ष्क-स्क-क्षां वखः	५६	७
३७७	ष्टस्य ठः	१७५	२२
३७८	ष्ठा-ध्या-गानां ठाञ्-भाञ्-गाञ्चाः	३६०	४३
३७९	ष्पस्य फः	२०६	२५
३८०	ष्म-यक्ष-विस्मयेषु ष्हः	११९	१४
३८१	संख्यायां च	१०१	१२
३८२	संज्ञायां वा	१०२	१२
३८३	सटा-शकट-कैटभेषु ङः	८९	११
३८४	सन्धावचामजूलोपविशेषा बहुलम्	१	१
३८५	समासे वा	१३१	१५

क्रमाङ्क		सूत्राङ्क	पञ्चाङ्क
३८६	सर्वज्ञतुल्येषु अस्य	१०५	१२
३८७	सर्वत्र लवणम्	३४	५
३८८	सर्वादिर्जस एत्वम्	१३५	१६
३८९	सीकरे भः	७६	१०
३९०	सुपः सुः	२४	४
३९१	सु-भिस्-सुप्सु दीर्घः	१३८	१६
३९२	सू कुत्सायाम्	३०३	३६
३९३	सूर्ये वा	११३	१३
३९४	सेवादिषु	१३२	१५
३९५	सोविन्दुर्नपुंसके	१८४	२३
३९६	स्तम्भे लः	११०	१३
३९७	स्तस्य थः	५७	७
३९८	स्त्रियां शस उदोती	१५६	१६
३९९	स्त्रियामात्	२८३	३४
४००	स्त्रियामात् एत्	१६३	१६
४०१	स्थाणावहरे	१५१	१८
४०२	स्नुपायां ण्हः	१६६	२०
४०३	स्नेहे वा	३८	५
४०४	स्पत्य सर्वत्र स्थितस्य	१२२	१४
४०५	स्फटिक-चिकुर-निकपेषु कस्य हः	७७	१०
४०६	स्फटिके लः	७८	१०
४०७	स्फुटि-चल्योर्वा	३४४	४२
४०८	स्फोटके	१११	१३
४०९	स्मरतेर्भर-सुमरौ	३६४	४४
४१०	स्स-स्सिमोरद् वा	२२७	२८
४११	स्तो डसः	१६	३
४१२	हन्तेर्ममः	३७०	४५
४१३	हरिद्रादीनां रो लः	६०	८
४१४	हश्च सी	२८२	३३
४१५	हुं दान-पृच्छा-निर्धारणे	२६०	३५
४१६	हु-वक्षु निश्चय-वितर्क-सम्भावनेषु	२६४	३५
४१७	हु-कोर्हीर-कीरी	४०६	५०
४१८	ह् नः-स्तः-ष्ण-क्षण-श्नां ण्हः	४६	६
४१९	ह् न-ह्ण-हो णु न-ल-मां स्थिति-रुद्ध्वम्	१०८	१२

प्राकृतानन्दप्राकृतप्रकाशयोः सूत्राणां भेदानुक्रमणिका

क्र.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	अंकोठे ल्लः	२००
	×	
	×	
	×	
१	अपौ व्वि	३०६
	अम्हेहितो अम्हेसुतो म्यसि	२७४
	×	
	×	
	×	
२	अंव्वो अम्मो दुःखाऽऽक्षेप- विस्मापनेषु	३०१
	असेर्लोपः	२६६
	×	
३	अस्थिति	२१७
	आडो ज्ञादेशस्य	१७०
	आच्च सौ	१५५
	×	
	×	
	आमः एसि	२२३
	आमि सि	२४६
	आल्विल्लोल्लालवत्तोत्ता मत्तुपः	३१४
	×	
	×	
४	इअं भूते	३२६
	×	
	इट् मयोमिः	३२५
	×	
	×	
	×	

क्र.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	अंकोले ल्लः	२।२५
१	अत इदेतो लुक् च	११।१०
२	अदीर्घः सम्बुद्धौ	११।१३
३	अनादावयुजोस्तथयोर्दधी	१२। ३
	×	
	अम्हाहिन्तो अम्हासुन्तोम्यसि	६।४६
४	अस्मदः सौ हके हगे अहके	११।६
५	अस्मदोजसावअं च	१२।२५
६	अयुक्तस्यानादौ	२।१
	×	
	अस्तेर्लोपः	७।६
७	अस्तेरच्छ	१२।१६
	×	
	आडो ज्ञस्य	३।५५
	आच सौ	५।३५
८	आत्मनि पः	३।४८
९	आनन्तर्ये णवरि	६।८
	आम एसि	६।४
	आमासि	६।१२
	आल्विल्लोल्लवन्तेन्तामत्तुपः	४।२५
१०	आविःक्त कर्मभावेषु वा	७।२८
११	आश्चर्यस्याच्चरिअं	१२।३०
	×	
१२	इ गृध्रसमेषु	१२।६
	इड् मिपोमिः	७।३
१३	इत्सदादिषु	१।११
१४	इः श्रीह्रीक्रीतक्लान्तक्लेशम्ला- नस्वप्नस्पर्शहर्षहिर्गर्हेषु	३।६२
१५	इवस्य पिवः	१०।४
१६	इवस विअ	१२।२४

क्र.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
५	इवे व्व	३०८
	ईत् स्त्रियाम्	४१६
	उत्तरीयाऽऽनीययोर्घस्य जो वा	८६
	उद्ध्मोद्धुमा	३६३
६	उद्धले द्वा वा	१८७
	उद्धले ल्वा वा	१८७ A
	×	
	×	
	एच्च क्त्वातुमुन् तव्य- भविष्यत्सु	३३४
	×	
	श्रीत् श्रीत्	७३
	×	
	×	
	×	
	क्रुवेर्भूरः	३८५
	×	
	×	
	×	
	×	
	क्वचिद् युक्तन्यापि	५४
	×	
	×	
	घे क्त्वा-तुमुन्तव्येषु	४१६
७	ङ्गा से	
	ङ्सि तुमो-तुह-तुज्भ-तुम्ह- तुम्हा	२६१
८	ङ्सो वा	१६२
	×	
	ङ्गे एम्मी	२२
	×	
	×	
	×	

क्र.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	×	
	ईच स्त्रियाम्	७११
	उत्तरीयाऽऽनीययोज्जो वा	२१७
	उद्ध्म उद्धुमा	८३२
	×	
	उद्धले ल्वा वा	१२१
१७	ऋरीति	१३०
१८	लृतः क्लृप्तः इतिः	१३३
	एच क्त्वातुमुन् तव्यभविष्यत्सु	७३३
१९	एवस्य जेव्व	१२८३
	आत् श्रीत्	१४१
२०	कन्यायां न्यस्य	१०१०
२१	करेष्वां रणोः स्थितिपरिवृत्तिः	४२८
२२	कृबृगृङ्गमां क्तस्य डः	१११५
	क्रुवेर्भूरः	८६४
२३	क्त्व इत्रः	१२१६
२४	क्त्व स्तूनम्	१०१३
२५	क्त्वान्तादुश्च	११११
२६	क्त्वो दाणिः	१११६
	क्वचित्पृक्तस्यापि	११११
२७	क्षस्य स्कः	१११८
२८	खिदेविसूरः	८६३
२९	गदंभसंभदंवितादिविच्छदिपु दंस्य	३२६
	घेत् क्त्वा तुमुन् तव्येषु	८१६
	×	
	ङ्सि तुमो तुह तुज्भ तुम्ह तुम्हाः	६३१
	×	
३०	ङ्सो हो वा दीर्घत्वञ्च	१११२
	ङ्गे रेम्मी	५१६
३१	ङ्गे देव हः	६१६
३२	चन्नेचम्पः	८६५
३३	चवगंस्य स्पष्टतया तथोच्चारणः	११५

क्र.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
६	चिअ चेअ अवधारणो	२६१
	×	
१०	जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च	१४०
	×	
	जस ओश्च यूत्वम्	१३६
	जस्-शस्-डसो णो	२३१
	×	
११	ज्ञो णज्ज-णव्वी वा	४०८
	×	
	×	
१२	भयि तहर्गान्तः	७
	टा-डस् डीनामिदे ददातः	१६०
	टा-ड्योस्तइ तए तुमए तुए	२५५
	×	
	×	
१३	णवरि आनन्तनर्ये	२६६
	×	
	णुदेर्लोणः	३८६
	णो शसि	२६६
	×	
	×	
	×	
	त्तं वाऽमि	२५३
	तुज्भेहि तुम्हेहि तुब्भेहि भिसि	२५८
	तृणइरः शीले	४१७
१४	ते-त्तिपोरिदेती	३१७
	त्रेस्ती	१५०
	×	
१५	दुहि-लिहि-वहां दुब्भ-लिब्भ	
	वब्भा	४०७
	×	
१६	दोहदे णः	६७
	×	

क्र.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	×	
३४	चिट्टस्य चिष्टः	१११४
	×	
३५	जश्शस्डसां णो	५१३८
	जसश्च ओ यूत्वम्	५११६
	जश्शस्डसां णो	५१३८
३६	जोयः	१११४
	×	
३७	ज्ञस्य ञ्जः	१०१६
३८	ञ्ज च्च	१०१११
	×	
	टाडसिडस्डीनामिदेददातः	५१२२
	टाड्योस्तइ तएतुमए तुमे	६१३०
३९	टामोर्णः	५१४
४०	डुकुवः करः	१२१५
	×	
४१	णिणंशसोर्वा क्लीवे	
	स्वरदीर्घश्च	१२१११
	णुदो णोल्ल	८१७
	णो शसि	६१४४
४२	णो नः	१०१५
४३	तत्तिपो रिदेतो	७११
४४	त्तिपात्थि	१२१२०
	तु च्चामि	६१२७
	तुज्भेहि तुम्हेहि भिसि	६१३४
	तृणइरः शीले	४१२४
	×	
	त्रस्ति	६१५५
४५	ददातेर्दे दइस्स लृटि	१२११४
	×	
४६	दृशोः पेक्खः	१२११८
	×	
४७	धातोभविकर्तृ कर्मसु	
	परस्मैपदम्	१२१२७

क्र.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	×	
	नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणामो	२८७
	नाऽऽमन्त्रो सावोत्व-दीर्घत्व	
	विन्दव	२५
	×	
	×	
	पदः पालः	२८३
	×	
	परुप-परिघपरिखासु फः	
	×	
	×	
	×	
	×	
	×	
१७	वाप्पेऽश्रुणि हः	१२३
१८	बृहस्पती व-होर्भ-श्री	१४५
	×	
	×	
	×	
१९	भियो-भाः वीही	३७६
	×	
	भ्यसो हितो सुत्तो	२१
	×	
	×	
	मृजेलुभ-पुसी	३७४
	×	
	यावदादिपु वस्य	१३४
	×	
	रुपादीनां दीर्घः	३८४
	×	
	×	

क्र.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
४८	न लृटि	१२१३
	नपुंसके स्वमोदिदमिण-	
	मिणामो	६१६
	नामन्त्रो सावोत्व-	
	दीर्घविन्दवः	५१२७
४९	नान्त्यद्वित्वे	७१९
५०	नैदावे	७१२९
	पदेः पालः	८११०
५१	पनसेऽपि	२१३७
	परुपपलितपरिखासु फः	२१३६
५२	पुत्रेऽपि क्वचित्	१२१५
५३	पैशाची	१०११
५४	प्रकृतिः शीरसेनी	१०१२
५५	प्रकृतिः संस्कृतम्	१२१२
५६	प्रकृत्या दोलादण्डदशनेपु	१२१३१
	×	
	×	
५७	ब्रह्मण्यविज्ञकन्यकानां ण्यम्-	
	न्यानां ञ्जो वा	१२१७
५८	भविष्यति मिपास्सं वा स्वर-	
	दीर्घत्वञ्च	१२१२१
५९	भाजने जस्य	३१४
	×	
६०	भोभुवस्तिङि	१२११२
	भ्यसो हित्तो सुत्तो	५१७
६१	मागवी	११११
६२	मिपो लोटि च	१२१२९
	मृजेलुभसुपी	८१६७
६३	ययि तद्गान्तः	४११७
	यावादादिपु वस्य	४१५
६४	राज्ञो राचि टाङ्गसिङ्ग-	
	ङिपु वा	१०११२
	रुपादीनां दीर्घता	८१४६
६५	यस्य रित्रः	१०१८
६६	यर्जयोर्य	१११७

क्र.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	लाहल-लाङ्गल-लाङ्गलेषु वा एः ६८	
	×	
२०	लृतः क्लृतः इति	१६१
	×	
	×	
	×	
	×	
	वे क्के च	३६७
	×	
	शकेस्तर-चअ-तीराः	३८८
	×	
	×	
	×	
	×	
	षट्-शावकसप्तपर्णानां छः	६६
	×	
	×	
	षटा-ध्या-गानां-ठाअ-भाअ-भाआः	३६६
	सर्वज्ञतुल्येषु अस्य	१०५
	×	
	×	
	×	
	×	
	×	
२१	सीकरे भः	७६
	×	
	×	
	×	
	×	
	हुंदानपृच्छानिर्धारणेषु	२६०
	×	
	×	
	ह् न-ह्ल-ह्लो पुनलमां स्थितिरूर्ध्वम्	१०८
	ह् नः स्तः ष्णक्षणाश्नां ष्हः	४६

क्र.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	लाहले एः	२४०
६७	लिहोर्लिज्भ	८४६
	×	
६८	वर्गिणां तृतीयचतुर्थयोर-	
	युजोरनाद्योराद्यौ	१०३
६९	वाष्पेऽश्रुणि हः	३३८
७०	विअवेअ अवधारणे	६३
७१	A विसिन्यां भः	२३८
७१	B वृहस्पती वहेर्भाञ्चौ	४३०
	वेक्वे च	८३१
७२	व्यापृते डः	१२४
	शकेस्तरव अतीराः	८७०
७३	शीकरे भः	२५
७४	श्रृगालशब्दस्य शिआला	
	शिआले शिआलकाः	१११७
७५	शेषं महाराष्ट्रीवत्	१२३२
७६	शीरसेनी	१२१
	षट्शावकसप्तपर्णानां हूः	२४१
७७	षसोः सः	११३
७८	ष्टस्य सटः	१०६
	षटाध्यागानांठाअभाअभाआः	८२५
	सर्वज्ञतुल्येषु नः	३५
७९	सर्वज्ञेऽङ्गितज्ञयोर्ण	१२८
८०	सर्वनाम्नां डे सित्वा	१२२६
८१	सिच	३३७
	×	
८२	स्तम्बे	३१३
८३	स्थश्चिदुः	१२१६
८४	स्मरतेः सुमर	१२१७
८५	स्त्रियामित्थी	१२२२
८६	स्नस्य सनः	१०७
	हुंदानपृच्छानिर्धारणेषु	६२
८७	हृदयस्य हितअकम्	१०१४
८८	हृदयस्य हडक्कः	१११६
	ह्लह्लह्लो पु नलमां स्थितिरूर्ध्वम्	३८
	ह्लषणक्षणाश्नां ष्हः	३३३

भाषा द्विधा संस्कृता च प्राकृता चेति भेदतः ।
कौमारपाणिनीयादिसंस्कृता संस्कृता भवेत् ॥ १

इयं तु देवतादीनां मुनीनां नायकस्य च
विप्रक्षत्रियविद्भ्रूद्रमन्त्रिकञ्चुकिनामपि ॥ २

गार्ग्यगालवशाकल्यपाणिन्याद्या यथर्षयः ।
शब्दराशेः संस्कृतस्य व्याकर्त्तारो महत्तमाः ॥ ३

तथैव प्राकृतादीनां षड्भाषाणां महामुनिः ।
आदिकाव्यकृदाचार्यो व्याकर्त्ता लोकविश्रुतः ॥ ४

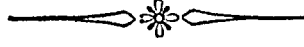
यथैव रामचरितं संस्कृतं तेन निर्मितम् ।
तथैव प्राकृतेनापि निर्मितं हि सतां मुदे ॥ ५

पाणिन्याद्यैः शिक्षितत्वात्संस्कृती स्याद्यथोत्तमा ।
प्राचेतसव्याकृतत्वात्प्राकृत्यपि तथोत्तमा ॥ ६



पण्डित - रघुनाथ - कवि - विरचित

प्रा कृ ता न न्द



प्रेङ्खन्नखच्छविमिथश्छुरितेन यस्मिन्,
रक्ताञ्चलग्रथनकौतुकमन्वकारि ।

खेदोद्गमद्विगुणदानजलः स भूयान्,

भूयात् करग्रहविधिः शिवयोः शिवाय ॥ १ ॥

रचयति नृसिंहरत्यै रघुनाथः सरसदैववित्तनयः ।

रसिकानन्दनिमित्तं सानन्दं प्राकृतानन्दम् ॥ २ ॥

दोषदुष्टमिदमित्यवज्ञया हातुमिच्छत न जातु साधवः ! ।

शैवलं किल विहाय केवलं निर्मलं किमु न पीयते जलम् ? ॥ ३ ॥

ये पण्डितकुलोत्पन्ना रसवन्तोऽल्पबुद्धयः ।

तदर्थमयमारम्भः किमज्ञातं मनीषिणाम् ? ॥ ४ ॥

*

सन्धावचामजूलपविशेषा बहुलम् ॥ १ ॥

अचां सन्धावजविशेषा लोपश्च वा स्युः । नदीस्रोतः णइस्रोत्तो ।
राम ओ इति स्थिते रामो, अकारलोपः ।

मो बिन्दुः ॥ २ ॥

मस्य अनुस्वारः स्यात् । कण्ह अम् इति स्थिते कण्हं ।

अचि मश्च ॥ ३ ॥

अचि परे मस्य म एव स्यात् । अनुस्वारापवादः । धणम् ओहरइ
इति स्थिते धणमोहरइ । 'अनचि मो बिन्दुः' इत्येव सूत्रयितु-
मुचितम् ।

नजो हलि ॥ ४ ॥

नकार-अकारयोः अनुस्वारः स्याद् हलि । अनसः अंसो, अत्र
नस्य अनुस्वारः । वञ्चितः वञ्चिओ, अत्र नस्य ।

वक्रादिषु ॥ ५ ॥

एषु अनुस्वारागमः स्यात् । वक्रं वंक्रं । वक्र त्र्यस्र ह्रस्व अश्रु श्मश्रु
गृष्टि मूर्द्धन् मनखिनी दर्शन स्पर्श वर्ण प्रतिश्रुत् अश्व अभिसुक्त
वक्रादिः ।

मांसादिषु वा ॥ ६ ॥

एषु वा विन्दुः स्यात् । संयोगेऽणो ह्रस्व इति वाच्यम् । मांसं
मंसं मासं । आकृतिगणोऽयम् ।

झयि तद्वर्णान्तः ॥ ७ ॥

तद्वर्णान्तोऽनुस्वारो वा स्याद् झयि । शङ्का संका सङ्का ।

॥ इति सन्धिः ॥

*

अत ओत् सोः ॥ ८ ॥

अकारान्तात् परस्य सोः ओत् स्यात् ॥

नो णः सर्वत्र ॥ ९ ॥

यत्र क्वचित् स्थितस्य नस्य णः स्यात् ।

क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लोपः ॥ १० ॥

कादीनां नवानामयुक्तानामनादिवर्तिनां प्रायो लोपः स्यात् ।
नारायणः णाराअणो । अयुक्तानामिति किम् ? शक्रः सक्रो इत्यादि ।
अनादिवर्तिनामिति किम् ? कृष्णः कण्हो इत्यादि ।

द्विवचनस्य बहुवचनम् ॥ ११ ॥

सुपां तिङां च द्विवचनस्य बहुवचनं स्यात् ।

जस्-शसोर्लोपः ॥ १२ ॥

अकारान्तात् परयोः जस्-शसोः लोपः स्यात् ।

जस्-शस्-डसि-आमसु दीर्घः ॥ १३ ॥

एषु अतो दीर्घः स्यात् ।

ए च सुप्यङि-डसोः ॥ १४ ॥

अकारस्य एत्वं स्यात् सुपि, न तु ङि-डसोः । चाद् दीर्घोऽपि ।
नारायणौ नारायणाः णाराअणे णाराअणा । अङि-डसोरिति किम् ?
नारायणे णाराअणम्मि, नारायणस्य णाराअणस्स ।

अतोऽमः ॥ १५ ॥

अकारान्तात् परस्य अमः अकारस्य लोपः स्यात् । नारायणं नाराअणं । ननु 'सन्धावचाम्०' (१) इति अलोपेनैव भाव्यम् इति चेत्, न, तत्र बहुलग्रहणात् क्वचिदप्रवृत्तेरपि सम्भावनीयत्वात् । नारायणान् णाराअणा णाराअणे ।

टा-ऽऽमोर्णः ॥ १६ ॥

अकारान्तात् परयोः टा-ऽऽमोः णः स्यात् । नारायणेन णाराअणेण । नारायणानां णाराअणाणं ।

भिसो हिं ॥ १७ ॥

अकारान्तात् परस्य भिसो हिं इत्यादेशः स्यात् । नारायणैः णाराअणेहिं ।

चतुर्थ्याः षष्ठी ॥ १८ ॥

स्यात् । तथा हि ।

स्सो ङसः ॥ १९ ॥

अकारान्तात् परस्य ङसः स्स इत्यादेशः स्यात् । नारायणाय णाराअणस्स । नारायणेभ्यः णाराअणाणं ।

ङसेः आ-दो-दु-हयः ॥ २० ॥

अदन्तात् परस्य ङसेः आ दो दु हि इति प्रत्येकं चत्वार आदेशाः स्युः । नारायणात् णाराअणा णाराअणादो णाराअणादु णारायणाहि । 'अस-शस०' (१३) इति दीर्घः ।

भ्यसो हितो सुत्तो ॥ २१ ॥

अदन्ताद् भ्यसो हितो सुत्तो इत्येतौ आदेशौ स्याताम् । नारायणेभ्यः णाराअणाहितो णाराअणासुत्तो । नारायणस्य णाराअणस्स ।

ङेः ए-म्मी ॥ २२ ॥

अदन्ताद् ङि इति सप्तम्येकवचनस्य ए म्मि इत्येतौ स्याताम् ।

क्वचिद् ङसि-ङ्योर्लोपः ॥ २३ ॥

ङसि-ङ्योः परयोः क्वचिदतो लोपः स्यात् । नारायणे णाराअणे णाराअणम्मि ।

सुपः सुः ॥ २४ ॥

अदन्तात् परस्य सुपः सु इत्यादेशः स्यात् । ओत्वापवादः ।
नारायणेषु णाराअणेषु । 'ए च०' (१४) इति एत्वम् ।

नाऽऽमन्त्रणे सावोत्व-दीर्घत्व-बिन्दवः ॥ २५ ॥

सम्बोधने ओत्व-दीर्घत्वा-ऽनुस्वारा न स्युः ।

अन्त्यस्य हलः ॥ २६ ॥

[अन्त्यस्य हलः] लोपः स्यात् । हे नारायण हे णाराअण ।

रागः राओ । 'क-ग०' (१०) इति गलोपः । रागाः राआ राए,
'जस्-शसोः०' (१२) इति लोपः, 'जस्-शस्०' (१३) इति दीर्घः ।
रागम् राअं । रागान् राआ राए । रागेण राएण । रागैः राएहिं । रागाय
राअस्स । रागेभ्यः राआणं । रागात् राआ राआदो राआदु राआहि ।
रागेभ्यः राआहिंतो राआसुत्तो । रागस्य राअस्स । रागाणाम् राआणं ।
रागे राए राअम्मि । रागेषु राएसु ।

आदेरतः ॥ २७ ॥

-इत्यधिकृत्य ।

इदीषत्-पक्-स्वप्न-वेतस-व्यजन-मृदङ्गा-ऽङ्गारेषु ॥ २८ ॥

एषु सप्तसु मध्ये आदेः अतः इः स्यात् ।

उद् ऋत्वादिषु ॥ २९ ॥

एषु ऋतः उः स्यात् । मृदङ्गः सुइंगो । ऋतु मृणाल पृथिवी वृन्दा-
वन प्रावृद् प्रवृत्ति विवृत संवृत निवृत वृत्तान्त परभृत मातृक जामा-
तृक मृदङ्ग इत्यादि ऋत्वादिः ।

विप्रकर्षः ॥ ३० ॥

-इत्यधिकृत्य ।

युक्तस्य ॥ ३१ ॥

-इत्यधिकृत्य ।

इः श्री-ही-क्रीत-क्लान्त-क्लेश-म्लान-स्वप्न-स्पर्श-हर्षा-ऽर्ह-गर्हेषु ॥ ३२ ॥

एषु एकादशसु युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य इत्वम्, तत्स्व-
रता च । 'नो याः०' (९) इति णः । स्वप्नः सिविणो इत्यादि ।
'उपरि०' (३६) इति वक्ष्यमाणेन पलोपः ।

प्रतिसर-वेतस-पताकासु ङः ॥ ३३ ॥

एषु तस्य ङः स्यात् । प्रतिसरः पडिसरो । 'सर्वत्र०' (३४) इति वक्ष्यमाणेन रलोपः । ननु पडिविआ पडिसिद्धि इत्यादौ तस्य ङः केन ? इति चेत्, उच्यते, प्रतिसर इत्यत्र प्रतिना सरति प्रतिपूर्वक इति यावद् इति व्याख्यानात्, 'प्रतिसर'शब्दस्यापि प्रतिनैव सरत्वादिति । वेतसः वेडिसो ।

सर्वत्र लबराम् ॥ ३४ ॥

संयुक्तस्य उपर्यधःस्थितानां लकार-बकार-रेफाणां लोपः स्यात् ।

शेषा-ऽऽदेशयोर्द्वित्वमनादौ ॥ ३५ ॥

युक्तस्य लोपे जाते यः शेषः आदेशश्च तयोः अनादौ वर्त्तमान-योर्द्वित्वं स्यात् । पक्कः पिक्को ।

उपरि लोपः क-ग-ङ-त-द-प-ष-साम् ॥ ३६ ॥

कादीनामष्टानां युक्तस्य उपरिस्थितानां लोपः स्यात् । भक्तः भक्तो ।

वर्गेषु युजः पूर्वः ॥ ३७ ॥

'शेषा०' (३५) इति यस्य द्वित्वं क्रियते स द्वितीयः चतुर्थो वा चेत् तत्पूर्वः प्रथमः तृतीयो वा स्यात् । मुग्धः मुद्धो । खङ्गः खग्गो । उत्पीतः उप्पीओ । सङ्गमः सग्गमो । आप्तः अत्तो । वसिष्ठः वसिद्धो ।

स्नेहे वा ॥ ३८ ॥

अत्र युक्तस्य विप्रकर्षो वा स्यात्, पूर्वस्य अत्वं च । स्नेहः सणेहो णेहो ।

आदेर्यो जः ॥ ३९ ॥

शब्दस्य आदिभूतयकारस्य ज-आदेशः स्यात् ।

अधो म-न-याम् ॥ ४० ॥

युक्तस्य अधःस्थितानामेषां लोपः स्यात् । योग्यः जोग्गो ।

ए शय्यादिषु ॥ ४१ ॥

एषु आदेः अकारस्य एत्वं स्यात् । उत्करः उक्केरो । शय्या सौन्दर्य उत्कर त्रयोदश आश्चर्य पर्यन्त बह्वी शय्यादिः ।

हरिद्रादीनां रो लः ॥ ६० ॥

एषामयुक्तस्य रेफस्य लादेशः स्यात् । युधिष्ठिरः जहिष्ठिलो । हरिद्रा चरण मुखर युधिष्ठिर करुण अङ्गुरी अङ्गार किरात परिखा परिघ हरिद्रादिः । चरणः चलणो । मुखर मुहलो । अङ्गारः इंगालो, 'इद् ईषत्' (२८) इति इत्वम् ।

किराते चः ॥ ६१ ॥

अत्र आदेः चः स्यात् ।

ऋत्वादिषु तो दः ॥ ६२ ॥

एषु तस्य दः स्यात् । किरातः चिलादो । ऋतु रजत आगत निर्वृति आकृति संवृति सुकृति हत संयत विवृत सञ्जात सम्प्रति प्रतिपत्ति ऋत्वादिः ।

परुष-परिघ-परिखासु फः ॥ ६३ ॥

एषु आदेः फः स्यात् । परुषः फरुसो । परिघः फलिहो । आगतः आअदो । हतः हदो । संयतः संजदो, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः । सम उपसर्गत्वाद् यत इति यकारस्य आदिस्थित्वम् ।

इत् पुरुषे रोः ॥ ६४ ॥

अत्र रोः उत इत् स्यात् । पुरुषः पुरिसो । रोरिति किम् ? पकाराद् उकारस्य मा भूत् ।

अयुक्तस्य रिः ॥ ६५ ॥

वर्णान्तरेण अयुक्तस्य ऋकारस्य रिः इत्यादेशः स्यात् । ऋद्धः रिद्धो ।

वृक्षे वेन र्वा ॥ ६६ ॥

वृक्षशब्दे वशब्देन सह ऋकारस्य रुः वा स्यात् । व्यवस्थित-विभाषेयम्, तेन च्छत्वपक्षे न भवति, खत्वपक्षे तु स्यादेव ।

क्षमा-वृक्ष-क्षणेषु वा ॥ ६७ ॥

एषु क्षस्य वा च्छः । पक्षे 'ष्क-स्क' (५६) इति खः, 'ऋतोऽत्' (१२०) इति वक्ष्यमाणेन अकारः । वृक्षः वच्छो रक्खो ।

एत इद् वेदना-देवरयोः ॥ ६८ ॥

अनयोः आदेः एत इर्वा स्यात् । देवरः दिअरो देअरो, 'क-ग'
(१०) इति वलोपः ।

ऐत एत् ॥ ६९ ॥

आदेः ऐतः एः स्यात् । शैलः सेलो । कैलासः केलासो ।

दैत्यादिष्वइः ॥ ७० ॥

दैत्यादिषु ऐकारस्य अइः इत्यादेशः स्यात् ॥

त्य-थ्य-द्यां च्च-च्छ-ज्जाः ॥ ७१ ॥

त्रयाणां क्रमेण त्रयः स्युः । दैत्यः दइच्चो । चैत्रः चइत्तो, 'सर्वत्र०'
(३४) इति रलोपः । भैरवः भइरवो । वैदेशः वइदेसो । वैदेहः वइ-
देहो । कैतवः कइअवो । वैशाखः वइसाहो, 'ख-घ०' (५९) इति हः ।
वैशिकः वइसिओ । वैशम्पायनः वइसंपाअणो । दैत्य चैत्र भैरव खैर
वैर वैदेश वैदेह कैतव वैशाख वैशिक वैशम्पायन दैत्यादिः ।

ओतोऽद् वा प्रकोष्ठे कस्य वः ॥ ७२ ॥

प्रकोष्ठशब्दे ओतः अद् वा स्यात्, कस्य च वः स्यात् । प्रकोष्ठः
पवट्टो, 'सर्वत्र०' (३२) इति रलोपः, 'उपरि०' (३६) इति षलोपः,
'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम् । पक्षे पओट्टो, 'क-ग०' (१०) इति
कलोपः ।

औत ओत् ॥ ७३ ॥

आदेः औकारस्य ओत् स्यात् । पौत्रः पोत्तो ।

पौरादिष्वउः ॥ ७४ ॥

एषु औकारस्य अउः इत्यादेशः स्यात् । ओत्वापवादः । पौरः पउरो ।
कौरवः कउरवो ।

कौशले वा ॥ ७५ ॥

कउसलो कोसलो । आकृतिगणोऽयम् ।

उत् सौन्दर्यादिषु ॥ ७६ ॥

एषु औकारस्य उत् स्यात् । मौञ्जायनः मुंजाअणो । शौण्डः सुंडो ।
कौक्षेयकः कुक्खेअओ, 'वर्गेषु०' (३१) इति कः, 'क-ग०' (१०) इति
य-कोर्लोपः । सौन्दर्य मौञ्जायन शौण्ड कौक्षेयक दौवारिकादयः सौन्द-
र्यादिः ।

मयूर-मयूख-योर्वा वा ॥ ४२ ॥

अनयोः यूरशब्देन सह आदेः अत ओत्वं वा स्यात् मयूरः मोरो ।
मयूखः मोहो । पक्षे 'क-ग०' (१०) इति यलोपः, मजरो मजहो ।

आ समृद्ध्यादिषु वा ॥ ४३ ॥

अविभक्तिको निर्देशः । 'सविसर्गः पाठः' इति केचित् । एषु
आदेः अकारस्य आकारो वा स्यात् । समृद्धि प्रकट अभिजाति
मनखिनी प्रतिपत् सदक्ष प्रतिस्पर्द्धि प्रसुप्त प्रसिद्धि अश्व । आकृति-
गणोऽयम् ।

शषोः सः ॥ ४४ ॥

सर्वत्र शस्य षस्य च सः स्यात् । अश्वः आसो अस्सो ।

अदातो यथादिषु वा ॥ ४५ ॥

एषु आतः स्थाने वा अत् स्यात् । प्रहारः पहरो पहारो 'सर्वत्र०'
(३४) इति रलोपः । हालिकः हलिओ हालिओ । यथा तथा प्राकृत
तालवृन्त उत्खात चामर प्रहार चाट्ट दावाग्नि खादित संस्थापित
मृगाङ्ग हालिक यथादिः ।

उद् इक्षु-वृश्चिकयोः ॥ ४६ ॥

अनयोः इत् उत् स्यात् ।

वृश्चिके ञ्छः ॥ ४७ ॥

युक्तस्य स्यात् । वक्ष्यमाण'श्च-त्स-प्सां ञ्छः' (१२४) इति
ञ्छत्वापवादः ।

इद् ऋष्यादिषु ॥ ४८ ॥

एषु ऋकारस्य इत् स्यात् । वृश्चिकः विञ्छुओ । ऋषि वृषी गृष्टि
सृष्टि दृष्टि शृङ्गार मृगाङ्ग भृङ्ग भृङ्गार हृदय वितृष्ण वृंहित कृशरा
कृत्या वृश्चिक कृपा शृगाल कृति कृत्ति कृषि ऋष्यादिः । शृङ्गारः
सिंगारो । मृगाङ्गः मिअंको, यथादित्वाद् आत अः । भृङ्गः भिंगो ।
भृङ्गारः भिंगारो ।

ह-स-ष्ण-क्षण-श्नां ण्हः ॥ ४९ ॥

एषां णहादेशः स्यात् । वितृष्णः वितिण्हो । शृगालः सिअल्लो ।

ईत् सिंह-जिह्वयोश्च ॥ ५० ॥

अनयोः इत् ईत् स्यात् । सिंहः सीहो ।

इद् ईतः पानीयादिषु ॥ ५१ ॥

एषु ईत् इत् स्यात् । करीषः करिसो । पानीय अलीक व्रीडित व्यलीक गृहीत तदानीम् करीष द्वितीय तृतीय गभीर पानीयादिः ।

एत् नीडा-ऽऽपीड-कीदृगीदृशेषु ॥ ५२ ॥

एषु ईत् एत् स्यात् ।

आपीडे मः ॥ ५३ ॥

पस्य मः स्यात् । लोपं बाधित्वा प्राप्तस्य 'पो वः' (८५) इति वक्ष्यमाण-व-त्वस्यापवादः । आपीडः आमेलो ।

क्वचिद् युक्तस्यापि ॥ ५४ ॥

वर्णान्तरेण युक्तस्यापि ऋकारस्य क्वचिद् रिः स्यात् । 'क-ग' (१०) इति द-लोपः । कीदृशः केरिसो । ईदृशः एरिसो ।

उत् ओत् तुण्डरूपेषु ॥ ५५ ॥

संयुक्तवर्णपरोकारेषु उत् ओत् स्यात् ।

ष्क-स्क-क्षां क्खः ॥ ५६ ॥

एषां क्खादेशः स्यात् । पुष्करः पोक्खरो ।

स्तस्य थः ॥ ५७ ॥

स्यात् । 'उपरि लोपः०' (३६) इत्यस्यापवादः । पुस्तकः पोत्थओ । लुब्धकः लोद्धओ । 'उत् ओत्०' (५५) इत्यस्य प्रायिकत्वात् लुद्धओ । अत्र 'सर्वत्र०' (३४) इति व-वयोरैक्याद् लोपे शेषस्य धस्य 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वे दपूर्वो धकारः ।

अन्मुकुटादिषु ॥ ५८ ॥

एषु आदेः उत् अत् स्यात् । मुकुट मुकुल गुरु गुर्वी युधिष्ठिर सौकुमार्य मुकुटादिः । 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः, 'उपरि०' (३६) इति षलोपः, 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम् ।

ख-घ-थ-ध-भां हः ॥ ५९ ॥

एषां पञ्चानामयुक्तानामनादिवर्तिनां हादेशः स्यात् ।

स्फटिक-चिकुर-निकषेषु कस्य हः ॥ ७७ ॥

एषु ककारस्य हादेशः स्यात् । 'क-ग०' (१०) इति कलोपापवादः ।

स्फटिके लः ॥ ७८ ॥

अत्र दस्य लः स्यात् । 'दो डः' (८८) इति वक्ष्यमाणस्यापवादः ।
'उपरि०' (३६) इति सलोपः, स्फटिकः फलिहो । चिकुरः चिहुरो ।
निकषः णिहसो, 'नो णः०' (९) इति णत्वम्, 'शषोः०' (४४)
इति सः ।

सीकरे भः ॥ ७९ ॥

अत्र कस्य भः स्यात् । 'क-ग०' (१०) इत्यस्यापवादः । सीकरः
सीभरो ।

गर्भिते णः ॥ ८० ॥

तस्य णः स्यात् । गर्भितः गर्भिणो ।

वसति-भरतयोर्हः ॥ ८१ ॥

अनयोः तस्य हः स्यात् । लोपापवादः । भरतः भरहो ।

ऐरावते च ॥ ८२ ॥

अत्र तस्य णः स्यात् । लोपापवादः । ऐरावतः एरावणो, 'ऐत एत्'
(६९) इति एत् ।

प्रदीप्त-कदम्ब-दोहदेषु दोलः ॥ ८३ ॥

एषु अनादिभूतस्य दस्य लः स्यात् । कदम्बः कलंबो । दोहदः
णोहलो । अनेति (अनादीति) किम्? आद्यस्य मा भूत् । 'दोहदे णः'
(९७) इति वक्ष्यमाणेन णः ।

गद्गदे रः ॥ ८४ ॥

अत्र अयुक्तस्य दस्य रः स्यात् । 'उपरि०' (३६) इति दलोपः,
गद्गदः गग्गरो ।

पो वः ॥ ८५ ॥

पस्य अयुक्तस्य अनादिभूतस्य वः स्यात् । शपथः सवहो, 'ख-घ०'
(५९) इति हः । ननु पस्य लोपोक्तेः कथं पस्य वविधिः? इति चेत्,
उच्यते, लोपविधौ 'प्रायः' (सू० १०) इत्युक्तेः यत्र लोपाभावस्तत्रैव
अस्य प्रवृत्तिः ।

उत्तरीया-ऽनीययोर्यस्य जो वा ॥ ८६ ॥

उत्तरीयशब्दस्य अनीयप्रत्ययस्य च यो यकारः तस्य जो वा स्यात्
रमणीयः रमणिज्जो ।

कबन्धे बो मः ॥ ८७ ॥

अत्र बस्य मः स्यात् । लोपापवादः । कबन्धः कमंधो ।

टो डः ॥ ८८ ॥

टस्य अयुक्तस्य अनादिभूतस्य डः स्यात् । विटपः विडवो ।

सटा-शकट-कैटभेषु ढः ॥ ८९ ॥

एषु टस्य ढः स्यात् । डापवादः । शकटं सअढो ।

कैटभे वः ॥ ९० ॥

भस्य वः स्यात् । कैटभः केढवो, 'ऐत एत्' (६९) इति एत् ।

फो भः ॥ ९१ ॥

स्यात् । सफलः सभलो ।

प्रथम-शिथिल-निषधेषु ढः ॥ ९२ ॥

एषु थ-धयोः ढादेशः स्यात् । हापवादः । प्रथमः पढमो । शिथिलः
सिढिलो । निषधः णिसढो ।

कुब्जेः खः ॥ ९३ ॥

अत्र आदेः वर्णस्य खादेशः स्यात् । कुब्जः खुज्जो ।

दोला-दण्ड-दशनेषु डः ॥ ९४ ॥

एषां आदेः डः स्यात् । दण्डः डंडो । दशनः डसणो ।

मन्मथे वः ॥ ९५ ॥

अत्र आदेः वः स्यात् ।

न्मो म्मः ॥ ९६ ॥

स्यात् । मन्मथः वम्महो, 'ख-घ०' (५९) इति हः ।

दोहदे णः ॥ ९७ ॥

अत्र आदेः णः स्यात् । दोहदः णोहलो ।

लाहल-लाङ्गल-लाङ्गुलेषु वा णः ॥ ९८ ॥

एतेषु शब्देषु आदेर्वर्णस्य णो वा स्यात् । लाहलः णाहलो । लाङ्गलः
णाङ्गलो ।

षट्-शावक-सप्तपर्णानां छः ॥ ९९ ॥

एषु आदेः छः स्यात् । षण्मुखः छम्मुहो । शावकः छावओ । सप्त-
पर्णः छत्तवण्णो, 'पो वः' (८५) इति वत्वम्, 'सर्वत्र०' (३४) इति
रलोपः ।

दशादिषु हः ॥ १०० ॥

एषु शस्य हः स्यात् ।

सङ्ख्यायां च ॥ १०१ ॥

सङ्ख्यावाचिशब्दसम्बन्धिदकारस्य रः स्यात् । एकादशः एआरहो ।
द्वादशः वारहो । त्रयोदशः तेरहो, शय्यादित्वाद् एत् ।

संज्ञायां वा ॥ १०२ ॥

संज्ञायां दशादेः शस्य हो वा स्यात् । दशमुखः दहमुहो दसमुहो ।
दशरथः दहरहो दसरहो ।

दिवसे सस्य ॥ १०३ ॥

हः स्याद् वा । दिवसः दिअहो दिअसो ।

द्रे रो वा ॥ १०४ ॥

द्रशब्दे रेफस्य लोपो वा स्यात् । इंद्रः इंदो इंद्रो । द्रुतः दुओ द्रुओ ।
सर्वज्ञतुल्येषु अस्य ॥ १०५ ॥

सर्वज्ञ इत्येवमाकृतिषु अस्य लोपः स्यात् । सर्वज्ञः सवज्जो । अत्र ज्ञे
जकारञ्कारयोर्मध्ये ञकारलोपे 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम् । जानाते-
र्यानि सोपपदानि रूपाणि तत्रायं लोपः ।

मध्याह्ने हस्य ॥ १०६ ॥

लोपः स्यात् । वक्ष्यमाणोर्द्धस्थितेः (१०८) अपवादः ॥

ध्य-ह्योर्झः ॥ १०७ ॥

स्यात् । मध्याह्नः मज्झण्णो ।

ह-ह-ह्येषु न-ल-मां स्थितिरूध्वूर्वम् ॥ १०८ ॥

एषु त्रिषु अधःस्थितानां नकार-लकार-मकाराणां त्रिभ्य उपरि
स्थितिः स्यात् । प्रह्लादः पल्हादो । अत्र ह्यग्रहणं चिन्त्यम्, 'ह-स्न-ष्ण०'
(४९) इति ण्हादेशे नस्य स्वयमेव उपरिष्ठाद् (१०६) भूतत्वात् कौस्तुभः
कोत्थुहो, 'औत् ओत्' (७३) 'स्तस्य थः' (५७) 'ख-घ०' (५९) इति हः ।

न स्तम्बे ॥ १०९ ॥

स्तस्य थो न स्यात् । 'उपरि०' (३६) इति सलोपः । तं इति पाठान्तरम् । स्तम्बः तंबो ।

स्तम्भे खः ॥ ११० ॥

स्तस्य खः स्यात् । थापवादः । स्तम्भः खंभो ।

स्फोटके ॥ १११ ॥

अत्र युक्तस्य खः स्यात् । स्फोटकः खोडओ, 'दो डः' (८८) इति डः ।

र्य-शय्या-ऽभिमन्युषु जः ॥ ११२ ॥

र्य इत्येतस्य शय्या-ऽभिमन्युशब्दयोश्च युक्तस्य जः स्यात् । कार्यः कज्जो ।

सूर्ये वा ॥ ११३ ॥

सूर्यशब्दे युक्तस्य र-ज्जौ वा स्याताम् ।

न र-होः ॥ ११४ ॥

रेफ-हकारयोर्द्वित्वं न स्यात् । सूर्यः सूरौ सुज्जो ।

र्त्तस्य टः ॥ ११५ ॥

स्पष्टम् । कैवर्त्तः केवट्टो, 'ऐत एत्' (६९) इति एत् ।

न धूर्त्तादिषु ॥ ११६ ॥

एषु र्तस्य टो न स्यात् । धूर्त्तः धुत्तो, 'सर्वत्र०' (३४) इति रलोपः । आवर्त्तः आवत्तो । संवर्त्तः संवत्तो । निवर्त्तः णिवत्तो । आर्त्तः अत्तो । धूर्त्तं कीर्त्तिं वर्त्तमानं वर्त्त आवर्त्तं संवर्त्तं निवर्त्तं वर्त्तिका आर्त्तं कर्त्तरी मूर्त्तिं धूर्त्तादिः ।

गर्त्ते डः ॥ ११७ ॥

र्त्तस्य डः स्यात् । गर्त्तः गड्डो ।

१ अत्रायमाशयः — यथा "न स्तम्बे" इति सूत्रपाठो दृश्यते तथा प्रत्यन्तरेषु "तः स्तम्बे" इत्यपि सूत्रपाठो दृश्यत इति ।

यावदादिषु वस्य ॥ १३४ ॥

लोपः । अनुवर्तमानः अणुअत्तमाणो । यावत् तावत् पारावत् अनु-
वर्तमान जीवित एवं एव अवट देवकुल यावदादिः । आकृतिगणोऽयम् ।
सर्वः सवो ।

सर्वादेर्जस एत्वम् ॥ १३५ ॥

स्पष्टम् । सर्वे सवे । सर्वं सवं । सर्वान् सवा । सर्वेण सवेण । सर्वैः
सवेहिं । सर्वस्मै सवस्स । सर्वेभ्यः सवाणं । सर्वस्मात् सवा सवादो सवादु
सवाहि, 'ङसेः०' (२०) इत्यादेशाः । सर्वेभ्यः सवाहितो सवासुतो ।
सर्वस्य सवस्स । सर्वेषाम् सवाणं ।

डेः सिंसि-म्मि-न्त्याः ॥ १३६ ॥

सर्वादेः परस्य डेः इति सप्तम्येकवचनस्य सिंसि म्मि त्थ इति त्रय
आदेशाः स्युः । सर्वस्मिन् सवसिंसि सवम्मि सवत्थ । सर्वेषु सवेषु । विश्वः
विस्सो । उभौ उहे । उभशब्दस्य द्विवचनान्तत्वाद् द्विवचनस्य बहुवच-
नादेशः । संस्कृते प्रसिद्धः सर्वादिः ॥

शेषोऽदन्तवत् ॥ १३७ ॥

शेषस्तु विधिः अदन्तवत् स्यात् । तेन आकारान्तादपि 'अत ओत
सोः' (८) इत्यादि विधिः प्रवर्तते । विश्वपाः विस्सवो इत्यादि ।

सु-भिस्र-सुप्सु दीर्घः ॥ १३८ ॥

इदुदन्तयोः दीर्घः स्याद् एषु परेषु । 'अन्त्यस्य हलः' (२६) इति
सोर्लोपः, अग्निः अग्गी । 'अधो०' (४०) इति न लोपः ।

जस ओश्च यूत्वम् ॥ १३९ ॥

इदुदन्तयोः परस्य जस ओ इत्यादेशः स्याद् णो च, पूर्वस्य ईकारो-
कारौ च स्याताम् । अग्रयः अग्गीओ अग्गीणो । पाठान्तरे तु-

जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च ॥ १४० ॥

इदुदन्तयोः शब्दयोर्जसः ओ वो इत्येतावादेशौ स्याताम्, अत्वम्
ईत्वम् जत्वं च विकल्पेन स्यात् णो च । पक्षे अदन्तवत् । अग्रयः
अग्गीओ अग्गीवो अग्गीणो अग्गीओ अग्गीवो अग्गी । हे अग्ने हे अग्नि ।
अग्निं अग्निं ।

इदुतोः शसो णो ॥ १४०^A ॥

इदुदन्तयोः शसो णो स्यात् । अग्नीन् अग्निणो ।

टा णा ॥ १४१ ॥

इदुदन्तयोः टाया णा इत्यादेशः स्यात् । अग्निना अग्निणा ।

न डि-ङ्स्योरेदातौ ॥ १४२ ॥

इदुदन्तयोः परयोः डि-ङ्स्योः एत् आत् इत्येतौ न स्याताम् । अग्नेः अग्नीदो अग्नीदु अग्नीहि । डि-ङ्स्योरिति किम् ? समृद्ध्या समिद्धीए समिद्धीया । 'टा-ङ्स-ङीनाम्' (१६०) इति एत्-आतौ ।

ए भ्यसि ॥ १४३ ॥

इदुदन्तयोः भ्यसि एत्वं न स्यात् । अग्निभ्यः अग्नीहितो अग्नीसुत्तो ।

ङसो वा ॥ १४४ ॥

इदुदन्तयोः ङसो णो वा स्यात् । पक्षे 'शेषो०' (१३७) इत्यतिदेशात् 'ङसः स्सः' (१९) इति स्सः । अग्नेः अग्नीणो [अग्निस्स] । अग्नीनाम् अग्नीणं । अग्नौ अग्निम्मि । अग्निषु अग्नीसु । ऋषिः इसी, 'इद् ऋष्यादिषु' (४८) इति इत्वम् ।

बृहस्पतौ ब-होर्भ-औ ॥ १४५ ॥

अत्र बकार-हकारयोः क्रमेण भकाराकारौ स्याताम् । बृहस्पतिः भअप्पर्ई, 'उपरि०' (३६) इति सलोपः, 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम्, 'क-ग०' (१०) इति तलोपः, 'सु-भिस्स०' (१३८) इति दीर्घः । गृहपतिः, गहवर्ई, 'पो वः' (८५) इति वः ॥ द्विशब्दो नित्यं द्विवचनान्तः ।

द्वेर्दुवे दोणि वा ॥ १४६ ॥

द्विशब्दस्य जसा शसा च सह दुवे दोणि इत्येतावादेशौ स्याताम् । द्वौ दुवे दोणि ।

द्वेर्दो ॥ १४७ ॥

द्विशब्दस्य दो अयमादेशः स्यात् सुपि । द्वाभ्याम् दोहिं । द्वाभ्याम् दोहितो दोसुत्तो ।

एषामामो ण्हं ॥ १४८ ॥

द्वि-त्रि-चतुरामामो ण्हं इत्यादेशः स्यात् । णापवादः । द्वयोः दोण्हं । द्वयोः दोसु । त्रिशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः ।

अक्ष्यादिषु छः ॥ ११८ ॥

एषु क्षस्य छः स्यात् । क्षुब्धः छुद्धो । उत्क्षिप्तः उच्छित्तो । 'उपरि०'
(३६) इति पलोपः । सदक्षः सरिच्छो, 'क-ग०' (१०) इति दलोपः, ऋ
रिः । ऋक्षः रिच्छो । अक्षि लक्ष्मी क्षुण्ण क्षीर क्षुब्ध उत्क्षिप्त सदक्ष इक्षु
उक्षा क्षार ऋक्ष सक्षिका क्षुर क्षुत क्षेत्र वक्ष उदक्ष कुक्षि कक्षा रक्षा
अक्ष्यादिः । क्षणः छणो खणो ।

ष्म-यक्ष्म-विस्मयेषु म्हः ॥ ११९ ॥

ष्म इत्यस्य यक्ष्म-विस्मययोश्च युक्तस्य म्हादेशः स्यात् । विस्मयः
विम्हओ । स्नातः ण्हाओ, 'ह-स्न०' (४९) इति ण्हादेशः ।

ऋतोऽत् ॥ १२० ॥

ऋत आदेः अत् स्यात् । कृष्णः कण्हो । प्रश्नः पण्हो ।

इत् एत् पिण्डसमेषु ॥ १२१ ॥

एषु इकारस्य एत्वं स्यात् । समग्रहणं संयोगपरमुपलक्षयति । विश्नः
वेण्हो ।

स्पस्य सर्वत्र स्थितस्य ॥ १२२ ॥

फः स्यात् । स्पन्दः फंदो । निस्पन्दः गिष्फंदो ।

बाष्पेऽश्रुणि हः ॥ १२३ ॥

बाष्पशब्दे ष्पस्य हः स्यात्, अश्रुणि वाच्ये । बाष्पः बाहो, 'न
र-होः' (११४) इति द्वित्वनिषेधः । अश्रुणि किम् ? बाष्पः बाफो ऊष्मा,
वक्ष्यमाणः 'ष्पस्य फः' (२०६) ।

कार्षापणे ॥ १२४ ॥

युक्तस्य हादेशः स्यात् । कार्षापणः क्हावणो, 'पो वः' (८५)
इति वः ।

श्च-त्स-प्सां छः ॥ १२५ ॥

त्रयाणां छः स्यात् । पाश्चात्यः पच्छत्तो । वत्सः वच्छो । ईप्सितः
इच्छिओ ।

नोत्सुकोत्सवयोः ॥ १२६ ॥

अनयोः त्सस्य छादेशो न स्यात् । उत्सुकः ऊसुओ । उत्सवः
ऊसवो ।

म्र-ज्ञ-पञ्चाशत्-पञ्चदशेषु णः ॥ १२७ ॥

म्र-ज्ञ इत्येतयोः पञ्चाशत्-पञ्चदशशब्दयोश्च युक्तस्य णः स्यात् ।
प्रद्युम्नः पञ्जुण्णो, 'त्य-ध्य०' (७१) इति ज्ञः । यज्ञः जण्णो ।

भिन्दिपाले ण्डः ॥ १२८ ॥

युक्तस्य ण्डः स्यात् । भिन्दिपालः भिन्दिवालो, 'पो वः' (८५)
इति वः ।

विह्वले म्भ-हौ वा ॥ १२९ ॥

युक्तस्य एतौ वा स्याताम् । विह्वलः विंभलो विह्वलो ।

न बिन्दुपरे ॥ १३० ॥

अनुस्वारात् परस्य द्वित्वं न स्यात् । सङ्क्रान्तः संकंतो ।

समासे वा ॥ १३१ ॥

समासे शेषा-ऽऽदेशयोर्वा द्वित्वं स्यात् । 'शेषा०' (३५) इत्यत्र
'अनादौ' इत्युक्तेः अप्राप्तविभाषेयम्, अन्तर्वर्त्तिनीं विभक्तिमाश्रित्य
पदादित्वात् । छायाग्रामः छायाग्रामो छाहाग्रामो, 'छायायां हः'
(१६८) इति वक्ष्यमाणेन हः ।

सेवादिषु ॥ १३२ ॥

एषु अनादौ स्थितस्य हलो द्वित्वं वा स्यात् । निहितः निहितो निहिओ,
'न-र-होः' (११४) इति निषेधाद् न हस्य द्वित्वम् । तूष्णीकः तुण्हिको
तुण्हिओ, 'ह-स्ल०' (४९) इति ण्हः । दुःखितः दुक्खिओ, पक्षे 'ख-घ०'
(५९) इति हः, दुहिओ । द्वित्वपक्षे 'वर्गेषु' (३९) इति कः । विश्रामः
वीसामो विस्सामो । निःश्वासः निस्सासो पीसासो । पुष्यः पुस्सो पूसो ।
सेवा एक नख दैव अशिव त्रैलोक्य निहित तूष्णीक कर्णिकार दीर्घरात्रि
दुःखित अश्व ईश्वर विश्राम निःश्वास रश्मि मित्र पुष्य सेवादिः । उभ-
यत्र विभाषेयम्, सेवादीनामप्राप्ते दीर्घादीनां 'शेषा०' (३५) इति प्राप्ते ।

कृष्णे वा ॥ १३३ ॥

अत्र युक्तस्य विप्रकर्षो वा स्यात्, पूर्वस्य तदचक्रता च । कृष्णः
किसणो कृण्हो । व्यवस्थितविभाषेयम्, तेन वर्णवाचके विप्रकर्षः, भग-
वति न इति ।

तिणिण जस्-शस्-भ्याम् ॥ १४९ ॥

जसा शसा च सह त्रिशब्दस्य तिणिण इत्यादेशः स्यात् । त्रयः तिणिण ।

त्रेस्ती ॥ १५० ॥

त्रिशब्दस्य ती इत्यादेशः स्यात् सुपि । त्रिभिः तीहिं । त्रिभ्यः तीहितो तीसुत्तो । त्रयाणाम् तीणहं त्रिषु तीसु । सखा सही । सखायः सहीओ सहीणो । हे सहि । सखायम् सहिं । सखीन् सहिणो इत्यादि । पतिः पई । 'इत् एत्' (१२१) इति एत्, विष्णुः वेण्हू । जडुः जण्हू । इक्षुः उच्छू, 'उद् इक्षु' (४६) इति उत्त्वम्, अक्ष्यादित्वात् छः । ऋतुः उदू, 'उद् ऋत्वादिषु' (२९) इति उत्त्वम्, 'ऋत्वादिषु' (६२) इति दः ।

स्थाणावहरे ॥ १५१ ॥

युक्तस्य खादेशः स्यात्, न तु हरे अभिषेये । स्थाणुः खाणू । हर-वाचके तु थाणू, 'उपरि' (३६) इति सलोपः, विष्णुवत् । 'र्य-शय्या' (११२) इति जः, अभिमन्युः अहिमज्जु । करेणुः सूर्यः करेणु सुज्जो ।

ऋत आरः सुपि ॥ १५२ ॥

ऋकारस्य आरः स्यात् सुपि । भर्ता भत्तारो ॥

उर्जस्-शस्-टा-डस्-सुप्सु वा ॥ १५३ ॥

जसि शसि टायां डसि सुपि च ऋकारस्य स्थाने उर्वा स्यात् । आरापवादः । भर्तारः भत्तारा भत्तूओ भत्तुणो, 'जस ओः' (१३९) इति ओत्वं णो च । हे भर्तः हे भत्तारा । भर्तृन् भत्तुणो, 'इदुतोः' (१४०) इति णो । भर्त्रा भत्तुणा भत्तारेण । भर्तृभिः भत्तारेहिं । भर्तुः भत्तुस्स भत्तारस्स । भर्तृणां भत्ताराणं । भर्तरि भत्तारम्मि । भर्तृषु भत्तुसु भत्तारेसु ।

पितृ-भ्रातृ-जामातृणामरः ॥ १५४ ॥

एषाम् ऋत अरः स्यात् सुपि । आरापवादः ।

आच्च सौ ॥ १५५ ॥

पित्रादीनाम् आत् स्यात् सौ परे । पिता पिआ पिअरो इत्यादि । भ्राता भाआ भाअरो । जामाता जामाआ जामाअरो इत्यादि ।

इत्यजन्ताः पुंल्लिङ्गाः ॥

पृष्ठा-ऽक्षि प्रश्नाः स्त्रियां वा ॥ १५६ ॥

पक्षे यथालिङ्गम् । प्रश्नः पण्हा । शय्या सेजा, 'ए शय्यादिषु' (४१)
इति एत्वम्, 'र्यं शय्या०' (११२) इति जः ।

जसो वा ॥ १५७ ॥

स्त्रियां तिष्ठतो जस उ ओ इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । शय्याः
सेजाउ सेजाओ सेजा ।

अमि ह्रस्वः ॥ १५८ ॥

स्त्रीवाचकस्य ह्रस्वः स्याद् अमि परे । शय्याम् सेज्जं ।

स्त्रियां शस उदोतौ ॥ १५९ ॥

स्त्रीलिङ्गे वर्तमानस्य शस उत् ओत् इत्येतावादेशौ स्याताम् । शय्याः
सेजाउ सेजाओ ।

टा-ङ्सू-ङीनामिदेददातः ॥ १६० ॥

स्त्रीवाचकात् परेषां टा ङ्सू ङि इत्येतेषां इत् एत् अत् आत् एते
आदेशाः स्युः । इति चतुर्ष्वपि प्राप्तेषु -

नाऽऽतोऽदातौ ॥ १६१ ॥

स्त्रीवाचकादाकारान्तात् शब्दात् परेषां टा-ङ्सू-ङीनाम् अत्-आतौ न
स्याताम् । शय्यया सेजाइ सेजाए । शय्याभिः सेजाहिं । शय्यायाः सेजा
सेजादो सेजादु सेजाहि । शय्याभ्यः सेजाहितो सेजासुतो ।

ङसो वा ॥ १६२ ॥

ङसः स्त्रियाम् उ ओ इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । शय्यायाः सेजाउ
सेजाओ सेज्जस्स (?) सेजाइ सेजाए । शय्यानाम् सेजाणं । शय्यायाम्
सेजाइ सेजाए । शय्यासु सेजासु ।

स्त्रियामात् एत् ॥ १६३ ॥

सम्बुद्धौ स्त्रियाम् आत् एत्वं स्यात् सौ । हे शय्ये हे सेजे, 'अन्त्यस्य०'
(२६) इति सोर्लोपः ।

लवण-नवमल्लिकयोर्वेन ॥ १६४ ॥

लवण-नवमल्लिकयोः आदेः अतो वकारेण सह ओकारः स्यात् ।
नवमल्लिका णोमल्लिआ । मल्लिका इत्येतदुपलक्षणम्, तेन नवमल्लिकाः

गोभलिआ इति सिद्धम् । निद्रा णेद्वा णेद्वा, 'द्वि रो वा' (१०४) इति वा रलोपः, 'इत् एत्' (१२१) इति एत्वम् । हे णेद्दे इत्यादि ।

अत् पथि-हरिद्रा-पृथिवीषु ॥ १६५ ॥

एषु इतो अत् स्यात् । हरिद्रा हलद्वा हलद्वा, 'हरिद्रादीनां' (६०) इति रेफस्य लः । जिह्वा जीहा, 'ईत् सिंह' (५०) इति ईत्वम्, "सर्वत्र" (३४) इति वलोपः । मुक्ता मोक्ता, 'उत् ओत्' (५५) इति ओत्वम् । घृणा घणा, 'ऋतोऽत्' (१२०) इति अत् । कृशरा किसरा । कृत्या किच्चा, 'त्य-थ्य' (७१) इति च्चः । कृपा किवा, 'पो वः' (८५) इति वः । त्रिष्वपि 'ऋतोऽत्' (१२०) इति अत्वे प्राप्ते ऋष्यादित्वाद् इत्वम् । वेदना विअणा वेअणा, 'क-ग' (१०) इति दलोपः, 'नो णः' (९) इति णः ।

यमुनाया मस्य ॥ १६६ ॥

लोपः स्यात् । यमुना जडणा, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः ।

चन्द्रिकायां मः ॥ १६७ ॥

कस्य मः स्यात् । चन्द्रिका चन्दिमा, 'सर्वत्र' (३४) इति रलोपः । पताका पडाआ, 'प्रतिसर' (३३) इति तस्य डः, 'क-ग' (१०) इति कलोपः ।

छायायां हः ॥ १६८ ॥

यस्य हः स्यात् छाया छाहा । रमणीया रमणिज्जा, 'उत्तरीया' (८६) इति जः, 'शेषादेशः' (३५) इति द्वित्वम् । सटा सढा । राधा राहा । सभा सहा । शोभा सोहा । परिखा फलिहा, हरिद्रादित्वाद् लः, 'परुष' (६३) इति फः, 'ख-घ' (५९) इति हः । दोला डोला, 'दोला-दण्ड' (९४) इति डः । निशा णिसा ।

सुषायां ण्हः ॥ १६९ ॥

पस्य ण्हः स्यात् । सुषा सोण्हा, तुण्डरूपत्वाद् उत्त ओत्वम् । उल्का उक्का, 'सर्वत्र' (३४) इति ललोपः । वार्त्ता वत्ता, 'र्त्तस्य टः' (११५) इति प्राप्ते वृत्तादित्वात् । वर्त्तिका वत्तिआ, पूर्ववत् । सन्ध्या संझा, 'ध्य-द्योर्झः' (१०७) इति झः । सत्या सच्चा, 'त्य-थ्य' (७१)

इति चः । मिथ्या मिच्छा । विद्या विज्ञा । क्षुणा छुणा । उक्षा उच्छा ।
मक्षिका मच्छिआ । कक्षा कच्छा । रक्षा रच्छा । पञ्चस्वपि अक्ष्यादित्वात्
छः 'वर्गेषु०' (३७) इति चः । क्षमा छमा खमा, 'क्षमा-वृक्ष०' (६७)
इति छत्ववैकल्प्यात् पक्षे 'ष्क-स्क०' (५६) इति खः । 'श्च-त्स-प्सां
च्छः' (१२३) पश्चिमा पच्छिमा । विवत्सा विइच्छा (?) । लिप्सा लिच्छा ।
जुगुप्सा जुउच्छा, 'प्रायः' (१०) इत्युक्तेर्लोपाभावपक्षे जुगुच्छा ।
मूर्च्छा मुच्छा, "वर्गेषु०" (३७) इति चः ।

आङो ज्ञादेशस्य ॥ १७० ॥

'अ-ज्ञ०' (१२७) इति जातो यो णादेशः तस्य आङः परस्य द्वित्वं
न स्यात् । आज्ञा आणा । सेवा सेव्वा सेवा, 'सेवादिषु' (१३२) इति
द्वित्वम् ।

क्लिष्ट-श्लिष्ट-रत्न-क्रिया-शार्ङ्गेषु तत्स्वरवत् पूर्वस्य ॥ १७१ ॥

एषु युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात् । विप्रकर्षितव्यस्य विप्रकर्षे जाते यः
पूर्वो वर्णो निरर्थकस्तस्य विप्रकर्षितव्यस्वरता स्यात् । क्रिया किरिआ ।

अः क्षमा-श्लाघयोः ॥ १७२ ॥

युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्याकारः तत्स्वरता च । क्षमा खमा ।
विप्रकर्षितव्यस्य दीर्घत्वादीर्घत्वे प्राप्ते ह्रस्वो अकारो विधीयते । 'ष्क-स्क०'
(५६) इति खः । श्लाघा सलाहा, 'श-षोः०' (४४) इति सः, 'ख-घ०'
(५९) इति हः ।

ज्यायामीत् ॥ १७३ ॥

युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य ईकारः । ज्या जीआ अत्राप्याकारे प्राप्ते
ईकारो विधीयते । ज्येत्यत्र विप्रकर्षकरणात् पूर्वम् 'अधो म-न-याम्' (४०)
इति यलोपः, ततो घचेत् 'क-ग०' (१०) इति । माला माला । शाला साला ।

आदीतौ बहुलम् ॥ १७४ ॥

स्त्रियामकारान्तादातः स्थाने आत् ईत् इत्येतौ बहुलं स्तः । सहमाना
सहमाणा सहमाणी । वेपमाना वेवमाणा वेवमाणी । हरिद्रा हलद्रा(द्वा)
हलद्दी । सूर्पनखा सुप्पणहा सुप्पणही । छाया छाहा छाही । का की ।
जा जी । ता ती । प्रश्नः पण्ही । समृद्धिः समिद्धी सामिद्धी, 'आ समृद्ध्या०'
(४३) इति वा आकारः, ऋष्यादित्वाद् इः, 'सु-भिसु०' (१३८) इति
दीर्घः । अभिजातिः आहिआई अहिआई, 'ख-ग०' (५९) इति हः,
'क-ग०' (१०) इति जलोपः ।

ष्टस्य ठः ॥ १७५ ॥

ष्ट इत्यस्य ठकारः स्यात् । गृष्टिः गिष्टी । हृष्टिः दिष्टी । सृष्टिः सिष्टी । चतुर्ष्वपि ऋष्यादित्वाद् इत्वम् । आकृतिः आइदी, ऋष्यादित्वाद् इः, आउदी, ऋत्वादित्वाद् उः । सुकृतिः सुइदी, ऋष्यादौ कृति-शब्दपाठात् । संवृतिः संवुदी । प्रतिपत्तिः पदिवत्ती, 'प्रतिसर०' (३३) इति तु न, ऋत्वादिपाठेन बाधात् । वसतिः वसही, 'वसति-भरत०' (८१) इति हः ।

यष्ट्यां लः ॥ १७६ ॥

आदेर्लः स्यात् । 'आदेर्यो जः' (३९) इति जापवादः । यष्टिः लष्टी । कीर्त्तिः किती, 'र्त्तस्य टः' (११५) इति टे प्राप्ते धूर्त्तादित्वाद् न । मूर्त्तिः मुत्ती । वितर्दिः विअड्डी । विच्छर्दिः विच्छड्डी । उभयत्रापि 'गर्दभ०' (?) इति डः, 'शेषा-ऽऽदेश०' (३५) इति द्वित्वम् । कुक्षिः कुच्छी, अक्ष्यादित्वात् छः । स्थितिः थिई । मनस्विनी मणंसिणी, समृद्ध्यादित्वाद् वा आकारः, वक्रादित्वादनुस्वारः ।

ईदूतोर्ह्रस्वः ॥ १७७ ॥

सम्बुद्धौ । [हे मनस्विनि] हे माणंसिणि । मनस्विनीम् माणंसिणिं, 'अमि ह्रस्वः' (१५८) इति ह्रस्वः । वल्ली वेल्ली, शय्यादित्वाद् एकारः । चतुर्थी-चतुर्दशोस्तुना ॥ १७८ ॥

अनयोस्तुशब्देन सह आदेः अतः ओत्वं वा स्यात् । चतुर्थी चोत्थी चउत्थी । चतुर्दशी चोदही चउदही । 'दशादिषु०' (१००) इति हः । पृथिवी पुहवी, ऋत्वादित्वाद् उः, 'अत् पथि०' (१६५) इति अः ।

उः पद्म-तन्वीसमेषु ॥ १७९ ॥

पद्मशब्दे तन्वी इत्येवंरूपेषु च युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य उकारः । गुर्वी गरुई, सुकुटादित्वाद् अः । शफरी सभरी, 'श-षोः सः' (४४) 'फो भः' (९१) । अङ्गुरी अङ्गुली, 'हरिद्रादीनां०' (६०) इति रेफस्य लः ।

विसिन्यां भः ॥ १८० ॥

आदेः । विसिनी भिसिणी । स्त्रीलिङ्गनिर्देशः किम् ? विसं । षष्ठी छट्टी, 'षट्-शावक०' (९९) इति छः । सप्तमी सत्तमी । कर्त्तरी कत्तरी, 'र्त्तस्य टः' (११५) इति प्राप्ते धूर्त्तादित्वाद् न । लक्ष्मी लच्छी, अक्ष्यादित्वात् छः ।

कमस्य ॥ १८१ ॥

पः स्यात् । रुक्मिणी रुक्मिणी । श्रीः सिरी । हीः हिरी, 'इः श्री-ही०' (३२) इति विप्रकर्ष-यौ । लघ्वी लहुई, 'ख-घ०' (५९) इति हः, 'उः पद्म०' (१७९) इति विप्रकर्षः । तन्वी तणुई । नदी नई । हे नइ । पृष्ठं पुठी । अक्षि अच्छी । वधूः वहु । हे बहु इत्यादि ।

मातुरात् ॥ १८२ ॥

मातृशब्दसम्बन्धिन ऋकारस्य आत् स्यात् । माता माआ । हे माए इत्यादि ।

॥ इति अजन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

लोपोऽरण्ये ॥ १८३ ॥

आदेरतः ।

सोर्बिन्दुर्नपुंसके ॥ १८४ ॥

नपुंसके तिष्ठतः सोः अनुस्वारः स्यात् । अरण्यं रणं ।

इज्जस्र-शसोर्दीर्घश्च ॥ १८५ ॥

नपुंसके वर्त्तमानयोः जस्-शसोः इदादेशः स्यात्, पूर्वस्य दीर्घश्च । अरण्यानि रण्णाइं । अरण्यं रणं । अरण्यानि रण्णाइं । अरण्येन रण्णेण । पुंवत् । हे अरण्य हे रण्ण, 'नाऽऽमन्त्रणे०' (२५) इति निषेधाद् बिन्दुर्न, किन्तु 'अन्यस्य०' (२६) इति सोर्लोपः ।

ओ बदरे देन ॥ १८६ ॥

अत्र दकारेण सह आदेरत ओत्वं स्यात् । बदरं बोरं इत्यादि ।

उदूखले द्वा वा ॥ १८७ ॥

अत्र दूशब्देन सह आदेः ओद् वा स्यात् । उदूखलं ओखलं उदूहलं ।

उलूहले ल्वा वा ॥ १८७A ॥

उलूहलशब्दे लू शब्देन सह आदेः उकारस्य ओकारो वा स्यात् । उलूहलंओहलं । इति पाठान्तरम् ।

उदूतो मधूके ॥ १८८ ॥

अत्र मधूकशब्दे ऊकारस्य उत् स्यात् । मधूकं महुअं ।

अद् दुकूले वा लस्य द्वित्वम् ॥ १८९ ॥

दुकूलशब्दे जकारस्य अकारो वा स्यात्, तत्सन्नियोगेन च लस्य द्वित्वम् । दुकूलं दुअल्लं दुजलं ।

एन्नूपुरे ॥ १९० ॥

नूपुरशब्दे जकारस्य एत् स्यात् । अत्र 'आदेः' इति प्रयोजनाभावाद् नानुवर्त्तते । नूपुरं णेउरं । ऋणं रिणं, 'ऋ रिः' (?) इति रि । हृदयं हिअयं, ऋष्यादित्वाद् इः । वृन्दावनं वुंदावणं, 'ऋतोऽत्' (१२०) इति प्राप्ते ऋत्वादित्वाद् उः ।

लृतः कृत इलि ॥ १९१ ॥

कृतशब्दे लृकारस्य इलिः स्यात् । कृतं किलित्तं । त्रैलोक्यं तेल्लोकं, 'एत् एत्' (६९) इति एत्, सेवादित्वात् द्वित्वम्, द्वित्ववैकल्प्यात् पक्षे तेल्लोकं । शैल्यं सेत्तं । खैरं सइरं । वैरं वइरं । द्वयोरप्यैकारस्य 'दैत्यादिषु' (६८) इति अइः ।

दैवे वा ॥ १९२ ॥

दैवशब्दे ऐकारस्य अइरित्यादेशो वा स्यात् ।

नीडादिषु च ॥ १९३ ॥

एषु अनादौ तिष्ठतो हलो वा द्वित्वम् । दैवं देवं देवं दइवं । नीडस्रोत प्रेम व्याहृत जनक यौवन दैव इत्यादयः नीडादिः ।

इत् सैन्धवे ॥ १९४ ॥

अत्र एकारस्य इकारः स्यात् । एत्वापवादः । सैन्धवं सिन्धवं ।

ईद् धैर्ये ॥ १९५ ॥

अत्र एकारस्य ईत् स्यात् । एत्वापवादः ।

तूर्य-धैर्य-सौन्दर्या-ऽऽश्चर्य-पर्यन्तेषु रः ॥ १९६ ॥

एषु र्यस्य रः । धैर्यं धीरं । तूर्यं तूरं । सौन्दर्यं सुन्दरं, 'उत् सौन्दर्यादिषु' (७६) इति उः । आश्चर्यं अच्छेरं, 'अत्स०' (१२५) इति छः । पर्यन्तं परंतं । त्रिष्वपि शय्यादित्वाद् एत्वम् । यौवनं जोवणं, 'औत् ओत्' (७३) इति औत्, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः, नीडादित्वात् द्वित्वम्, 'नो णः०' (९) इति णः ।

आञ्च गौरवे ॥ १९७ ॥

गौरवशब्दे आ अउ ओ इत्येते स्युः । गौरवं गारवं गउरवं गोरवं इत्यादि । गर्भितं गब्भिणं, 'गर्भिते णः' (८०) इति णः ।

उस्य च ॥ १९८ ॥

डकारस्यायुक्तस्य अनादिभूतस्य लः स्यात् । दाडिमं दालिमं । 'प्रायः' इत्यनुवृत्तेः कचिद् दाडिमं इत्यपि ।

ठो ढः ॥ १९९ ॥

अयुक्तस्य अनादिभूतस्य ठस्य ढः स्यात् । जठरं जढरं । कठोरं कढोरं ।

अंकोठे ल्लः ॥ २०० ॥

अत्र ठस्य ल्लः स्यात् । अंकोठं अंकोल्लं । सफलं सभलं, 'फो भः' (९१) इति भः । सुखं सुहं, 'ख-ग०' (५९) इति हः । करुणं कल्लुणं, हरिद्रादित्वाद् रेफस्य लः ।

श्मश्रु-श्मशानयोरदेः ॥ २०१ ॥

अनयोरदेर्वर्णस्य लोपः स्यात् । श्मशानं मसाणं ।

चौर्यसमेषु रिअं ॥ २०२ ॥

एषु र्यस्य रिअं इत्यादेशः स्यात् । चौर्यं चोरिअं । शौर्यं सोरिअं । 'औत् ओत्' (७३) इति ओत् । वीर्यं वीरिअं ।

पर्यस्त-पर्याण-सौकुमार्येषु ल्लः ॥ २०३ ॥

एषु र्यस्य ल्लः स्यात् । पर्यस्तं पल्लत्थं, 'स्तस्य थ' (५७) इति थः, 'शेषादेश०' (३५) इति द्वित्वम् । पर्याणं पल्ल्याणं । सौकुमार्यं सोअमल्लं, मुकुटादित्वाद् अः ।

पत्तने ॥ २०४ ॥

युक्तस्य टः । पत्तनं पट्टणं । क्षीरं छीरं, अक्षयादित्वात् छः । श्लक्ष्णं सण्हं । तीक्ष्णं तिण्हं । 'ह-स्त्र०' (४९) इति णहादेशः ।

चिह्ने धः ॥ २०५ ॥

युक्तस्य धः स्यात् । णहापवादः । चिहं चिन्धं, प्रायिकमेतत्, चिण्हं ।

ष्पस्य फः ॥ २०६ ॥

स्पष्टम् । पुष्पं पुष्फं । शष्पं सष्फं ।

तालवृन्ते ष्ठः ॥ २०७ ॥

युक्तस्य ष्ठः स्यात् । तालवृन्तकं तालवेण्ठअं तलवेण्ठअं ।

आम्र-ताम्रयोर्वः ॥ २०८ ॥

अनयोरनादेः वः स्यात् । आम्रं अंवं । ताम्रं तंवं । क्लिष्टं किलिष्टं ।
रत्नं रअणं । 'क्लिष्ट-श्लिष्टं' (१७१) इति विप्रकर्षः तत्स्वरता च ।

उदुम्बरे दोर्लोपः ॥ २०९ ॥

अत्र दु इत्यस्य लोपः स्यात् । उदुम्बरं उंवरं ।

कालायसे यस्य वा ॥ २१० ॥

अत्र यस्य वा लोपः स्यात् । य इति विशिष्टग्रहणम् । कालायसं
कालासं कालाअसं, लोपाभावपक्षे 'क-गं' (१०) इति यकारमात्रलोपः ।

मलिने लिनोरिलौ वा ॥ २११ ॥

मलिनशब्दे लि इत्यस्य इः स्यात्, न इत्यस्य लः स्याद् वा । मलिनं
मइलं मलिणं ।

गृहे घरोऽपतौ ॥ २१२ ॥

गृहशब्दस्य घर इत्ययमादेशः स्यात्, न तु पतौ परे । गृहं घरं ।
अपताविति किम् ? गृहपतिः गृहवई । पीतं पीअं । धनं धणं ।

वृन्दे वो रः ॥ २१३ ॥

वृन्दशब्दे वात् परः स्वार्थे रो वा स्यात् । व्रंदं वंदं ।

आलाने न-लोः ॥ २१४ ॥

अत्र नकार-लकारयोः स्थितिपरिवृत्तिः स्यात् । आलानं आणालं ।

दाढादयो बहुलम् ॥ २१५ ॥

दाढा इत्यादयः शब्दाः बहुलं निपात्यन्ते । चातुर्यं चाउलिअं । पृष्टं
पुष्टं । इदानीं एण्हि । दुहिता दिद्धी । मण्डूकः मण्डूरो । कमलं कंदोद्धो ।
गोदावरी गोला । ललाटं लडालं णिडालं । आकृतिगणोऽयम् । 'सु-भिसं'
(१३८) इति दीर्घे प्राप्ते -

न नपुंसके ॥ २१६ ॥

क्लीबे प्रथमैकवचने दीर्घो न । वारि वारिं । वारीणि वारीइं । पुनस्त-
द्धत् । शेषं पुंवत् ।

अस्थिनि ॥ २१७ ॥

युक्तस्य ठः स्यात् । अस्थि अट्ठिं । सक्थि सत्थिं । अक्षि अच्चिं ।
गुरु गरुअं, मुकुटादित्वाद् अः । श्मश्रुः मंसू, 'श्मश्रु-श्मशानयोः०'
(२०१) इति शकारलोपः अश्रु अंसू, वक्रादित्वाद् अनुस्वारः । मधु महं ।

॥ इत्यजन्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

*

अनङ्गान् अणङ्गुओ, विष्णुवत् । चतुरशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः ।

चतुरश्चत्तारो चत्तारि ॥ २१८ ॥

चतुःशब्दस्य जसा शसा च सह एतावादेशौ स्याताम् । चत्वारः
चत्तारो चत्तारि । चतुरः चत्तारो चत्तारि । चतुर्भिः चज्जहिं । चतुर्भ्यः
चज्जहितो चज्जसुत्तो । चतुर्णां चउण्हं । चतुर्षु चज्जसु ।

किमः कः ॥ २१९ ॥

स्पष्टम् । कः को । के के, 'सर्वादेः०' (१३५) इति एत्वम् ।

इदम्-एतत्-किं-यत्-तद्भ्यो इणा वा ॥ २२० ॥

एभ्यः परः दा इणा इति वा स्यात् । केन कइणा केण ।

त्तो दो डसेः ॥ २२१ ॥

किं-यत्-तद्भ्यो डसेः त्तो दो इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । कस्मात्
कत्तो कदो का कादो काडु काहि । केभ्यः काहितो कासुत्तो ।

किं-यत्-तद्भ्यो डस आसः ॥ २२२ ॥

एभ्यः परस्य डस आस इत्यादेशो वा स्यात् । कस्य कास कस्स ।

आम एसिं ॥ २२३ ॥

इदम्-एतत्-किं-यत्-तद्भ्यः परस्य आम एसिं इत्यादेशो वा स्यात् ।
केषां केसिं काणं ।

डेहिं ॥ २२४ ॥

किं-यत्-तद्भ्यो डेः सप्तम्येकवचनस्य हिं इत्यादेशो वा स्यात् ।
कस्मिन् कहिं कस्सिं कम्मि कत्थ ।

आहे इआ काले ॥ २२५ ॥

किं-यत्-तद्भ्यः परस्य डेः काले वाच्ये आहे इआ इत्येतावादेशौ वा
स्याताम् । कदा काहे कइआ कहिं कस्सिं कम्मि कत्थ । केषु केसु ।

इदम् इमः ॥ २२६ ॥

इदम्शब्दस्य इम इत्यादेशः स्यात् सुपि । अयं इमो । इमे इमे । इमं इमं । इमात् इमा । अनेन इमेण इमिणा, 'इदमेतत्' (२२०) इति इणादेशः । एभिः इमेहिं । अस्मात् इमादो इमादु इमाहि । एभ्यः इमाहितो इमासुत्तो ।

स्स-स्सिमोरद् वा ॥ २२७ ॥

इदम्शब्दस्य अ इत्यादेशो वा स्यात् स्से स्सिमि च । अस्य अस्स इमस्स । एषां इमेसिं इमाणं ।

डेदन हः ॥ २२८ ॥

इदम्शब्दस्य दकारेण डेः ह इत्यादेशो वा स्यात् । पक्षे यथाप्राप्तम् । न त्थः ॥ २२९ ॥

इदम्ः परस्य डेः त्थ इत्यादेशो न स्यात् । अस्मिन् अस्सिं इमस्सिं इह इमम्मि । एषु इमेसु ।

राज्ञश्च ॥ २३० ॥

राज्ञश्चशब्दस्य आ इत्ययमादेशः स्यात् सौ । राजा राआ, 'अन्त्यस्य' (२६) इति सोर्लोपः ।

जस्-शस्-डसो णो ॥ २३१ ॥

राज्ञः परेषामेषां णो इत्यादेशः स्यात् ।

आ णो-णमोरडसि ॥ २३२ ॥

णो-णमोः परयोः राज्ञो जस्य आ स्यात् । राजानः राआणो ।

आमन्नणे वा विन्दुः ॥ २३३ ॥

राज्ञश्चशब्दस्यामन्नणेऽनुस्वारो वा स्यात् सौ । हे राजन् हे राअं हे राअ । राजानं राअं । 'शेषो' (१३७) इति अदन्तवद्भावः ।

शस एत् ॥ २३४ ॥

राज्ञः परस्य शस ए इत्यादेशः स्यात् । राज्ञः राए राआणो ।

टा णा ॥ २३५ ॥

राज्ञः परस्य तृतीयैकवचनस्य णा इत्यादेशः स्यात् ।

डसश्च द्वित्वं वाऽन्त्यलोपश्च ॥ २३६ ॥

राज्ञः परस्य डसादेशस्य टादेशस्य च द्वित्वं वा स्यात् अन्यस्य च लोपः । राज्ञा रण्णा । पक्षे -

इदद्वित्वे ॥ २३७ ॥

डसादेशस्य टादेशस्य च द्वित्वाभावपक्षे राज्ञ इत्वं स्यात् । राइणा । राजभिः राएहिं 'शेषो०' (१३७) इत्यदन्तवद्भावः । राज्ञः राआ राआदो राआदु राआहि । राजभ्यः राआहितो राआसुत्तो । राज्ञः रण्णो राइणो ।

आमो णं ॥ २३८ ॥

राज्ञ उत्तरस्य आमः णं इत्यादेशः स्यात् । राज्ञां राआणं । राज्ञि राअम्मि राए । राजसु राएसु ।

आत्मनो अप्पाणो वा ॥ २३९ ॥

आत्मनः अप्पाण इत्यथमादेशो वा स्यात् ।

इत्व-द्वित्ववर्जं राजवदनादेशे ॥ २४० ॥

आत्मनः अनादेशे राजवत् कार्यं स्यात्, [इत्व-द्वित्वे वर्जयित्वा] । आत्मा अप्पाणो अप्पा । 'राज्ञश्च' (२३०) इति आकार उक्तः सोऽत्रापि स्यात् । आत्मनः अप्पाणो । आत्मानं अप्पं । आत्मनः अप्पणो । आत्मना अप्पणा । आत्मभिः अप्पेहिं । आत्मनः अप्पा अप्पादो अप्पादु अप्पाहि । आत्मभ्यः अप्पाहितो अप्पासुत्तो । आत्मनः अप्पणो । आत्मनां अप्पाणं । आत्मभिः (०त्मनि?) अप्पे अप्पम्मि । आत्मसु अप्पेसु ।

ब्रह्माद्या आत्मवत् ॥ २४१ ॥

ब्रह्मन् युवन् इत्यादयः शब्दाः आत्मवत् साधवः स्युः । ब्रह्मा बह्मा बह्माणो । युवा जुवा जुवाणो । अध्वा अद्धा अद्धाणो । एवमादयो लक्ष्यानुसारतो ज्ञेयाः ।

न-सान्त-प्रावृट्-शरदः पुंसि ॥ २४२ ॥

नश्च सश्च न-सौ अन्ते यस्य इति विग्रहः । एते पुंसि प्रथोक्तव्याः । कर्म कम्मो । जन्म जम्मो । चर्म चम्मो । आत्मयुक् अप्पजू ।

तदेतदोः सः सावनपुंसके ॥ २४३ ॥

अनयोर्घः तकारः तस्य सकारः स्यात् सौ । सः सो । ते ते । तं तं ।
तान् ता । तेन तइणा तेण । तैः तेहिं ।

तद् ओश्च ॥ २४४ ॥

तदः परस्य ङसेः औ इत्ययमादेशो वा स्यात् । तस्मात् तओ तत्तो
तदो तादो तादु ताहि । तेभ्यः ताहितो तासुत्तो ।

ङसा से ॥ २४५ ॥

तदो ङसा सह से इत्यादेशो वा स्यात् । तस्य से तास तस्स ।

आमि सिं ॥ २४६ ॥

तद् आमा सह सिं इत्यादेशो वा स्यात् । तेषां सिं तेसिं ताणं ।
तस्मिन् तहिं तस्सिं तम्मि तत्थ । तदा तहे तइआ । तेषु तेसु । एवं यः जो ।

एतदः सावोत्वं वा ॥ २४७ ॥

एतद् ओत्वं वा स्यात् सौ । एषः एसो एस, नित्यप्राप्तविभाषेयम् ।
एते एते । एतं एतं । एतान् एता । एतेन एदिणा एदेण । एतैः एदेहिं ।

त्तो ङसेः ॥ २४८ ॥

एतदः परस्य ङसेः त्तो इत्ययमादेशो वा स्यात् ।

त्तो-त्थयोस्तो लोपः ॥ २४९ ॥

एतच्छब्दस्य तकारस्य लोपः स्यात् त्तो-त्थयोः परयोः । एतस्मात्
एत्तो एदादो एदादु एदाहि । एतस्मिन् एत्थ एतस्सिं एतम्मि ।

पदस्य ॥ २५० ॥

-इत्यधिकृत्य ।

युष्मदस्तं तुमं ॥ २५१ ॥

युष्मदः पदस्य तं तुमं इत्यादेशौ स्यातां सावा सह । त्वं तं तुमं ।

तुञ्जे तुम्हे जसि ॥ २५२ ॥

युष्मदः पदस्य तुञ्जे तुम्हे इत्येतावादेशौ वा स्तः जसा सह । यूयं
तुञ्जे तुम्हे ।

त्तं वाऽमि ॥ २५३ ॥

युष्मदः पदस्य त्तं इत्यादेशो वा स्यात् अमा सह । त्वाम् त्तं तुमं ।

वो च शसि ॥ २५४ ॥

युष्मदः पदस्य वो तुञ्जे तुम्हे इत्येते आदेशाः स्युः शसा सह ।
युष्मान् वो तुञ्जे तुम्हे ॥

टा-ड्योस्तइ तए तुमए तुए ॥ २५५ ॥

युष्मदुत्तरयोः टा डि इत्येतयोः तइ तए तुमए तुए इत्येते आदेशाः
स्युः प्रकृत्या सह । त्वया तइ तए तुमए तुए ।

आडि च ते दे ॥ २५६ ॥

युष्मदः पदस्य आडा सह ते दे इत्येतावादेशौ स्तः । आड् इति
दासंज्ञा प्राचाम् ।

तुमाइ च ॥ २५७ ॥

अयमपि स्यात् । ते दे तुमाइ ।

तुञ्जेहिं तुम्हेहिं तुब्मेहिं भिसि ॥ २५८ ॥

युष्मदः पदस्य एते आदेशाः स्युः भिसा सह । युष्माभिः तुञ्जेहिं
तुम्हेहिं तुब्मेहिं । अत्र 'तुञ्जे तुम्हे तुब्मे' इति सुवचम् 'शिषो०'
(१३७) इत्यनेन 'भिसो हिं' (१७) इति हिमादेशस्यातिदिष्टत्वात् ।

डसौ तत्तो तइत्तो तुमादो तुमादु तुमाहि ॥ २५९ ॥

युष्मद एते आदेशाः स्युः डस्या सह । त्वत् तत्तो तइत्तो तुमादो
तुमादु तुमाहि ।

तुम्हाहिंतो तुम्हासुत्तो भ्यसि ॥ २६० ॥

युष्मद एतौ आदेशौ स्यातां पञ्चमीबहुवचनेन सह । युष्मत्
तुम्हाहिंतो तुम्हासुत्तो । अत्रापि 'तुम्हा भ्यसि' इत्येव सुवचम् । एवम-
[सत्] शब्देऽपि ज्ञेयम् ।

डसि तुमो-तुह-तुञ्ज-तुम्ह-तुब्माः ॥ २६१ ॥

युष्मद एते आदेशाः स्युः डसा सह । तव तुमो तुह तुञ्ज तुम्ह
तुब्म ।

वो भे तुञ्जाणं तुम्हाणमामि ॥ २६२ ॥

युष्मद एते स्युरामा सह । युष्माकम् वो भे तुञ्जाणं तुम्हाणं ।

डौ तुमम्मि ॥ २६३ ॥

युष्मदः तुमम्मि इत्यादेशः स्यात् ड्या सह । त्वयि तुमम्मि तद्
तए तुमए तुए ।

तुज्जेसु तुम्हेसु सुपि ॥ २६४ ॥

युष्मद एतौ स्यातां सुपा सह । युष्मास्तु तुज्जेसु तुम्हेसु ।

अस्मदो हमहमहअं सौ ॥ २६५ ॥

अस्मद एते स्युः प्रथमैकवचनेन सह । अहम् हं अहं अहअं ।

अहम्मिरमि च ॥ २६६ ॥

अस्मदः प्रथमैकवचन-द्वितीयैकवचनाभ्यां सह आदेशः स्यात् ।
अहं अहम्मि ।

अम्हे जस्-शसोः ॥ २६७ ॥

अस्मदः अयमादेशः स्याद् जसा शसा च सह । वयं अम्हे ।

मं ममं ॥ २६८ ॥

अस्मद एतावादेशौ स्याताम् । माम् अहम्मि मं ममं । 'अहम्मि-
रमि च' (२६६) इत्यतो 'अमि' इत्यनुवर्त्तते । 'चानुकृष्टं नोत्तरत्र' इति
परिभाषया चानुकृष्टानां हं-आदीनां नानुवर्तनम् ।

णे शसि ॥ २६९ ॥

अस्मदो णे इत्यादेशः स्यात् शसा सह । अस्मान् अम्हे णे ।

आडि मे ममाइ ॥ २७० ॥

अस्मदः एतौ स्तः ट्या सह । मया मे ममाइ ।

डौ च मइ मए ॥ २७१ ॥

अस्मदः एतौ स्तः डि-टाभ्यां सह । मया मइ मए ।

अम्हेहिं भिसि ॥ २७२ ॥

अस्मदः अयं स्याद् भिसा सह । अस्माभिः अम्हेहिं ।

मत्तो मइत्तो ममादो ममादु ममाहि डसौ ॥ २७३ ॥

अस्मद एते स्युः डस्या सह । मत् मत्तो मइत्तो ममादो ममादु
ममाहि ।

अम्हेहिंतो अम्हेसुत्तो भ्यसि ॥ २७४ ॥

अस्मद एतौ स्यातां भ्यसा मह । अस्मत् अम्हेहिंतो अम्हेसुत्तो ।

मे मम मह मज्झ डसि ॥ २७५ ॥

अस्मद एते स्युः डसा सह । मम मे मम मह मज्झ । झस्य धत्वमपीच्छन्ति केचित्, मद्ध ।

मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे आमि ॥ २७६ ॥

अस्मद एते स्युरामा सह । अस्माकम् मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे ।

ममम्मि डौ ॥ २७७ ॥

अस्मदः अयं स्याद् डथा सह । मयि ममम्मि मइ मए ।

अम्हेसु सुपि ॥ २७८ ॥

अस्मदः अयं स्यात् सुपा सह । अस्मासु अम्हेसु ।

शरदो दः ॥ २७९ ॥

अत्रान्त्यहलो दः स्यात् । लोपापवादः । शरत् सरदो, 'नसान्त०' (२४२) इति पुंवद्भावः ।

दिक्-प्रावृषोः सः ॥ २८० ॥

अनघोरन्त्यस्य सः स्यात् । लोपापवादः । प्रावृट् पाउसो । रत्तमुद् रअणमू ।

अदसो दो मुः ॥ २८१ ॥

अदसो दकारस्य मु इत्यादेशः स्यात् सुपि ।

हश्च सौ ॥ २८२ ॥

अदसो दस्य हः स्यात् सौ । असौ अह अमू । हादेशोऽयं ओत्व-आत्व-विन्दून् परत्वाद् बाधते । अमी अमुए अमुणो । अमुम् अमुं । अमून् अमूओ । अमुना अमुणा । अमीभिः अमूहिं । अमुष्मात् अमूदो अमूदु अमूहि । अमीभ्यः अमूहिंतो अमूसुत्तो । अमुष्य अमुस्स । अमीषाम् अमुणं । अमुष्मिन् अमुस्सि अमुम्मि अमुत्थ । अमीषु अमूसु । तपः तवो । यशः जसो । सरः सरो ।

॥ इति हलन्ताः पुंलिङ्गाः ॥

स्त्रियामात् ॥ २८३ ॥

स्त्रियां वर्तमानस्य अन्त्यस्य हलः आत् स्यात् । उपानत् उवाणथा ।
द्यौः दिआ ।

रो रा ॥ २८४ ॥

स्त्रियामन्त्यस्य रेफस्य रा इत्ययमादेशः स्यात् । धूः धुरा । गीः गिरा ।
चतस्रः चत्तारो चत्तारि । का काआ की ।

इद्भ्यः स्सा-से ॥ २८५ ॥

हकारान्तेभ्यः किं-यत्-तद्भ्यो ङसः स्सा से इत्येतावादेशौ वा
स्याताम् । कस्याः किस्सा कीसे । पक्षे कीइ कीए कीअ कीआ, 'टाङ्स्' (१६०)
(१६०) इति आदेशाः । 'आदीतौ०' (१७४) इति आकारपक्षे काइ
काए । इयं इमा । युष्मदस्मदोर्लिङ्गत्रये सदृशं रूपम् । या जा जी । याः
जाउ जाओ जा । यस्याः जिस्सा जीसे जीइ जीए जीअ जीआ जाइ
जाए । वाक् वाआ ।

न विद्युति ॥ २८६ ॥

अन्त्यस्य हल आकारो न स्यात् । विद्युत् विज्जू । दिक् दिसा,
'दिक्प्रावृषोः०' (२८०) इति सः । असौ दिक् अम् दिसा । अम्ः
अओ । मूशेषभूकारस्त्रीलिङ्गवत् ।

॥ इति हलन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

*
नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो ॥ २८७ ॥

क्लीवे सविभक्तिकस्येदमः इदं इणं इणमो इत्यादेशाः स्युः स्वमोः
परयोः । इदम् इदं इणं इणमो । इमानि इमाइं । पुनस्तद्वत् । शेषं
पुंवत् । किम् किं । कानि काइं । पुनरपि । शेषं पुंवत् । तत् तं, '०अनपुं-
सके' (२४३) इत्युक्ते न सादेशः । तानि ताइं । एतत् एदं । यत् जं ।
यानि जाइं । अदः अह अहुं । अमूनि अमूइं । 'न सान्त०' (२४२)
इति प्राप्ते-

न शिरो-नभसी ॥ २८८ ॥

एतौ पुंसि न स्याताम् । शिरः सिरं, 'अन्त्यस्य०' () इति
सोर्लोपः ।

॥ इति हलन्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

निपाताः ॥ २८९ ॥

अधिकारोऽयम् ।

हुं दान-पृच्छा-निर्धारणे ॥ २९० ॥

हुमित्ययं निपातसंज्ञः स्याद् दाने पृच्छायां निर्धारणे च ।

चिअ चेअ अवधारणे ॥ २९१ ॥

चिअ चेअ इत्येतौ निपातसंज्ञौ स्तः निश्चये ।

ओ सूचना-पश्चात्ताप-विकल्पेषु ॥ २९२ ॥

ओ इत्ययं निपातः सूचनायां पश्चात्तापे विकल्पे च ।

इर-किर-किला अनिश्चिताख्याने ॥ २९३ ॥

त्रयो निपाताः संशयाख्याने ।

हु-क्खु निश्चय-वितर्क-सम्भावनेषु ॥ २९४ ॥

हु क्खु इत्येतौ निपातौ निश्चये वितर्के सम्भावनायां च ।

णवरः केवले ॥ २९५ ॥

निपातः केवलेऽर्थे ।

णवरि आनन्तर्ये ॥ २९६ ॥

णवरि इति आनन्तर्ये निपातः ।

किणो प्रश्ने ॥ २९७ ॥

किणो इत्ययं पृच्छायां निपातः ।

अव्वो दुःख-सूचना-सम्भावनेषु ॥ २९८ ॥

अव्वो इत्ययं निपातः दुःखे सूचनायां सम्भावनायां च ।

अलाहि निवारणे ॥ २९९ ॥

अलाहि इत्ययं निपातः निषेधे ।

अइ वले सम्भाषणे ॥ ३०० ॥

अइ वले एतौ निपातौ वचने ।

अव्वो अम्मो दुःखा-ऽऽक्षेप-विस्मापनेषु ॥ ३०१ ॥

एतौ निपातौ दुःखे आक्षेपे विस्मापने च । अत्र 'अव्वो दुःख-सूचना-सम्भावनेषु' 'अम्मो च दुःखाऽऽक्षेप-विस्मापनेषु' इति सूत्रयितुं युक्तमिति केचित् । वयं तु तत्रापरसूत्रे 'दुःख' शब्दमपि त्यजामः, पूर्वसूत्रे दुःखशब्दस्य स्वरितत्वेनानुवर्तनात्, 'स्वरितेनाधिकारः' इति पाणिनीये

परिभाषितत्वात् समस्तपदादेकदेशानुवृत्तिस्तु 'किङ्कति च' इत्यत्र 'न धातुलोपः'—इत्यतो धातुग्रहणानुवृत्तिवत् ।

णवि वैपरीत्ये ॥ ३०२ ॥

अयं वैपरीत्ये निपातः ।

सू कुत्सायाम् ॥ ३०३ ॥

सू इत्ययं निपातो निन्दायाम् ।

रे अरे हिरे सम्भाषण-रतिकलहा-ऽऽक्षेपेषु ॥ ३०४ ॥

रे अरे हिरे इति त्रयः क्रमेण सम्भाषणे रतिकलहे आक्षेपे च निपा-
ताः । अत्र च 'यथासंख्यमनुदेशः समानाम्' इत्युक्तत्वाद् यथासंख्यम् ।

म्मिव-मिअ-विआ इवार्थे ॥ ३०५ ॥

म्मिव मिअ विअ इत्येते इवार्थे निपातसंज्ञकाः ।

अज्ज आमन्नणे ॥ ३०६ ॥

अज्ज इत्ययं निपातः आमन्नणेऽर्थे, सम्बोधने इत्यर्थः ।

शेषः संस्कृतात् ॥ ३०७ ॥

उक्तादन्यः संस्कृतादवगन्तव्यः ।

इवे वः ॥ ३०८ ॥

इवशब्दे व्व इति निपात्यते । स इवायम् सो व्व इमो । विअ इति
वक्तव्यम्, सो विअ इमो ।

अपौ विः ॥ ३०९ ॥

अपिशब्दे विः इति निपात्यते । सोऽपि देव इव सो वि देवो व्व ।

ओदवा-ऽपयोः ॥ ३१० ॥

अव अप इत्येतयोः ओ इत्यादेशो वा स्यात् । अवगाहः ओगाहो
अवगाहो । अपनयः ओणओ अवणओ, 'पो वः' (८५) इति वः ।

इतेस्तः पदादेः ॥ ३११ ॥

पदादेः इतिशब्दस्य यः तकारः ततः परस्य इकारस्य अ इत्यादेशः
स्यात् । इति विलपन् इअ विलअन्तो । त् इति किम् ? आदेरिकारस्य मा
भूत् । पदादेरिति किम् ? इलेलिरिति वक्तव्यम् (?) । प्रिय इति हसति
पिओ ति हसइ ।

ओ च द्विधाकृजः ॥ ३१२ ॥

कृञ्परो यो द्विधाशब्दः तस्य आदेः इकारस्य ओकारः स्याद् उश्च ।
द्विधाकृतम् दोहाइअं दुहाइअं । एवम् एअं एवं, एव एअ एव, यावदादि-
त्वाद् वा वलोपः ।

तल्-त्वयोर्दा-त्तणौ ॥ ३१३ ॥

पाणिनीये भावार्थे [यौ] तल्-त्वौ विहितौ तयोः क्रमेण दा त्तण
इत्येतावादेशौ स्याताम् । कृष्णता कणहदा, 'तलन्तं स्त्रियाम्' ()
इति लिङ्गानुशासनबलात् स्त्रीत्वम् । कृष्णत्वम् कणहत्तणं, 'त्वान्तं
क्लीबम्' () इति षण्ढत्वम् ।

आल्विल्लोल्लालवत्तेत्ता मतुपः ॥ ३१४ ॥

तदस्यास्त्यस्मिन्नित्यर्थे विहितो मतुप् तस्य आल्ल इल्ल उल्ल आल्ल
वत्त इत्त इति षडादेशाः स्युः । निद्रावान् णिद्दाल्ल । मालावान् मालाइल्लौ ।
विकारवत् विआरुल्लं । धनवान् धणालो । गुणवान् गुणवत्तो । मानवान्
माणइत्तो, 'सन्धावचा०' (१) ।

विद्युत्-पीताभ्यां वा लः ॥ ३१५ ॥

आभ्यां लप्रत्ययः स्यात् । विद्युत् विज्जुली, विद्युच्छब्दस्य स्त्रीलिङ्ग-
त्वात् स्त्रीत्वम्, पक्षे विज्जू । पीतं पीअलं पीअं ।

॥ इति श्रीज्योतिर्वित्सरसात्मजरघुनाथकविकण्ठीरव-
विरचिते प्राकृतानन्दे प्रथमः परिच्छेदः ॥ १ ॥

[अथ द्वितीयः परिच्छेदः ।]



भू सत्तायाम् ।

भुवो हो-हुवौ ॥ ३१६ ॥

भूधातोः हो हुव इत्येतावादेशौ स्याताम् ।

ते-तिपोरिदेतौ ॥ ३१७ ॥

धातोः परयोः ते तिप् इत्येतयोरिदेतौ स्याताम् । यथासंख्यं नेष्यते ।

अत ए से ॥ ३१८ ॥

नियमार्थं वचनम् । त-तिपोः स्विप्-थासोर्यौ ए से इत्येतावादेशौ विहितौ तावकारान्तादेव स्याताम्, नान्यस्मात् ।

लादेशे वा ॥ ३१९ ॥

लकारादेशे परे अत एत्वं वा स्यात् । भवति = होइ हुवइ हुवए हुवेइ हुवेए ।

वर्त्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्ज्ज जा वा ॥ ३२० ॥

त्तमाने भविष्यदनद्यतने च विध्यादिषु चोत्पन्नस्य प्रत्ययस्य ज्ज जा इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । होज्ज होजा । लि-लो-लुङ्-लडे विध्यादयः ।

मध्ये च ॥ ३२१ ॥

वर्त्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु च धातु-प्रत्यययोर्मध्ये ज्ज जा इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । भवति = होज्जइ होजेइ होजाइ, पक्षे पूर्व-मुक्तम् ।

नानेकाचः ॥ ३२२ ॥

वर्त्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु चानेकाचो धातोः परतो मध्ये ज्ज जा इत्येतावादेशौ न स्याताम् । भवति हुवज्ज हुवेज्ज हुवज्जा हुवेज्जा । एवमग्रेऽपि पूर्वोक्तलेषु प्रथम-द्वितीय-तृतीयेषु पुरुषेषु एकवचन-द्विवचन-वहुवचनादावप्यवगन्तव्यम् ।

न्ति-हेत्था-मो-मु-मा बहुषु ॥ ३२३ ॥

तिङो बहुवचनानामेते आदेशाः स्युः । प्रथमपुरुषबहुवचनस्य न्ति, मध्यमस्य ह इत्था एतौ, उत्तमस्य मो लु म एते इति विवेकः । भवतः भवन्ति = होन्ति हुवन्ति हुवेन्ति हुवज्ज हुवेज्ज हुवज्जा हुवेज्जा होज्ज होजा होज्जन्ति होजेन्ति होज्जान्ति ।

थास्-सिपोः सि से ॥ ३२४ ॥

धातोः परयोः थास्-सिपोः सि से इत्येतावादेशौ स्याताम् ।
यथासंख्यं न । भवसि = होसि हुवसि हुवेसि हुवसे हुवेसे । भवथः भवथ-
होह होइत्था हुवह हुवेह हुवइत्था हुवेइत्था हुवित्था, 'सन्धा०' (१)
इत्यकारलोपो वा ।

इट्-मयोर्मिः ॥ ३२५ ॥

इट् मि इत्येतयोः मिः स्यात् ।

अत आ मिपि वा ॥ ३२६ ॥

अकारस्य आकारो वा स्याद् मिपि परे । भवामि = होमि हुवामि
हुवेमि हुवमि ।

इच्च बहुषु ॥ ३२७ ॥

मिपो बहुवचने परे अत इः स्याद् आ च । भवावः भवामः = होमो
होसु होम हुवामो हुविमो हुवेमो हुवमो हुवामु हुविमु हुवेसु हुवसु
हुवाम हुविम हुवेम हुवम । इति लट् । अथ लिट्-

ईअ भूते ॥ ३२८ ॥

भूते काले धातोः परस्य प्रत्ययस्य ईअ इत्यादेशः स्यात् । बभूव =
हुवीअ ।

इअं भूते ॥ ३२९ ॥

भूते काले धातोः परस्य प्रत्ययस्य इअं इत्यादेशः स्यात् । बभूव-
हुविअं ।

एकाचो हीअ ॥ ३३० ॥

भूते काले एकाचो धातोः परस्य प्रत्ययस्य हीअ इत्यादेशः स्यात् ।
बभूव = होहीअ । त्रीण्यपि रूपाणि प्रथम-मध्यमोत्तमैकवचन-द्विवचन-
बहुवचनेष्ववगन्तव्यानि ।

उ सु सु विध्यादिष्वेकस्मिन् ॥ ३३१ ॥

विध्यादेरेकवचनस्य क्रमेण उ सु सु इत्येते आदेशाः स्युः । बभूव =
होउ हुवेउ हुवउ ।

न्तु ह मो बहुषु ॥ ३३२ ॥

विध्यादेर्बहुवचनस्य क्रमेण न्तु ह मो इत्येते आदेशाः स्युः । बभूवुः =
होन्तु हुवेन्तु हुवन्तु । बभूविथ = होसु हुवेसु हुवसु = बभूव = होइ हुवेह

हुवह, हविधानं इत्थ(त्था)धाधनार्थम् । वभूव-होसु हुवेसु हुवसु । वभू-
विम=होसो हुवेसो हुवसो । भोविधानं सु-मयोर्वाधार्थम् । इति लिट् ।
अथ लृट्-

धातोर्भविष्यति हिः ॥ ३३३ ॥

भविष्यति काले धातोः परे हिः स्यात् । भविता=होहिइ हुवेहिइ
हुवहिइ ।

एच्च क्त्वा-नुमन्-तव्य-भविष्यत्सु ॥ ३३४ ॥

एषु अत एत्वं स्यात्, चादिश्च । हुविहिइ हुवेहिए हुवहिए हुविहिए
होज्ज होज्जा हुवेज्ज हुवज्ज हुवज्जा होज्जहिइ होज्जेहिइ होज्जाहिइ होउ हुवेउ
हुवउ । भवितारः=होहिंति हुवेहिंति हुविहिंति हुवहिंति होन्तु हुवेन्तु
हुवन्तु । भवितासि=होहिसि हुवेहिसि हुवहिसि हुवेहिसे हुवहिसे होसु
हुवेसु हुवसु । भवितास्य=होहिहा हुवेहिह हुवहिह होह हुवेह हुवह ।

उत्तमे स्सा हा च ॥ ३३५ ॥

भविष्यत्युत्तमे परे धातोः परौ स्सा हा इत्येतौ स्याताम् । चात् हिः ।

मिना स्सं वा ॥ ३३६ ॥

भविष्यति मिना सह धातोः परः स्सं वा स्यात् । भविष्यामि=
होस्सामि हुवेस्सामि हुवस्सामि होहामि हुवेहामि हुवहामि हुवाहामि
होहिमि हुवेहिमि हुवाहिमि हुवहिमि होस्सं हुवेस्सं हुवस्सं होसु हुवेसु
हुवासु हुवसु ।

मो-मु-मैर्हि-स्सा-हित्था ॥ ३३७ ॥

भविष्यति मो-मु-मैः सह हिस्सा हित्था इत्येतावादेशौ वा स्याताम् ।
भवितास्सः=होहिस्सा हुवेहिस्सा हुविहिस्सा हुवाहिस्सा हुवहिस्सा होहित्था
हुवेहित्था हुविहित्था हुवाहित्था हुवहित्था होस्सामो हुवेस्सामो हुविस्सामो
हुवस्सामो होहामो हुवेहामो हुविहामो हुवाहामो हुवहामो होहिमो
हुवेहिमो हुविहिमो हुवाहिमो हुवहिमो होसो हुवेसो हुविमो हुवामो
हुवमो । इति लृट् ।

अथ लृट् । भविष्यति=होहिइ हुवेहिइ हुवहिय हुवेहिए हुवहिए ।
भविष्यन्ति=होहिन्ति हुवेहिन्ति हुवहिन्ति । भविष्यसि=होहिसि
हुवेहिसि हुवहिसि हुवेहिसे हुवहिसे । भविष्यथ=होहिह हुवेहिह-
हुवहिह होहित्थ हुवइत्थ हुवित्थ । भविष्यामि=होस्सामि हुवेस्सामि
हुवस्सामि होहामि हुवेहामि हुवाहामि हुवहामि होहिमि हुवेहिमि

हुवाहिमि हुवहिमि होस्सं हुवेस्सं हुवस्सं । भविष्यामः = होहिस्सा हुवे-
हिस्सा हुविहिस्सा हुवाहिस्सा हुवहिस्सा होहित्था हुवेहित्था हुविहित्था
हुवाहित्था हुवहित्था होस्सामो हुवेस्सामो हुविस्सामो हुवस्सामो होहामो
हुवेहामो हुविहामो हुवाहामो हुवहामो होहिमो हुवेहिमो हुविहिमो
हुवाहिमो हुवहिमो होस्सामु हुवेस्सामु हुविस्सामु हुवस्सामु होहामु
हुवेहामु हुविहामु हुवाहामु हुवहामु होहिमु हुवेहिमु हुविहिमु हुवाहिमु
हुवहिमु होस्साम हुवेस्साम हुविस्साम हुवस्साम होहाम हुवेहाम
हुविहाम हुवाहाम हुवहाम होहिम हुवेहिम हुविहिम हुवाहिम हुवहिम ।
इति लट् ।

अथ लोट् - भवतु = होउ हुवेउ हुवउ । भवन्तु = होतु हुवेन्तु हुवन्तु ।
भव = होसु हुवेसु हुवसु । भवत = होह हुवेह हुवह । भवानि = होसु हुवेसु
हुवामु हुवमु । भवाम = होमो हुवेमो हुवामो हुविमो हुवमो । इति
लोट् । लोट्त्वद् लङ्-लिङाशीर्लिङः ।

अथ लृङ्-अभूत् = हुवीअ हुविअं होहीअ, एवं पुरुष-वचनेषु ।
लृङ् लृट्त्वत् ।

प्रादेर्भवः ॥ ३३८ ॥

प्रादेः परस्य भुवो भव इत्यादेशः स्यात् । प्रभवति = पभवइ पभवए
पभवेइ पभवेए । उद्भवति उवभवइ । प्रतिभवइ पडिभवइ, 'प्रतिसर०'
(३३) इति तस्य डः । खाह भक्षणे ।

खादि-धाव्योः खा-धौ ॥ ३३९ ॥

अनयोः खा धा इत्येतौ क्रमेण स्यातां वर्त्तमाने भविष्यति विध्या-
दीनामेकवचनेषु च । खादति खाइ । चखाद खाहीअ । खादिता खाहिइ ।
खादिष्यति खाहिइ । खादतु खाउ । एवं लङ्-लिङाशीर्लिङः । अखादीत्
खादीअं खादीअ । लृङ् लृट्त्वत् ।

क्षियो झिजः ॥ ३४० ॥

'क्षि क्षये' अस्य झिज इत्यादेशः स्यात् । क्षयति झिजइ झिजए ।
झिज-भिज्जावप्येके । व्रज गतौ ।

चो व्रज-नृत्योः ॥ ३४१ ॥

अनयोरन्तस्य चः स्यात् । व्रजति वच्चइ वच्चेइ वच्चए । व्रजिता वच्च-
हिइ वच्चहिए । वेष्ट वेष्टने ।

वेष्टेश्च ॥ ३४२ ॥

अन्तस्य ढः स्यात् । ठापवादः । वेष्टते वेढइ वेढए वेढेइ वेढेए ।
'कथेर्ढः' (३५८) इति पूर्वसूत्रान्तर्गतं न कृतम्, 'उत्समोर्लः' (३४३)
इत्युत्तरसूत्रेऽनुवृत्त्यर्थम्, अन्यथा क्वथिरपि लुविधानेऽनुवर्त्तते ।

उत्समोर्लः ॥ ३४३ ॥

एतयोः परस्य वेष्टेरन्तस्य लः स्यात् । उद्वेष्टते उवेल्लइ । संवेष्टते
संवल्लइ । स्फुट विकसने ।

स्फुटि-चलयोर्वा ॥ ३४४ ॥

अनयोरन्तस्य द्वित्वं वा स्यात् । स्फोटते फुटइ फुटइ, भौवादिक-
तौदादिकौ गृह्येते स्फुटि-चली इह । पट गतौ ।

पटेः फलः ॥ ३४५ ॥

स्पष्टम् । पटति फलइ । जृभि गात्रविनामे ।

जृभो जंभाअ ॥ ३४६ ॥

जृभि इत्यस्य जंभाअ इत्यादेशः स्यात् । जृम्भते = जंभाअइ जंभाएइ
जंभाअए जंभाएए । जृम्भिता = जंभाअहिइ जंभाएहिइ जंभाअहिए जंभा-
एहिए । जल्प न्यक्तायां वाचि ।

जल्पेर्लो मः ॥ ३४७ ॥

जल्पेर्लस्य मः स्यात् । जल्पति जंपइ । घुण भ्रमणे ।

घुणो घोलः ॥ ३४८ ॥

घुणेर्घोल इत्यादेशः स्यात् । घूर्णति घोलइ घोलए, भ्वादि तुदादि ।
मील निमेषणे ।

प्रादेर्मीलः ॥ ३४९ ॥

प्रादेः परस्य मीलो लस्य द्वित्वं वा स्यात् । प्रमीलति = पमिल्लइ पमी-
लइ पमिल्लए पमीलए पमिल्लेइ पमीलेइ पमील्लेए पमीलेए । जि जये ।

श्रु-हु-जि-लू-धुवां ण्णोऽन्ये ह्रस्वः ॥ ३५० ॥

एषामन्ये ण्णः स्यात्, दीर्घस्य ह्रस्वश्च स्यात् । जयति जिण्णइ ।
जिगाय जिण्णीअ ।

धावु गति-शुद्धोः । धावति धावते धाइ । दधाव दधावे धाहीअ ।
धाविता धाहिइ । धावतु धावतां धाउ ।

कासु शब्दकुत्सायाम् ।

काशेर्वासः ॥ ३५१ ॥

अवात् परस्य काशेर्वास इत्यादेशः स्यात् । अवकासते ओवासइ ।
अवादिति किम् ? कासते कासइ । ग्रसु ग्लसु अदने ।

ग्रसेर्विसः ॥ ३५२ ॥

अस्य विस इत्यादेशः स्यात् । ग्रसते विसइ । गाहू विलोडने ।

अवाद् गाहेर्वाहः ॥ ३५३ ॥

अवात् परस्य गाहेर्वाह इत्यादेशः स्यात् । अवगाहते ओवाहइ ।
अवादिति किम् ? गाहते गाहइ । वृषु मृषु सेचने ।

वृष-कृष-मृष-हृषामृतोऽरिः ॥ ३५४ ॥

एषां ऋतः अरिः इत्ययमादेशः स्यात् । वर्षति वरिसइ । मर्षति
मरिसइ । कृषि विलेखने इति भौवादिकस्यैव ग्रहणम्, न तौदादिकस्य,
वृषादिसाहचर्यात् । हृषु अलीके । हर्षति हरिसइ । वृधु वृद्धौ ।

वृधेर्ढः ॥ ३५५ ॥

अन्तस्य स्यात् । वर्धते वडइ, 'ऋतोऽद्' (१२०) इत्यकारः । त्रित्वरा
सम्भ्रमे ।

त्वरस्तुवरः ॥ ३५६ ॥

स्पष्टम् । त्वरते तुवरइ तुवरए । चल कम्पने । चलति चल्लइ चलइ,
'स्फुटि-चल्योर्वा' (३४४) इति वा द्वित्वम् । पत्ल गतौ ।

शद्ल-पत्योर्ढः ॥ ३५७ ॥

अनयोरन्तस्य ङः स्यात् । पतति पडइ । शद्ल शान्ते । शीयते
सडइ । कथे निष्पाके ।

कथेर्ढः ॥ ३५८ ॥

अन्तस्य स्यात् । कथति कडइ । म्लै हर्षक्षये ।

म्लै वा-वाऔ ॥ ३५९ ॥

अस्य वा वाअ इत्येतावादेशौ स्याताम् । म्लायति वाइ वाअइ । ध्यै
चिन्तायाम् ।

ष्ठा-ध्या-गानां ठाअ-ज्ञाअ-गाआः ॥ ३६० ॥

एषामेते क्रमेण स्युः ।

ठा-ज्ञा-गाश्च वर्त्तमान-भविष्यद्-विध्याद्येकवचनेषु ॥ ३६१ ॥

एषु ष्ठा-ध्या-गानां ठा ज्ञा गा इत्येते आदेशाः स्युः । चात् पूर्वोक्ताः ।

ध्यायति=झाअइ झाइ । दध्यौ=झाइअं झाहीअ । ध्याता=झाअहिइ झाहिइ ।
 एवं लृट् । ध्यायतु=झाअउ झाउ । अध्यासीत्=झाइअं झाईअ । अत्र
 'ठाझा-गाश्चालुडि' इत्येव सूत्रयितुं युक्तम् । गै शब्दे । गायति गाअइ
 गाइ, पूर्ववत् । घ्रा गन्धोपादाने ।

जिघ्रतेः पा-पाओ ॥ ३६२ ॥

अस्य पा पाअ एतौ स्याताम् । जिघ्रति पाइ पाअइ । जघ्रौ पाहीअ
 पाईअ पाइअं । ध्मा शब्दा-ऽग्निसंयोगयोः ।

उद्धमो धूमा ॥ ३६३ ॥

उदः परस्य धमतेः धूमा इत्यादेशः स्यात् । उद्धमति उद्धूमाइ ।
 घ्रा गतिनिवृत्तौ । तिष्ठति ठाअइ ठाइ, ध्यावत् । स्मृ चिन्तायाम् ।

स्मरतेर्भर-सुमरौ ॥ ३६४ ॥

अस्य भर सुमर इत्येतौ स्याताम् । स्मरति भरइ सुमरइ । स्मृ गतौ ।

ऋतोऽरः ॥ ३६५ ॥

धात्वन्तऋकारस्य अरः स्यात् । सरति सरइ । श्रु श्रवणे । शृणोति
 सुण्णइ । शुश्राव सुण्णीअ सुण्णिअं ।

श्वादीनां त्रिष्वप्यनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा ॥ ३६६ ॥

श्रु वचि नमि रुदि दृशि विदि इत्येतेषां प्रथम-मध्यम-उत्तमपुरुषेषु
 परेषु सोच्छं वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं इति क्रमेण आदेशाः स्युः,
 अनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा । श्रोता=सोच्छिहिइ सोच्छिइ सोच्छइ
 सोच्छहिइ सोच्छेहिइ सोच्छेइ सोच्छिहिए सोच्छिए सोच्छए सोच्छ-
 हिए सोच्छेहिए सोच्छेए । श्रोतारः=सोच्छिंहिति सोच्छिंहिति सोच्छंति
 सोच्छिंहिति सोच्छेंहिति सोच्छंति । श्रोतासि=सोच्छिसि सोच्छिहिसि
 सोच्छेसि सोच्छेहिसि सोच्छसि सोच्छहिसि सोच्छसे सोच्छिहिसे
 सोच्छेसे सोच्छेहिसे सोच्छसे सोच्छहिसे । श्रोतास्थ=सोच्छिहिह
 सोच्छेहिह सोच्छहिह सोच्छिह सोच्छेह सोच्छह ।

कृ-दा-श्रु-वचि-नमि-रुदि-दृशि-विदिरूपाणां काहं दाहं सोच्छं

वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं ॥ ३६७ ॥

एषामेते क्रमेण स्युः भविष्यत्युत्तमैकवचने । श्रोतासि=सोच्छं
 सोच्छिस्सामि सोच्छेस्सामि सोच्छस्सामि सोच्छिहामि सोच्छेहामि
 सोच्छाहामि सोच्छहामि सोच्छहिमि सोच्छिमि सोच्छेहिमि सोच्छेमि

सोच्छाहामि सोच्छामि सोच्छहिमि सोच्छमि सोच्छेस्सं सोच्छस्सं ।
 श्रोतास्सः=सोच्छिहिस्सा सोच्छेहिस्सा सोच्छाहिस्सा सोच्छिहित्था
 सोच्छेहित्था सोच्छाहित्था सोच्छहित्था सोच्छिस्सामो सोच्छेस्सामो
 सोच्छस्सामो सोच्छिहामो सोच्छेहामो सोच्छाहामो सोच्छहामो सोच्छि-
 हिमो सोच्छिमो साच्छेहिमो सोच्छेमो सोच्छाहिमो सोच्छामो सोच्छ-
 हिमो सोच्छमो । श्रोष्यति=सोच्छिहिइ इत्यादि । प्रथमे मध्यमस्यैक-
 वचने च लुङ्वत् । बहुवचने तु श्रोष्यथ=सोच्छिहिह सोच्छिह सोच्छे-
 हिह सोच्छेह सोच्छहिह सोच्छह सोच्छिहित्थ सोच्छित्थ सोच्छे-
 हित्थ सोच्छेइत्थ सोच्छहित्थ सोच्छइत्थ । मपि लुङ्वत्, मवि च । सु-
 मयोस्तु यत्र मो इति तत्र सु-मौ प्रत्येकं प्रयोज्यौ । शृणोतु सुण्णउ ।
 शृण्वन्तु सुणंतु । शृणु सुणसु । शृणुत सुणह । शृणोमि सुणमु ।
 शृणमः सुणमो । हशिइ प्रेक्षणे । इइ इत् ।

दृशेः पुलअ-णिअक्क-अवक्खाः ॥ ३६८ ॥

ज्यक्षरा आदेशाः स्युः । पश्यति पुलअइ णिअक्कइ अवक्खइ । दद्रष्ट
 पुलईअ णिअक्क(की?)अ अवक्खीअ । द्रष्टा दच्छिहिइ इत्यादि वोच्छवत् ।
 कृषि विलेखने । कर्षति करिसइ । गम्लु गतौ गच्छति गमइ । गन्तास्मि
 गच्छं इत्यादि । इति भ्वादिः ।

अद भक्षणे ।

शेषाणामदन्तता ॥ ३६९ ॥

लुप्तानुबन्धानां शेषाणामकारान्तत्वं स्यात् । अत्ति अअइ । हन
 हिंसा-गत्योः ।

हन्तेर्ममः ॥ ३७० ॥

हन्तेर्नस्य ममः स्यात् । हन्ति हम्मइ । वच परिभाषणे । वक्ति व-
 अइ । वक्ष्यामि वोच्छं इत्यादि सोच्छवत् । विद ज्ञाने । वेत्ति वेद
 वेअइ । वेत्स्यामि वेच्छं । अस भुवि । अस्ति अत्थि । सन्ति असन्ति ।

असेर्लोपः ॥ ३७१ ॥

असो लोपः स्यात् थास्-सिपोः परयोः । असि सि । थासोऽनुवृत्ति-
 भाव-कर्मणोः सफला । स्थ त्थ ।

मि-मो-सु-मानामधो हश्च ॥ ३७२ ॥

अस्तेः परेषां मि-मो-सु-मानामधो हः स्यात्, अस्तेश्च लोपः । अस्मि
 म्हि । सः म्हो म्ह म्ह ।

अस्तेरासिः ॥ ३७३ ॥

भूते निपातः । बभूव आसि । मृजूष शुद्धौ ।

मृजेर्लुभ-पुसौ ॥ ३७४ ॥

द्वक्षरौ स्याताम् । सार्ष्टि लुभइ पुसइ 'सुप' इति पाठे सुपइ ।
रुदिर् अश्रुविमोचने ।

रुदेर्वः ॥ ३७५ ॥

रुदेर्दस्य वः स्यात् । रोदिति रुवइ । रुदिष्यामि रुच्छं, वोच्छवत् ।
इत्यदादयः ।

हु दानादनयोः । जुहोति हुण्णइ, 'श्रु-हु-जि०' (३५०) इति ण्णः ।
जिभी भये ।

भियो भा-बीहौ ॥ ३७६ ॥

भा बीह इत्येतावादेशौ स्याताम् । विभेति भाइ बीहइ । पृ पालन-
पूरणयोः । पिपति परइ । डुभृञ् धारण-पोषणयोः । विभर्ति भरइ ।
माइ माने ।

निरो माडो माणः ॥ ३७७ ॥

निरः परस्य माडो माण इत्यादेशः स्यात् । निर्मिमीते निम्माणइ ।
निरः किम् ? मिमीते माइ । डुदाञ् दाने । ददाति दाइ । दातास्मि दाहं ।
डुधाञ् धारण-पोषणयोः ।

श्रदो धो दहः ॥ ३७८ ॥

श्रदः परस्य धो दह इत्यादेशः स्यात् । श्रदधाति सदहइ । श्रद
इति किम् ? धाइ । विजिर् पृथग्भावे ।

उदो विजः ॥ ३७९ ॥

उदः परस्य विजेर्जस्य वः स्यात् । उद्वेक्ते उद्वेक्ते उद्विद्वइ ।
ऋ सृ गतौ । इयर्त्ति अरइ । ससर्त्ति सरइ । इति ह्यादयः ।

दिवु क्रीडा-विजिगीषा-व्यवहारव्युति-स्मृति-मोद-मद-खम-कान्ति-
गतिषु । दीव्यति दिवइ । नृती गात्रविनामे । नृत्यति णच्चइ । त्रसि उद्वेगे ।

त्रसेर्वज्जः ॥ ३८० ॥

स्पष्टम् । त्रस्यति वज्जइ । व्रीड चोदने लज्जायां च । व्रीड्यति वीलइ ।
पूइ प्राणिप्रसवे । सूयते सूइ । दूइ परितापे ।

दूडो दूमः ॥ ३८१ ॥

स्पष्टम् । दूयते = दूमइ दूमए दूमेइ दूमेए । शो तनूकरणे । श्यति सोइ । दो अवखण्डने । चति दोइ । जनी प्रादुर्भावे । जायते जणइ । पद गतौ ।

पदः पालः ॥ ३८२ ॥

आदेशः स्यात् । पद्यते पालइ । बुध अवगमने ।

युधि-बुध्योर्झः ॥ ३८३ ॥

एतयोर्धस्य झः स्यात् । बुध्यते बुज्झइ । युध सम्प्रहारे । युध्यते जुज्झइ । सृज विसर्गे । सृज्यते सज्जइ । शुष शोषणे ।

रुषादीनां दीर्घः ॥ ३८४ ॥

रुषादीनां दीर्घः स्यात् । शुष्यति सूसइ । तुष प्रीतौ । तुष्यति तूसइ । दुष वैकृत्ये । दुष्यति दूसइ । क्रुध कोपे ।

क्रुधेर्झरः ॥ ३८५ ॥

स्पष्टम् । क्रुध्यति झूरइ । रुष रोषे । रुष्यति रूसइ । गृधु अभि-
काङ्क्षायाम् । गृध्यति गधइ । इति दिवादयः ।

षुञ् अभिषवे । सुनोति सुअइ । चिञ् चयने ।

चिञश्चिणः ॥ ३८६ ॥

चिञः चिण इत्यादेशः स्यात् । चिनोति चिणइ । शक् शक्तौ ।

शकादीनां द्वित्वम् ॥ ३८७ ॥

शकादीनां द्वित्वं वा स्यात् । शक्नोति सकइ । पक्षे -

शकेस्तर-चअ-तीराः ॥ ३८८ ॥

अस्य द्वक्षरास्त्रय आदेशाः स्युः । शक्नोति तरइ चअइ तीरइ । अशू व्याप्तौ सङ्घाते च । अश्रुते असइ । जिघृषा प्रागल्भ्ये । धृषणोति धसइ । इति स्वादयः ।

तुद व्यथने । तुदति तुअइ । णुद प्रेरणे ।

णुदेर्लोणः ॥ ३८९ ॥

णुदेर्लोण इत्यादेशः स्यात् । तुदति लोणइ । 'णोल्ल' इति पाठे णोल्लइ । कृष विलेखने । कृषति कसइ, 'वृष-कृष-०' (३५४) इति अरिस्तु न, वृषसाहचर्याद् भौवादिकस्यैव ग्रहणात् । ओविजी भये । उद्विजति उव्विवइ, 'उदो विजः' (३७९) इति वः । हुमस्जौ शुद्धौ ।

बुड-खुप्पौ मस्जेः ॥ ३९० ॥

[मस्जेः बुड खुप्प इत्येतावादेशौ स्याताम् ।] मज्जति बुडइ खुप्पइ ।
तृप तृप्तौ ।

तृपस्थिम्पः ॥ ३९१ ॥

तृपेः थिम्प इत्यादेशः स्यात् । तृपति थिम्पइ । घृण भ्रमणे । घूर्णति
घोलइ । पृङ् व्यायामे । प्रियते परइ । मृङ् प्राणत्यागे । त्रियते मरइ ।
सृज विसर्गे । सृजति सअइ । कृती छेदने । कृन्तति कतइ । खिद परि-
घाते । खिदति विसूरइ । पिश अवयवे । पिशति पिसइ । इति तुदादयः ।
रुधिर् आवरणे ।

रुधेर्न्य-म्मौ ॥ ३९२ ॥

रुधेः धस्य न्य म्म इत्येतावादेशौ स्याताम् । रुणद्धि रुन्धइ रुम्मइ ।
भिदिर् विदारणे ।

भिदि-च्छिदोरन्तस्य न्दः ॥ ३९३ ॥

अनयोः दस्य न्दः स्यात् । भिनत्ति भिदइ । छिदिर् द्वैधीकरणे ।
छिनत्ति छिदइ । खिद दैन्ये । खिनत्ति विसूरइ । ओविजी भय-चलनयोः ।
विनक्ति विअइ । उद्विनक्ति उद्विअइ । इति रुधादयः ।

तनु विस्तारे । तनोति तण्णइ । षणु दाने । सनोति सण्णइ । क्षणु
हिंसायाम् । क्षणोति खण्णइ । क्षिणु च-क्षिणोति खिण्णइ । ऋणु गतौ ।
ऋणोति अण्णइ । तृणु अदने । तृणोति तण्णइ । घृणु दीप्तौ । घृणोति
घण्णइ । वनु याचने । वनोति वण्णइ । मनु अवबोधने । मनोति मण्णइ ।
डुकृञ् करणे ।

कृञः कुणो वा ॥ ३९४ ॥

कृञः कुण इत्यादेशो वा स्यात् । करोति कुणइ करइ ।

कृञः का भूत-भविष्यतौश्च ॥ ३९५ ॥

एतयोरर्थयोः क्त्वा-तुङुन्-तव्येषु च कृञः का इत्यादेशः स्यात् ।
चकार काहीअ कम्मं (?) [करिष्यति ?] काहिइ । कर्तास्मि काहं, दावत् ।
इति तनादयः ।

डुकृञ् द्रव्यविनिमये ।

क्रीञः किणः ॥ ३९६ ॥

स्पष्टम् । क्रीणाति किणइ ।

वेः के च ॥ ३९७ ॥

वेः परस्य क्रीणातेः के इत्यादेशः स्यात् । चात् किणः । विक्रीणाति विक्रेइ विक्रिणइ । लृञ् छेदने । लृणाति लृण्णइ, 'श्रु-हु-जि०' (३५०) इति अन्त्यस्य णः पूर्वस्य ह्रस्वश्च । कृञ् हिंसायाम् । कृणाति करइ । धूञ् कम्पने । धुनाति धुण्णइ । शृ हिंसायाम् । शृणाति सरइ । पृ पालन-पूरणयोः । पृणाति परइ । मृ हिंसायाम् । मृणाति मरइ । ज्ञा अवबोधने ।

ज्ञो जाण-मुणौ ॥ ३९८ ॥

द्वक्षरावादेशौ स्याताम् । जानाति जाणइ मुणइ । बध बन्धने । बध्नाति बंधइ । वृद्ध सम्भक्तौ । वृणीते वरइ । मृद क्षोदे ।

मृदो लः ॥ ३९९ ॥

मृद्रातेः दस्य लः स्यात् । मृद्राति मलइ । अश भोजने । अश्नाति असइ । पुष पुष्टौ । पुष्णाति पूसइ । ग्रह उपादाने ।

ग्रहेर्गेण्हः ॥ ४०० ॥

स्पष्टम् । गृह्णाति गेण्हइ । इति ऋयादयः ।

चुर स्तेये ।

णिच एदादिरत आत् ॥ ४०१ ॥

णिच एत् स्यात्, धातोरकारस्य आत् स्यात् ।

आवे च ॥ ४०२ ॥

णिचोऽयमपि आदेशः स्यात् । चोरयति चुरेइ चुरावेइ । चिति स्मृत्याम् । चिन्तयति चिंतेइ चिंतावेइ । लक्ष दर्शना-ऽङ्कनयोः । लक्षयति लाखेइ लखावेइ । भक्ष अदने । भक्षयति भाखेइ भखावेइ । गज शब्दे । गाजयति गाजेइ गजावेइ । शठ श्लाघायाम् । शाठयति साठेइ सठावेइ । इति चुरादयः ।

भू-हेतुमद् णिच् । भावयति होएइ होआवेइ हुवेइ हुवावेइ । पट-पाटयति फालेइ फलावेइ । जल्पयति जंपेइ जंपावेइ । प्रमीलयति पमिलेइ पमिल्लावेइ । अवकाशयति ओवासेइ ओवासावेइ । ग्रासयति विसेइ विसावेइ । अवगाहयति ओगाहेइ ओगाहावेइ । रोषयति रूसेइ रूसावेइ । वर्षयति वरिसेइ वरिसावेइ । वर्धयति वडेइ वडावेइ । त्वरयति तुवरेइ तुवरावेइ । चलयति चलेइ चालेइ चल्लावेइ चलावेइ । स्मारयति

भारेइ भरावेइ सुमरेइ सुमरावेइ । सारयति सारेइ सरावेइ । श्रावयति
 सुण्णेइ सुण्णावेइ । गमयति गामेइ गमावेइ । रोदयति रुवेइ रुवावेइ ।
 पारयति पारेइ पारावेइ । नर्त्तयति णच्चेइ णच्चावेइ । त्रासयति वज्जेइ
 वज्जावेइ । व्रीडयति वीलेइ वीलावेइ । शुष्यति सूसेइ सूसावेइ । क्रुध्यति
 झूरेइ झूरावेइ । चिनोति चिण्णेइ चिण्णावेइ । शक्नोति सक्केइ सक्कावेइ,
 तारेइ तरावेइ, चाएइ चआवेइ, तीरेइ तीरावेइ । घूर्णयति घोलेइ घोला-
 वेइ । रुन्धयति रुंधेइ रुंधावेइ, रुम्भेइ रुम्भावेइ । कारयति कारेइ करावेइ,
 कुणेइ कुणावेइ । काययति किणेइ किणावेइ । इति हेतुमणिचप्रकरणम् ।

यक ईअ-इजौ ॥ ४०३ ॥

यको द्व्यक्षरावादेशौ स्याताम् । भूयते होईअइ होइज्जइ हुवीअइ
 हुविज्जइ ।

भाव-कर्मणोर्वश्च ॥ ४०४ ॥

श्रु हु जि लू धू एषामन्ते वः स्यात्, णश्च भाव-कर्मणोः । जीयते
 जिवइ जिण्णीअइ जिणिज्जइ ।

गमादीनां द्वित्वं वा ॥ ४०५ ॥

एषां द्वित्वं वा स्याद् भाव-कर्मणोः । हस्यते हस्सइ हसीअइ
 हसिज्जइ । रम्यते रम्मइ रमीअइ रमिज्जइ ।

ह-कोर्हीर-कीरौ ॥ ४०६ ॥

हञ्-कृजोः क्रमाद् हीर कीर इत्येतौ स्यातां भाव-कर्मणोः । हियते
 हीरइ । श्रूयते सुवइ सुण्णीअइ सुणिज्जइ । गम्यते गम्मइ गमीअइ
 गमिज्जइ ।

दुहि-लिहि-वहां दुब्म-लिब्म-वब्माः ॥ ४०७ ॥

एषां क्रमेण द्व्यक्षरा आदेशाः स्युः भाव-कर्मणोः । उह्यते व्भइ ।
 दुह्यते दुब्भइ । लिह्यते लिब्भइ । ह्रूयते हुवइ हुण्णीअइ हुणिज्जइ ।
 क्रियते कीरइ । लूयते लुवइ लुण्णीअइ लुणिज्जइ । धूयते धुवइ
 धुण्णीअइ धुणिज्जइ ।

ज्ञो णज्ज-णवौ वा ॥ ४०८ ॥

ज्ञाधातोः द्व्यक्षरावादेशौ वा स्यातां भाव-कर्मणोः । ज्ञायते णज्जइ
 णवइ । पक्षे जाणीअइ जाणिज्जइ, सुणीअइ सुणिज्जइ ॥

ग्रहे दीर्घो वा ॥ ४०९ ॥

स्पष्टम् । गृह्यते गाहिज्जइ । पक्षे गेण्हिज्जइ ।

॥ इति भावकर्मप्रकरणम् ॥ इति तिङन्तम् ॥

क्ते हुः ॥ ४१० ॥

भुवो हुरादेशः स्यात् क्ते । भूतं हुअं ।

क्ते तुरः ॥ ४११ ॥

त्वरतेः तुर इत्यादेशः स्यात् क्ते ।

क्ते ॥ ४१२ ॥

धातोरन्याकारस्य इः स्यात् क्ते । त्वरितं तुरिअं । पटितं फलिअं ।

क्तेन दिण्णादयः ॥ ४१३ ॥

दिण्ण इत्यादयः शब्दाः क्तेन सह निपात्यन्ते । दाञ् दत्तं दिण्णं । रुदिर् रुदितं रुण्णं । त्रसी त्रस्तं हित्थं । दह भस्मीकरणे दग्धं डह्णं । रञ्ज रक्तं रत्तं । दंश दष्टं डह्णं । रुधिर् रुद्धं रुह्णं इत्यादयः ।

भुजादीनां क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु लोपः ॥ ११४ ॥

एषामन्तस्य लोपो वा स्यात् ।

क्त्व ऊणः ॥ ४१५ ॥

क्त्वाप्रत्ययस्य ऊण इत्यादेशः स्यात् । भुक्त्वा भोऊण । भोक्कुम् भोउं । भोक्तव्यम् भोअव्वं । विदित्वा वेऊण । वेत्तुम् वेउं । वेत्तव्यम् वेअव्वं । एवं रुदिर् ।

वे क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु ॥ ४१६ ॥

ग्रहेः वे इत्यादेशः स्याद् एषु परेषु । गृहीत्वा घेऊण । ग्रहीतुम् घेउं । ग्रहीतव्यम् घेअव्वं । कृत्वा काऊण । कर्तुम् काउं । कर्त्तव्यम् काअव्वं ।

तृन इरः शीले ॥ ४१७ ॥

शीलार्थे तृन इर इत्यादेशः स्यात् । गन्ता गमिरो, गमनशील इत्यर्थः ।

न्त-माणौ शतृ-शानचोः ॥ ४१८ ॥

शतृ शानच् इत्येतयोः क्रमेण न्त माण इत्येतावादेशौ स्याताम् ।
भवन् हुवन्तो । यजमानः जअमाणो ।

ईत् स्त्रियाम् ॥ ४१९ ॥

शतृ-शानचोः ईदादेशः स्याद् न्त-माणौ च । वदन्ती वदई । यज-
माना जअमाणी । पक्षे वदन्ती जअमाणा ।

इति श्रीज्योतिर्वित्सरसात्मजरघुनाथकविकण्ठीरवविरचिते
प्राकृतानन्दे द्वितीयः परिच्छेदः ।

*

॥ समाप्तः प्राकृतानन्दः ॥

[॥ संवत् १७२६ अश्विन सुदि १२ रविदिने लिखितं लाभपुरनग-
रमध्ये शुभं भवतु । ॥ श्री ॥ ॥ छ ॥]

❀

परिशिष्टम्

प्राकृतशब्दानुक्रमणिका

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
	अ		अट्टि	अस्थि	२१७
अअइ	अत्ति	३६६	अण्डुओ	अनड्वान्	२१७
अओ	अमूः	२८६	अत्थि	अस्ति	३७०
अगओ, अगवो	अग्नयः	१४०	अत्तो	आप्तः	३७
अगिणा	अग्नित्ता	१४१	अत्तो	आर्त्तः	११६
अगिणो	अग्नीन्	१४०A	अद्धा, अद्धाणो	अध्वा	२४१
अगिस्मि	अग्नी	१४४	अप्पजू	आत्मयुक्	२४२
अगि	अग्नि	१४०	अप्पसा	आत्मना	२४०
अग्गी	अग्निः	१३८	अप्पणो	आत्मनः	२४०
अग्गी	अग्नयः	१४०	अप्पणः	आत्मनः	२४०
अग्गीओ	अग्नयः	१३६, १४०	अप्पा	आत्मनः	२४०
अग्गीणो			अप्पा	आत्मा	२४०
(अगिस्स)	अग्नेः	१४४	अप्पादु, अप्पादो	आत्मनः	२४०
अग्गीणो	अग्नयः	१३६, १४०	अप्पाणो	आत्मनः	२३६
अग्गीदु, अग्गीदो	अग्नेः	१४२	अप्पाणं	आत्मनां	२४०
अग्गीवो	अग्नयः	१४०	अप्पाहि	आत्मनः	२४०
अग्गीहि	अग्नेः	१४२	अप्पेहि	आत्मभिः	२४०
अग्गीणं	अग्नीनाम्	१४४	अप्पं	आत्मानं	२४०
अग्गीसु	अग्नीषु	१४४	अप्पस्मि	आत्मनि	२४०
अग्गीसुत्तो			अप्पासुत्तो,		
अग्गीहितो	अग्निभ्यः	१४३	अप्पाहितो	आत्मभ्यः	२४०
अङ्गुली	अङ्गुली	१७६	अप्पे	आत्मनि	२४०
अच्छि	अक्षि	२१७	अप्पेसु	आत्मसु	२४०
अच्छो	अक्षि	१८१	अम्हे	अयन्	२६७
अच्छेरं	अइचयं	१६६	अम्हे	अस्मान्	२६६
अण्णइ	अणोति	३६३	अम्हे	अस्माकम्	२७६
अणुअत्तमाणो	अनुवर्त्तमानः	१३४	अम्हेसु	अस्मासु	२७७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
अम्हेसुतो	अस्मत्	२७४
अम्हेहि	अस्माभिः	२७२
अम्हेहितो	अस्मत्	२७४
अम्हं	अस्माकम्	२७६
अम्हाणं	अस्माकम्	२७६
अमुए	अमी	२८२
अमुत्थ	अमुष्मिन्	२८२
अमुणां	अमुना	२८२
अमुणो	अमी	२८२
अमुणं	अमीषाम्	२८२
अमुम्मि	अमुष्मिन्	२८२
अमुस्त	अमुष्य	२८२
अमुस्सि	अमुष्मिन्	२८२
अमुं	अमुम्	२८२
अमुं	अदः	२८७
अमू	असौ	२८२
अमूइं	अमूनि	२८७
अमूओ	अमून्	२८२
अमूदिसा	असौ दिक्	२८६
अमूडु	अमुष्मात्	२८२
अमूदो	अमुष्मात्	२८२
अमूसु	अमीषु	२८२
अमूसुत्तो	अमीभ्यः	२८२
अमूहि	अमुष्मात्	२८२
अमूहि	अमीभिः	२८२
अमूहितो	अमीभ्यः	२८२
अरइ	इयति	३७६
अववखइ	पश्यति	३६८
अववखीअ	दृष्ट	३६८
अवगाही	अवगाहः	३१०
अवपओ	अपनयः	३१०
असइ	अश्नुते	३८८
असइ	अश्नान्ति	३६६
असन्ति	सन्ति	३७०
अस्त	अस्य	२२६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
अस्सि	अस्मिन्	२२६
अह	असौ	२८२
अह	अदः	२८७
अहअं	अहम्	२६५
अहम्मि	अहम्	२६६
अहम्मि	माम्	२६८
अहिआई	अभिजातिः	१७४
अहिमज्जु	अभिमन्युः	१५१
अहं	अहम्	२६५
अहं	अहम्	२६६
	आ	
आअदो	आगतः	६३
आइदी	आकृतिः	१७५
आउदी	आकृतिः	१७५
आणा	आज्ञा	१७०
आणालं	आलानं	२१४
आमेलो	आपीडः	५३
आवत्तो	आवर्त्ताः	११६
आसि	वभूव	३७३
आसो, अस्तो	अवः	४४
अ हिआई.		
अहिआई	अभिजातिः	१७४
	इ	
इच्छिओ	ईप्सितः	१२५
इणमो	इदम्	२८७
इणं	इदम्	२८७
इदं	इदम्	२८७
इमम्मि	इह	२८६
इमस्त	अस्य	२२६
इमस्सि	अस्मिन्	२२६
इमा	इमान्	२२६
इमा	इयं	२८५
इमाइं	इमानि	२८७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
इमाणं	एषां	२२७	उमुओ	उत्सुकः	१२६
इमाडु	अस्मात्	२२६	उहे	उभौ	१३६
इमादो	अस्मात्	२२६	उंबरं	उदुम्बरम्	२०६
इमासुत्तो	एभ्यः	२२६		ए	
इमाहि	अस्मात्	२२६	एअ	एव	३१२
इमाहितो	एभ्यः	२२६	एआरहो	एकादशः	१०१
इमिणा	अनेन	२२६	एअं	एवम्	३१२
इमे	इमे	२२६	एण्हि	इदानीं	२१५
इमेण	अनेन	२२६	एत्तो	एतस्मात्	२४६
इमेसि	एषां	२२७	एत्थ	एतस्मिन्	२४६
इमेसु	एषु	२२६	एतम्मि	एतस्मिन्	२४६
इमेहि	एभिः	२२६	एतस्सि	एतस्मिन्	२४६
इमो	अयं	२२६	एता	एतान्	२४७
इमं	इमं	२२६	एते	एते	२४७
इसी	ऋषिः	१४४	एतं	एतं	२४७
इंगालो	अङ्गारः	६०	एदाडु	एतस्मात्	२४६
इन्द्रो	इन्द्रः	१०४	एदादो	एतस्मात्	२४६
इंद्रो	इन्द्रः	१०४	एदाहि	एतस्मात्	२३६
	उ		एदिणा	एतेन	२४७
उक्केरो	उत्करः	४१	एदेण	एतेन	२४७
उच्छा	उक्षा	१६६	एदेहि	एतं	२४७
उच्छित्तो	उत्क्षिप्त	११८	एदं	एतत्	२८७
उच्छू	इक्षुः	१५०	एरावणो	ऐरावतः	८२
उद्धुमाइ	उद्धमति	३६३	एरिसो	ईहशः	५४
उद्दु	ऋतुः	१५०	एव	एव	३१२
उद्दुहलं	उद्दुखलम्	१८७	एवं	एवम्	३१२
उत्पीओ	उत्पीतः	३७	एस	एषः	२४७
उब्भवइ	उद्भवति	३३८	एसो	एषः	२४७
उवाणआ	उपानत्	२८३		ओ	
उव्विक्कइ	उद्वेविकते,		ओखलं	उद्दुखलम्	१८७
	उद्वेवेवित	३७६	ओगाहावेइ	अवगाहयति	४०२
	उद्विजति	३८६	ओगाहेइ	अवगाहयति	४०२
	उद्विनक्ति	३६३	ओगाहो	अवगाहः	३१०
उव्वेत्तइ	उद्वेष्टते	३४३	ओणओ	अपनयः	३१०
उसवो	उत्सवः	१२६			

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
ओवासइ	अवकासते	३५१
ओवासावेइ	अवकाशयति	४०२
ओवासेइ	अवकाशयति	४०२
ओवाहइ	अवगाहते	३५३
ओहलं	उलूहलम्	१८७A
अंकोल्लं	अंकोठं	२००
अंवं	आअं	२०८
अंसू	अश्रु	२१७
	क	
कइअवो	कैतवः	७१
कइआ	कदा	२२५
कउरवो	कौरवः	७४
कउसलो	कौशलः	७५
कच्छा	कक्षा	१६६
कज्जो	कार्यः	११२
कडइ	कवयति	३५८
कडोरं	कठोरं	१६६
कण्हो	कृष्णः १०, १२०, १३३	
कण्हं	कृष्णम्	२
कण्हत्तणं	कृष्णत्वम्	३१३
कण्हदा	कृष्णता	३१३
कत्तइ	कृन्तति	३६१
कत्तरी	कत्तरी	१८०
कत्तो	कस्मात्	२२१
कत्थ	कदा	२२५
कदो	कस्मात्	२२१
कम्भं (?)	करिष्यति (?)	३६५
कम्मि	कदा	२२५
कम्मो	कर्म	२४२
कम्मंघो	कवन्धः	८७
करइ	करोति	३६४
करइं	कृणाति	३६७
करावेइ	कारयति	४०२
करिसइ	कर्षति	३६८
करेणु	करेणुः	१५१

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
करस	कस्य	२२२
करिस	कस्मिन्	२२४
करिसि	कदा	२२५
कसइ	कृषति	३८६
कलुणं	करणं	२००
कलंबो	कदम्बः	८३
कहावणो	कार्पाषणः	१२४
कहि	कस्मिन्	२२४
कहि	कदा	२२५
का	कस्मात्	२२१
काअव्यं	कार्त्स्न्यम्	४१६
काआ	का	२८४
काइ	का	२८५
काइं	कान्ति	२८७
काउं	कर्त्तुम्	४१६
काऊण	कृत्वा	४१६
काए	का	२८५
काडु	कस्मात्	२२१
काणं	केषां	२२३
कारेइ	कारयति	४०२
कालाअसं	कालायसं	२१०
कालासं	कालायसं	२१०
कास	कस्य	२२२
कासइ	कासते	३५१
कासुत्तो	केभ्यः	२२१
काहि	कस्मात्	२२१
काहितो	केभ्यः	२२१
काहीअ	करिष्यति (?)	३६५
काहे	कदा	२२५
काहं	कर्त्तास्मि	३६५
किच्चा	कृत्या	१६५
कित्ती	कीर्त्तिः	१७६
किणइ	क्रीणाति	३६६
किणवेइ	क्राययति	४०२
किणेइ	क्राययति	४०२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
किरिआ	क्रिया	१७१	खमा	क्षमा	१६६
किलिट्टं	विलिष्टं	२०८	खमा	क्षमा	१७२
किलित्तं	वल्लुप्तं	१६१	खहिइ	खादिता	३३६
किवा	कृपा	१६५	खाइ	खादति	३३६
किसणो	कृष्णः (भगवति)	१३३	खाउ	खादतु	३३६
किसरा	कृशरा	१६५	खाणू	स्थाणुः	१५१
किस्सा	कस्याः	२८५	खादीअ	अखादीत्	३३६
कि	किम्	२८७	खादीअं	अखादीत्	३३६
की	का	१७४, २८४	खाहिइ	खादिष्यति	३३६
कीअ	कस्याः	२८५	खाहीअ	खखाद	३३६
कीआ	कस्याः	२८५	खिणइ	क्षिणोति	३६३
कीई	कस्याः	२८५	खुजो	कुञ्जः	६३
कीए	कस्याः	२८५	खुप्पइ	सज्जति	३६०
कीरइ	क्रियते	४०७	खोडओ	स्फोटकः	१११
कीसे	कस्याः	२८५	खंभो	स्तम्भः	११०
कुवखेअओ	कौक्षेयकः	७६	ग		
कुच्छी	कुक्षिः	१७६	गउरवं	गौरवं	१६७
कुणइ	करोति	३६४	गगरो	गद्गवः	८४
कुणावेइ	कारयति	४०२	गच्छं	गन्तास्मि	३६८
कुणेइ	कारयति	४०२	गजावेइ	गाजयति	४०२
के	के	२१६	गडो	गर्लः	११७
केढवो	कैटभः	६०	गघइ	गृध्यति	३८५
केरिसो	कीदृशः	५४	गविभणो	गर्भितः	८०
केलासो	कैलासः	६६	गविभणं	गर्भितं	१६७
केवट्टो	कैवर्त्तः	११५	गम्मइ	गम्यते	४०६
केसि	केषां	२२३	गमइ	गच्छति	३६८
केसु	केषु	२२५	गमावेइ	गमयति	४०२
को	कः	२१६	गमिज्जइ	गम्यते	४०६
कोत्थुहो	कौस्तुभः	१०८	गसिरो	गन्ता	४१७
कोसलो	कोशलः	७५	गमोअइ	गम्यते	४०६
कंदोट्टो	कमलं	२१५	गरुअं	गुरु	२१७
	ख		गरुई	गुर्धो	१७६
खगो	खङ्गः	३७	गहवई	गृहपतिः	१४५, २१२
खणइ	क्षणोति	३६३	गाअइ	गायति	३६१
खणो	क्षणः	११८	गाइ	गायति	३६१

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
गाजेइ	गाजयति	४०२
गामेइ	गमयति	४०२
गारवं	गौरवं	१६७
गाहइ	गाहते	३५३
गाहिज्जइ	गृह्यते	४०६
गिढ्ठी	गृष्टिः	१७५
गिरा	गीः	२८४
गुणवत्तो	गुणवान्	३१४
गेण्हइ	गृह्णाति	४००
गेण्हज्जइ	गृह्यते	४०६
गोरवं	गौरवं	१६७
गोला	गोदावरी	२१५
	घ	
घण्णइ	घृणोति	३६३
घणा	घृणा	१६५
घरं	गृहं	२१२
घेअघं	ग्रहीतव्यम्	४१६
घेऊण	गृहीत्वा	४१६
घेउं	ग्रहीतुम्	४१६
घोलइ	घूर्णति	३४८, ३६१
घोलए	घूर्णति	३४८
घोलेइ	घूर्णयति	४०२
घोलावेइ	घूर्णयति	४०२
	च	
चअइ	शक्नोति	३८८
चअ्रावेइ	शक्नोति	४०२
चइत्तो	चैत्रः	७१२
चउत्थी	चतुर्थी	१७८
चउइही	चतुर्दशी	१७८
चउण्हं	चतुर्णा	२१८
चऊसु	चतुर्षु	२१८
चउसुत्तो	चतुर्भ्यः	२१८
चऊर्हि	चतुर्भिः	२१८
चउर्हितो	चतुर्भ्यः	२१८

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
चत्तारि	चत्वारः	२१८
चत्तारि	चतुरः	२१८
चत्तारि	चतस्रः	२८४
चत्तारो	चत्वारः	२१८
चत्तारो	चतुरः	२१८
चत्तारो	चतस्रः	२८४
चन्दिमा	चन्द्रिका	१६७
चम्मो	चर्म	२४२
चलभइ	चलति	३५६
चलइ	चलति	३५६
चलणो	चरणः	६०
चल्लावेइ	चलयति	४०२
चलावेइ	चलयति	४०२
चल्लेइ	चलयति	४०२
चाउलिअं	चातुर्थं	२१५
चाएइ	शक्नोति	४०२
चालेइ	चलयति	४६२
चिणइ	चिनोति	३८६
चिण्णावेइ	चिनोति	४०२
चिण्णेइ	चिनोति	४०२
चितावेइ	चिन्तयति	४०२
चितेइ	चिन्त्यति	४०२
चिन्धं	चिह्नं	२०५
चिलादो	किरातः	६२
चिहुरो	चिकुरः	७८
चुरावेइ	चोरयति	४०२
चुरेइ	चोरयति	४०२
चोत्थी	चतुर्थी	१७८
चोइही	चतुर्दशी	१७८
चोरिअं	चौर्यं	२०२
	छ	
छत्तवण्णो	सप्तपर्णः	६६
छ्ठी	षष्ठी	१८०
छणो	क्षणः	११८
छमा	क्षमा	१६६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
छस्मुहो	षण्मुखः	६६
छायागामो	छायाग्रामः	१३१
छवग्रो	शवकः	६६
छाहा	छाया	१६८, १७४
छाहागामो	छायाग्रामः	१३१
छाही	छाया	१७४
छिदइ	छिनत्ति	३६३
छीरं	क्षीरं	२०४
छुढो	क्षुब्धः	११८
छुणा	क्षुणा	१६६
	ज	
जअ्रमाणा	यजमाना	४१६
जअ्रमाणी	यजमाना	४१६
जअ्रमाणो	यजमानः	४१८
जउणः	यमुना	१६६
जढरं	जठरं	१६६
जणो	यज्ञः	१२७
जण्ह	जह्नुः	१५०
जणइ	जायते	३८१
जम्मो	जन्म	२४२
जसो	यशः	२८२
जहिट्टिलो	युधिष्ठिरः	६०
जा	या	२८५
जा	या	२८५
जाउ	याः	२८५
जाइ	यस्याः	२८५
जाइं	यानि	२८७
जाए	यस्याः	२८५
जाओ	याः	२८५
जाणइ	जानाति	३६८
जाणिज्जइ	ज्ञायते	४०८
जाणीअइ	ज्ञायते	४०८
जामाआ	जामाता	१५५
जामाआरो	जामातारः	१५५
जिण्णइ	जयति	३५०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
जिणिज्जइ	जीयते	४०४
जिण्णीअ	जिगाथ	३५०
जिण्णीअइ	जीयते	४०४
जिञ्जर	जीयते	४०४
जिस्सा	यस्याः	२८५
जी	जा	१७५
जी	या	२८५
जीअ	यस्याः	२८५
जीआ	ज्या	१७३
जीआ	यस्याः	२८५
जीइ	यस्याः	२८५
जीए	यस्याः	२८५
जीसे	यस्याः	२८५
जीहा	जिह्वा	१६५
जुउच्छा	जुगुप्सा	१६६
जुगुच्छा	जुगुप्सा	१६६
जुज्भइ	युध्यते	३८३
जुवा, जुवाणो	युवा	२४१
जो	यः	२४६
जोगो	योग्यः	४०
जोव्वणं	यौवनम्	१६६
जं	यत्	२८७
जंपइ	जल्पति	३४७
जंपावेइ	जल्पयति	४०२
जंपेइ	जल्पयति	४०२
जंभाअइ	जृम्भते	३४६
जंभाअहिइ	जृम्भता	३४६
जंभाअहिए	जृम्भता	३४६
जंभाअए	जृम्भते	३४६
जंभाएइ	जृम्भते	३४६
जंभाएए	जृम्भते	३४६
जंभाएहिए	जृम्भता	३४६
जंभाएहिइ	जृम्भता	३४६
	भ	
भाअउ	ध्यायतु	३६१
भाअइ	ध्यायति	३६१

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
भाअहिइ	ध्याता	३६१	णाराअणा	नारायणात्	२०
भाइ	ध्यायति	३६१	णाराअणाडु	नारायणात्	२०
भाइअं	दध्यौ	३६१	णाराअणादो	नारायणात्	२०
भाइअं	अध्यासीत्	३६१	णाराअणाणं	नारायणेभ्यः	१६
भाइअं	अध्यासीत्	३६१	णाराअणाणं	नारायणानां	१६
भाउ	ध्यायतु	३६१	णाराअणासुत्तो	नारायणेभ्यः	२१
भाहीअ	दध्यौ	३६१	णाराअणाहि	नारायणात्	२०
भाहिइ	ध्याता	३६१	णाराअणाहिती	नारायणेभ्यः	२१
भिज्जइ	क्षयति	३४०	णाराअणे	नारायणान्	१५
भिज्जए	क्षयति	३४०	णाराअणे	नारायणी	१४
भूरवेइ	क्रुध्यति	४०२	णारायणे	नारायणे	२३
भूरइ	क्रुध्यति	३८५	णाराअणेण	नारायणेन	१६
भूरैइ	क्रुध्यति	४०२	णाराअणेसु	नारायणेषु	२४
	ठ		णाराअणेहि	नारायणैः	१७
ठाअइ	तिष्ठति	३६२	णाराअणी	नारायणः	१०
ठाइ	तिष्ठति	३६३	णाहलो	लाहलः	६८
	ड		णांगलो	लाङ्गलः	६८
डहुं	दष्टं	४१३	णिअक्कइ	पश्यति	३६८
डडुं	दग्धं	४१३	णिअक्क [यकी?]अ दद्रष्ट		३६८
डसणो	दशनः	६४	णिडालं	ललाटं	२१५
डोला	दोला	१६८	णिदालू	निद्रावान्	३१४
डंडो	दण्डः	६४	णिप्फंदो	निस्फन्दः	१२२
	ण		णिम्माणइ	निभिमीते	३७७
णहाओ	स्नातः	११६	णिवत्तो	निवर्त्तः	११६
णइसोत्तो	नदीस्रोतः	१	णिसढो	निषधः	६२
णच्चइ	नृत्यति	३७६	णिस्तासो	निःश्वासः	१३२
णच्चावेइ	नर्त्तयति	४०२	णिसा	निशा	१६८
णच्चेइ	नर्त्तयति	४०२	णिहियो	निहितः	१३२
णज्जइ	ज्ञायते	४०८	णिहितो	निहितः	१३२
णव्वइ	ज्ञायते	४०८	णिहसो	निकषः	७८
णाराअणम्मि	नारायणे	१४, २३	णीसासो	निःश्वासः	१३२
णाराअणत्स	नारायणाय	१६	णे	अस्मान्	२६६
णाराअणत्स	नारायणस्य	१४, २१	णेडरं	तूपुरं	१६०
णाराअणा	नारायणाः	१४	णेद्दा	निद्रा	१६४
णाराअणा	नारायणान्	१५	णेद्दा	निद्रा	१६४

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
णेहो	स्नेहः	३८	तारेड	शक्नोति	४०२
णोभलिआ	नवफलिका	१६४	तालवेण्ठअं	तालवृत्तकं	२०७
णोमल्लिआ	नवमल्लिका	१६४	तास	तस्य	२४४
णोल्लइ	नुदति	३८६	तासुत्तो	तेभ्यः	२४४
णोहलो	दोहदः	८३, ६७	ताहि	तस्मात्	२४४
त्थ	स्थ	३७१	तिण्हं	तीक्ष्णं	२०४
तइ	त्वया	२५५	तिणिण	त्रयः	१४६
तइ	त्वयि	२६३	ती	ता	१७४
तइआ	तदा	२४६	तीण्हं	त्रयाणाम्	१५०
तइणा	तेन	२४३	तीरइ	शक्नोति	३८८
तइत्तो	त्वत्	२५६	तीरावेइ	शक्नोति	४०२
तए	त्वया	२५५	तीरेइ	शक्नोती	४०२
तए	त्वयि	२६३	तीसु	त्रिषु	१५०
तओ	तस्मात्	२४४	तीसुत्तो	त्रिभ्यः	१५०
तण्णइ	तनोति	३६३	तीहि	त्रिभिः	१५०
तण्णइ	तृणोति	३६३	तीहितो	त्रिभ्यः	१५०
तणुई	तन्वी	१८१	तुअइ	तुदति	३८८
तस्थ	तस्मिन्	२४६	तुए	त्वया	२५५
तत्तो	त्वत्	२५६	तुए	त्वयि	२६३
तत्तो	तस्मात्	२४४	तुज्भ	तव	२६१
तदो	तस्मात्	२४४	तुज्भाणं	युष्माकम्	२६२
तम्मि	तस्मिन्	२४६	तुज्भे	यूयम्,	२५२
तरइ	शक्नोति	३८८		युष्मान्	२५४
तरावेइ	शक्नोति	४०२	तुज्भेसु	युष्मासु	२६४
तलवेण्ठअं	तालवृत्तकं	२०७	तुज्भेहि	युष्माभिः	२५८
तवो	तपः	२८२	तुण्हिओ	तूष्णीकः	१३२
तस्स	तस्य	२४५	तुण्हिक्को	तूष्णीकः	१३२
तस्सि	तस्मिन्	२४६	तुब्भ	तव	२६१
तहि	तस्मिन्	२४६	तुब्भेहि	युष्माभिः	२५८
तहे	तदा	२४६	तुम्ह	तव	२६१
ता	तान्	२४३	तुम्हाणं	युष्माकम्	२६२
ताइ	तानि	२८७	तुम्हासुत्तो	युष्मत्	२६०
ताणं	तेषां	२४६	तुम्हाहितो	युष्मत्	२६०
ताडु	तस्मात्	२४४	तुम्हे	यूयं	२५२
तादो	तस्मात्	२४४	तुम्हे	युष्मान्	२५४

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
तुम्हेसु	युष्मासु	२६४
तुम्हेहि	युष्माभिः	२५८
तुमए	त्वया	२५५
तुमए	त्वयि	२६२
तुमस्मि	त्वयि	२६३
तुमादु	त्वत्	२५६
तुमादो	त्वत्	२५६
तुमाहि	त्वत्	२५६
तुमो	तव	२६१
तुमं	त्वाम्	२५३
तुमं	त्वं	२५१
तुरिअं	त्वरितं	४१२
तुवरावेइ	त्वरयति	४०२
तुवरेइ	त्वरयति	४०२
तुह	तव	२६१
तूरं	तूर्यं	१६६
तूसइ	तुष्यति	३८४
ते	ते	२४३
तेण	तेन	२४३
तेरहो	त्रयोदशः	१०१
तेलोवकं	त्रैलोक्यं	१६१
तेसु	तेषु	२४६
तेसि	तेषां	२४६
तेहि	तैः	२४३
तं	त्वाम्	२५३
तं	तम्	२४३
तं	त्वं	२५१
तंबो	स्तम्बः	१०६
तवं	ताम्रं	२०८
	थ	
थाणू	स्थाणुः (हरवाचके)	१५१
थिम्पइ	तृपति	३६१
	द	
द्रुओ	द्रुतः	१०४
दइच्चो	द्वैतः	७१

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
दइवं	देवं	१६३
दच्चिहिइ	दृष्टा	३६८
दसमुहो	दशमुखः	१०२
दसरहो	दशरथः	१०२
दहमूहो	दशमुखः	१०२
दहरहो	दशरथः	१०२
दाइ	ददाति	३७७
दाडिमं	दाडिमं	१६८
दालिमं	दाडिमं	१६८
दाहं	दातास्मि	३७७
दिअरो	देवरः	६८
दिअसो	दिवसः	१०३
दिअहो	दिवसः	१०३
दिआ	द्यौः	२८३
दिड्ढी	दृष्टिः	१७५
दिणं	दत्तं	४१३
दिद्धी	दुहिता	२१५
दिवइ	दीव्यति	३७६
दिसा	दिक्	२८६
दुअत्तं	दुकूलं	१८६
दुऊलं	दुकूलं	१८६
दुओ	द्रुतः	१०४
दुखिअओ	दुःखितः	१३२
दुडभइ	दुह्यते	४०७
दुवे	द्वौ	१४६
दुहिअओ	दुःखितः	१३२
दुमइ	द्वयते	३८१
दुमए	द्वयते	३८१
दुमेइ	द्वयते	३८१
दुमेए	द्वयते	३८१
दुसइ	दुष्यति	३८४
देअरो	देवरः	६८
देवं	देवं	१६३
दोइ	द्यति	३८१
दोण्हं	द्वयोः	१४८
दोणि	द्वौ	१४६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
दोसु	द्वयोः	१४८
दोसुत्तो	द्वाभ्याम्	१४७
दोह	द्वाभ्याम्	१४७
दोहितो	द्वाभ्याम्	१४७
	घ	
घणमोहरइ	घनमाहरति	३
घणालो	घनवान्	३१४
घणं	घनम्	२१२
घसइ	घृष्णोति	३८८
घाइ	घावति, घावते	३५०
घाड	घावतां, घावतु	३५०
घाहिइ	घाविता	३५०
घाहीअ	दधावे, दधाव	३५०
धीरं	धैर्यं	१६६
धुणइ	धुनाति	३६७
धुणिज्जइ	धूयते	४०७
धुणीअइ	धूयते	४०७
धुत्तो	धूर्त्तः	११६
धुरा	धूः	२८४
धुवइ	धूयते	४०७
	न	
नई	नदी	१८१
नाराअणं	नारायणं	१५
	प	
प्रतिभवइ	प्रतिभवति	३३८
पअट्टा	प्रकोष्ठः	७२
पई	पति	१५०
पईअ	जघ्नी	३६२
पउरो	पौरः	७४
पच्छत्तो	पाश्चात्यः	१२५
पच्छिमा	पश्चिमा	१६६
पज्जुणो	प्रद्युम्नः	१२७
पट्टणं	पत्तनं	२०४
पडइ	पतति	३५७
पडाअा	पताका	१६७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
पडिभवइ	प्रतिभवति	३३८
पडिसरो	प्रतिसरः	३३
पढमो	प्रथमः	६२
पणहा	प्रश्नः	१५६
पण्ही	प्रश्नः	१७४
पण्हो	प्रश्नः	१२०
पदिवत्ती	प्रतिपत्ति	१७५
पभवइ	प्रभवति	३३८
पभवए	प्रभवति	३३८
पभवेइ	प्रभवति	३३८
पभवेए	प्रभवति	३३७
पमिलइ	प्रमीलति	३४६
पमिलए	प्रमीलति	३४६
पमिल्लावइ	प्रमीलयति	४०२
पमिल्लेइ	प्रमीलति,	३४६
	प्रमीलयति	४०२
पमीलइ	प्रमीलति	३४६
पमीलए	प्रमीलति	३४६
पमीलेइ	प्रमीलति	३४६
पमीलेए	प्रमीलति	३४६
पमील्लेए	प्रमीलति	३४६
परइ	पिपति	३७६
परइ	प्रियते	३६१
परइ	पृणाति	३६७
पल्हादो	प्रह्लादः	१०८
पल्लत्थं	पर्यस्तं	२०३
पल्लाणं	पर्याणं	२०३
पवट्टो	प्रकोष्ठः	७२
पाअइ	जिघ्रति	३६२
पाइ	जिघ्रति	३६२
पाइअं	जघ्नी	३६२
पाउसो	प्रावद्	२८०
पारावेइ	पारयति	४०२
पारेइ	पारयति	४०२
पालइ	पद्यते	३८२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
पाहीअ	जघ्नो	१६२
पिअरो	पितरः	२५५
पिअ्रा	पिता	१५५
पिअ्रो ति हसइ	प्रिय इति हसति	३१२
पिक्को	पक्वः	३५
पिसइ	पिशाति	३६१
पीअलं	पीतं	३१५
पीअं	पीतं	२१२, ३१५
पुट्टी	पृष्ठं	१५१
पुट्टं	पुष्टं	२१५
पुप्फं	पृष्पं	२०६
पुरिसो	पुरुषः	६४
पुलअइ	पश्यति	३६८
पुलईअ	दद्रधट	३६८
पुस्सो	पृष्यः	१३२
पुहवी	पृथिवी	१७८
पूसइ	पुष्पाति	३६६
पूसो	पृष्यः	१३२
पेरंतं	पर्यन्तं	१६६
पोक्खरो	पुष्करः	५५
पोत्थओ	पुस्तकः	५७
पोत्तो	पीत्रः	७३
	फ	
फरुसो	परुषः	६३
फलावेइ	पाटयति	४०२
फलिअं	पटितं	४१२
फलिहा	परिखा	१६८
फलिहो	परिघः	६३
फलिहो	स्फटिकः	७८
फालेइ	पाटयति	४०२
फुइइ,		
फुइइ	स्फोटते	३४४
फइी	स्पन्दः	१२२
	व	
वह्मा,		
वह्मापी	वह्मा	२४१

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
वाफो	वाप्यः (ऊष्मा)	[१२३]
वारहो	द्वादशः	१०१
वाहो	वाप्यः (अश्रुणि)	१२३
वीहइ	विभेति	३७६
बुज्झइ	बुध्यते	३८२
बुहइ	मज्जति	३६०
बोरं	ववरं	१८६
बंघइ	वघ्नाति	३६८
	भ	
भअप्पई	बृहस्पतिः	१४५
भइरवो	भैरवः	७१
भखावेइ	भक्षयति	४०२
भत्तारम्मि	भर्त्तरि	१५३
भत्तारस्स	भर्तुः	१५३
भत्तारा	भर्त्तरिः	१५३
भत्ताराणं	भर्तृणां	१५३
भत्तारेण	भर्ता	१५३
भत्तारेषु	भर्तृषु	१५३
भत्तारेहि	भर्तृभिः	१५३
भत्तारो	भर्त्ता	१५२
भत्तुणा	भर्त्रा	१५३
भत्तुणो	भर्तृन्	१५३
भत्तुस्स	भर्तुः	१५३
भत्तुत्तु	भर्तृषु	१५३
भत्तुओ	भर्त्तारः	१५३
भत्तो	भवतः	३६
भरइ	स्मरति	३६४
भरइ	विभति	३७६
भरहो	भरतः	८१
भरावेइ	स्मारयति	४०२
भाअरो	भ्रातारः	१५५
भाइ	विभेति	३७६
भाओ	भ्राता	१५५
भाखेइ	भक्षयति	४०२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
भारेइ	स्मारयति	४०२	ममादो	मत्	२७३
भिसिणी	विसिनी	१८०	ममाहि	मत्	२७३
भिंगारो	भृङ्गारो	४८	ममं	माम्	२६८
भिंगो	भृङ्गः	४८	मरइ	म्रियते	३६१
भिडिवालो	भिन्दिपालः	१२८	मरइ	मृणाति	३६७
भिदइ	भिनक्ति	३६३	मरिसइ	मर्षति	३५४
भे	युष्माकम्	२६२	मलइ	मृद्नाति	३६६
भोअ्रव्वं	भोवतव्यं	४१५	मलिणं	मलिनं	२११
भोउं	भोवतुं	४१५	मसाणं	इमशानं	२०१
भोऊण	भुवत्वा	४१५	मह	मम	२७५
	म		महुअं	मधूकं	१८८
भ्हि	अस्मि	३७२	महुं	मधु	२१७
भ्हु	म्ह	३७२	माआ	माता	१८२
भ्हो	स्मः	३७२	माइ	मिमोते	३७७
मइ	मयि	२७७	माणइत्तो	मानवान्	३१४
मइ	मया	२७१	माला	माला	१६३
मइत्तो	मत्	२७३	मालाइल्लो	मालावान्	३१४
मइलं	मलिनं	२११	मांसं	मांसं	६४
मऊरो	मयूरः	४२	मिअंको	मृगाङ्कः	४८
मऊहो	मयूखः	४२	मिच्छा	मिथ्या	१६६
मए	मया	२७१	मुइङ्गो	मृदङ्गः	२६
मए	मयि	२७७	मुच्छा	मूच्छा	१६६
मच्छिआ	मक्षिका	१६६	मुञ्जाअणो	मौञ्जायनः	७६
मऊभ	मम	२७५	मुणइ	जानाति	३६८
मऊभणो	मध्याह्न	१०७	मुणिज्जइ	ज्ञायते	४०८
मऊभणो	अस्माकम्	२७६	मुणीअइ	ज्ञायते	४०८
मणणइ	मनोति	३६३	मुत्ती	मूर्तिः	१७६
मणंसिणि	मनस्विनीम्	१७७	मुद्धो	मुग्धः	३७
मणंसिणी	मनस्विनी	१७६	मुहलो	मुखरः	६०
मत्तो	मत्	२७३	मे	मया	२७०
मद्ध	मम	२७५	मे	मम	२७५
ममं	मम	२७५	मोत्ता	मुक्ता	१६५
ममम्मि	मयि	२७७	मोरो	मयूरः	४२
ममाइ	मया	२७०	मोहो	मयूखः	४२
ममादुं	मत्	२७३	मंडूरो	मण्डूकः	२१७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
संसू	इमश्रुः	२१७
संसं	मांसं	६
	र	
रश्रणं	रत्नम्	२०८
रश्रणम्	रत्नमुट्	२८०
रच्छा	रक्षा	१६६
रत्तं	रक्तं	४१३
रण्णा	राज्ञा	२३६
रण्णाइं	श्ररण्यानि	१८५
रण्णेण	श्ररण्येन	१८५
रण्णो	राज्ञः	२३७
रण्णं	श्ररण्यं	१८४
रमणिज्जा	रमणीया	१६८
रमणिज्जो	रमणीयः	८६
रम्मइ	रम्यते	४०५
रमिज्जइ	रम्यते	४०५
रमीश्रइ	रम्यते	४०५
राश्रमि	रागे	२६
राश्रम्मि	राज्ञि	२३८
राश्रस्स	रागाय,	
	रागस्य	२६
राश्रा	राजा	२३०
राश्रा	राज्ञः	२३७
राश्रा	रागाः	२६
	रागान्	२६
	रागात्	२६
राश्राणो	राज्ञः	२३४
	राजानः	२३२
राश्राणं	राज्ञां	२३८
राश्राणं	रागेभ्यः,	२६
	रागाणाम्	२६
राश्राडु	रागात्	२६
राश्राडु	राज्ञः	२३७
राश्रादो	रागात्	२६
राश्रादो	राज्ञः	२३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
राश्रासुत्तो	रागेभ्यः	२६
राश्रासुतो	राजभ्यः	२३७
राश्राहि	रागात्	२६
राश्राहि	राज्ञः	२२७
राश्राहितो	रागेभ्यः	२६
राश्राहितो	राजभ्यः	२३७
राइणा	राज्ञा	२३७
राइणो	राज्ञः	२३७
राए	रागान्,	२६
	रागाः,	२६
	रागे	२६
राए	राज्ञः,	२३४
	राज्ञि	२३८
राएण	रागेण	२६
राएसु	रागेषु	२६
राएसु	राजसु	२३८
राएहि	रागैः	२६
राएहि	राजभिः	२३७
राश्रो	रागः	२६
राश्रं	राजानं	२३३
राश्रं	रागम्	२६
रामो	रामः	१
राहा	राधा	१६८
रिच्छो	ऋक्षः	११८
रिणं	ऋणं	१६०
रिद्धो	ऋद्धः	६५
रुक्खो	वृक्षः	६७
रुच्छं	रुदिय्यामि	३७५
रुद्धं	रुद्धं	४१३
रुणं	रुदितं	४१३
रुप्पिणी	रुक्मिणी	१८१
रुम्भावेइ	रुन्धयति	४०२
रुम्भेइ	रुन्धयति	३०२
रुम्मइ	रुणद्धि	३६२
रुवइ	रोदिति	३७५
रुवावेइ	रोयदति	४०२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
रुवेइ	रोयदति	४०२	धच्चेइ	व्रजति	३४१
रुंघइ	रुणद्धि	३६२	वच्छो	वृक्ष,	६७
रुंघावेइ	रुन्धयति	४०२	वत्सः	वत्सः	१२५
रुंघेइ	रुन्धयति	४०२	वज्जइ	व्रस्यति	३८०
रुसइ	रुष्यति	३८५	वज्जावेइ	व्रासयति	४०२
रुसावेइ	रोषयति	४०२	वज्जेइ	व्रासयति	४०२
रुसेइ	रोषयति	४०२	वड्ढावेइ	वद्धयति	४०२
	ल		वड्ढेइ	वद्धयति	४०२
लखावेइ	लक्षयति	४०२	वण्णइ	वनोति	३६३
लच्छी	लक्ष्मी	१८०	वत्ता	वार्त्ता	१६६
लट्ठी	यष्टिः	१७६	वत्तिआ	वत्तिका	१६६
लडालं	ललाटं	२१५	वदई	वदन्ती	४१६
लहुई	लघ्वी	१८१	वढभइ	उह्यते	४०७
लाखेइ	लक्षयति	४०२	वम्महो	मन्मथः	६६
लिच्छा	लिप्सा	१६६	वरइ	वृणीते	३६८
लिबभइ	लिह्यते	४०७	वरिसइ	वर्षति	३५४
लुद्धओ	लुब्धकः	५७	वरिसावेइ	वर्षयति	४०२
लुण्णइ	लुनाति	३६७	वरिसेइ	वर्षयति	४०२
लुणिज्जइ	लूयते	४०७	वसही	वसतिः	१७५
लुण्णीअइ	लूयते	४०७	वसिट्ठी	वसिष्ठः	३७
लुव्वइ	लूयते	४०७	वहू	वधू	१८१
लोणइ	नुदति	३८६	वाअइ	म्लायति	३५६
लोद्धओ	लुब्धकः	५७	वाआ	वाक्	२८५
	व		वाइ	म्लायति	३५६
वअइ	वक्षित	३७०	वारि	वारि	२१६
वइदेसो	वंदेशः	७१	वारीइं	वारीणि	२१६
वइवेहो	वंदेहः	७१	विअइ	विनक्षित	३६३
वइरं	वंरं	१६१	विअड्डी	वितर्दिः	१७६
वइसाहो	वंशाखः	७१	विअणा	वेदना	१६५
वइसिओ	वंशिकः	७१	विआरुल्लं	विकारवत्	३१४
वइसंपाअणो	वंशम्पायनः	७१	विइच्छा	विवत्सा	१६६
वच्चइ	व्रजति	३४१	विक्किणइ	विक्रीणाति	३६७
वच्चए	व्रजति	३४१	विककेइ	विक्रीणाति	३६७
वच्चहिइ	व्रजिता	३४१	विच्छड्डी	विच्छदिः	१७६
वच्चहिए	व्रजिता	३४१	विज्जा	विद्या	१६६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
विज्जुली	विद्युत्	३१५
विज्जू	विद्युत्	२८६, ३१५
विञ्छुग्री	वृश्चिकः	४८
विडवो	विरपः	८८
वितिण्हो	वितृणः	४६
विम्हग्री	विस्मयः	११६
विलभ्रन्तो	वलपन्	३११
विसइ	प्रसते	३५२
विस्तवो	विश्वपाः	१३७
विसावेइ	प्राप्तयति	४०२
विस्सामो	विश्रामः	१३२
विसूरइ	खिनत्ति,	३६३
	विदति	३६१
विसेइ	प्राप्तयति	४०२
विस्तो	विश्वः	१३६
विहलो	विह्वलः	१२६
विभलो	विह्वलः	१२६
वीरिअं	वीर्यं	२०२
वीलइ	वीडयति	३८०
वीलावेइ	वीडयति	४०२
वीलेइ	वीडयति	४०२
वीसामो	विश्रामः	१३२
वुंदावणं	वृन्दावनं	१६०
वेअइ	वेद	३७०
वेअइ	वेत्ति	३७०
वेअणा	वेदना	१६५
वेअवं	वेत्तव्यम्	४१५
वेउं	वेत्तं	४१५
वेऊण	विदित्वा	४१५
वेच्छं	वेत्स्यामि	३७०
वेडइ	वेष्टते	३४२
वेडए	वेष्टते	३४२
वेडेइ	वेष्टते	३४२
वेडेए	वेष्टते	३४२
वेण्हू	विष्णुः	१५०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
वेण्हो	विश्वः	१२१
वल्ली	वल्ली	१७७
वेवमाना	वेपमाना	१७४
वेवमाणी	वेपमाना	१७४
वो	युष्मान्	२५४
वो	युष्माकम्	२६२
वोच्छं	वक्ष्यामि	३७०
वंकं	वक्रं	५
वंचिअो	वञ्चितः	४
वंदं	वन्दं	२१३
	स	
सअइ	सृजति	३६१
सअडो	शकटं	८६
सइरं	स्वरं	१६१
सक्कइ	शक्नोति	३८७
सक्केइ	शक्नोति	४०२
सक्को	शक्रः	१०
सग्गमो	सद्गमः	३७
सच्चा	सत्या	१६६
सज्जइ	सृज्यते	३८३
सठावेइ	शाठयति	४०२
सडइ	शीयते	३५७
सडा	सटा	१६८
सण्णइ	सनोति	३६३
सण्हं	श्लक्ष्णं	२०४
सणेहो	स्नेहः	३८
सत्तमी	सप्तमी	१८०
सत्तिय	सत्तिय	२१७
सद्दहइ	श्रद्धधाति	३७८
सफं	शफं	२०६
सभरी	शफरी	१७६
सभलो	सफलः	६१
सभलं	सफलं	२००
समिद्धी	समृद्धिः	१७४
समिद्धीआ,		
समिद्धीए	समृद्ध्या	१४२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सरइ	सरति	३६५
सरइ	संसति	३७६
सरइ	शृणाति	३६०
सरावेइ	सारयति	४०२
सरिच्छो	सदृक्षः	११८
सरो	सरः	२८२
सलाहा	इलाघा	१७२
सवहो	ज्ञापथः	८५
सव्वज्जो	सर्वज्ञः	१०५
सव्वस्स	सर्वस्य, सर्वस्मै	१३५
सव्वसि, सव्व-		
म्मि, सव्वत्व	सर्वस्मिन्	१३६
सव्वा	सर्वान्, सर्वस्मात्	१३५
सव्वाणं	सर्वेषाम्, सर्वेभ्यः	१३५
सव्वादु		
सव्वादी		
सव्वाहि	सर्वस्मात्	१३५
सव्वासुत्तो		
सव्वाहितो	सर्वेभ्यः	१३५
सव्वे	सर्वे	१३५
सव्वेण	सर्वेण	१३५
सव्वेसु	सर्वेषु	१३६
सव्वेहि	सर्वैः	१३५
सव्वो	सर्वः	१३४
सव्वं	सर्वं	१३५
सहमाणा,		
सहमाणी	सहमाना	१७४
सहा	सभा	१६८
सहिणो	सखीन्	१५०
सहिं	सखायम्	१५०
सही	सखा	१५०
सहीओ,		
सहीणो	सखायः	१५०
साठेइ	शाठयति	४०२
सारेइ	सारयति	४०२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
साला	शाला	१७३
सि	असि	३७१
सिअालो	शृगालः	४६
सिड्डी	सृष्टिः	१७५
सिडिलो	निथिलः	६२
सिरी	श्रीः	१८१
सिविणो	स्वप्नः	३२
सि	तेपां	२४६
सिगारो	शृंगारः	४८
सिधवं	सैन्धवं	१६४
सीभरो	सीकरः	७६
सीहो	सिंहः	५०
सुअइ	सुनोति	३८५
सुइदी	सुकृतिः	१७५
सुज्जो	सूर्यः	१५१, ११४
सुणइ	शृणोति	३६५
सुणइ	शृणोतु	३६७
सुण्णावेइ	श्रावयति	४०२
सुणिअं	शुश्राव	३६५
सुणिज्जइ	श्रूयते	४०६
सुण्णीअ	शुश्राव	३६५
सुण्णीअइ	श्रूयते	४०६
सुण्णेइ	श्रावयति	४०२
सुणसु	शृणोमि	३६७
सुणमो	शृणमः	३६७
सुणसु	शृणु	३६
सुणह	शृणुत	३६७
सुणंतु	शृण्वन्तु	३६७
सुप्पणहा	सूर्पनखा	१७४
सुप्पणही		
सुमरइ	स्मरति	३६४
सुमरावेइ	स्मारयति	४०२
सुमरेइ		
सुव्वइ	श्रूयते	४०६
सुहं	सुखं	२००

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सुंडो	शोण्डः	७६
सुंदेरं	सौन्दर्यं	१६६
सूइ	सूयते	३८७
सूरो	सूर्यः	११४
सूसइ	शुष्यति	३८४
सूसवेइ	शुष्यति	४०२
सूसेइ		
से	तस्य	२४५
सेज्जस	शय्यायाः	१६२
सेज्जा	शय्याः	१५७
	शय्यायाः	१६१
सेज्जाइ	शय्यायाः	१६२
सेज्जाइ	शय्यया	१६१
सेज्जाइ	शय्यायाम्	१६२
सेज्जाए	शय्यया	१६१
	शय्यायाः	१६२
	शय्यायाम्	१६२
सेज्जाउ	शय्याः	१५७
		१५६
	शय्यायाः	१६२
सेज्जाओ	शय्याः	१५७
		१५६
	शय्यायाः	१६२
सेज्जाणं	शय्यानाम्	१६२
सेज्जाडु		
सेज्जादो	शय्यायाः	१६१
सेज्जाहि		
सेज्जासु	शय्यासु	१६२
सेज्जासुत्तो	शय्याभ्यः	११६
सेज्जाहिता		
सेज्जाहि	शय्याभिः	१६१
सेज्जं	शय्याम्	१५८
सेज्या	शय्या	१५६
सेत्तं	शैत्यं	१६१
सेलो	शैलः	६६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सेव्वा	सेवा	१७०
मेवा		
सो	सः	२४३
सोअमत्तं	सोकुमार्यं	२०३
सोइ	इयति	८१
सोच्छइ	श्रोता	३६६
सोच्छए	"	"
सोच्छहिइ	"	"
सोच्छहिए	"	"
सोच्छिइ	"	"
सोच्छिए	"	"
सोच्छिहिइ	"	"
सोच्छिहिए	"	"
सोच्छेइ	"	"
सोच्छेए	"	"
सोच्छेहिइ	"	"
सोच्छेहिए	"	"
सोच्छेहिंति	श्रोतारः	३६६
सोच्छंति	"	"
सोच्छिंति	"	"
सोच्छंति	"	"
सोच्छंति	"	"
सोच्छसि	श्रोतासि	३६६
सोच्छसे	"	"
सोच्छहिंसि	"	"
सोच्छहिसे	"	"
सोच्छिसि	"	"
सोच्छिसे	"	"
सोच्छिहिंसि	"	"
सोच्छिहिसे	"	"
सोच्छेसि	"	"
सोच्छेसे	"	"
सोच्छेहिंसि	"	"
सोच्छेहिसे	"	"
सोच्छइत्य	श्रोष्यथ	३६६, ३६७
	(बहुवचने)	

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सोच्छह	श्रोष्यथ	२६७
सोच्छहिह	"	"
सोच्छिह	"	"
सोच्छिहिह	"	"
सोच्छेह	"	"
सोच्छेहिह	"	"
सोच्छहित्य	श्रोष्यथ (बहुवचने)	३६७
सोच्छहिह	"	"
सोच्छित्य	"	"
सोच्छिह	"	"
सोच्छिहित्य	"	"
सोच्छिहिह	"	"
सोच्छेह	"	"
सोच्छेहित्य	"	"
सोच्छेहिह	"	"
सोच्छिहिह	श्रोष्यति	३६७
इत्यादि		
सोच्छमि	श्रोतास्मि	३३७
सोच्छस्सामि	"	"
सोच्छस्तं	"	"
सोच्छहामि	"	"
सोच्छहिमि	"	"
सोच्छामि	"	"
सोच्छाहामि	"	"
सोच्छिमि	"	"
सोच्छिस्सामि	"	"
सोच्छिहामि	"	"
सोच्छेमि	"	"
सोच्छेस्सामि	"	"
सोच्छेस्सं	"	"
सोच्छेहामि	"	"
सोच्छेहिमि	"	"
सोच्छं	"	"
सोच्छमो	श्रोतास्मः	३६७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सोच्छस्सामो	श्रोतास्मः	३६७
सोच्छहामो	"	"
सोच्छहित्या	"	"
सोच्छहिमो	"	"
सोच्छामो	"	"
सोच्छाहामो	"	"
सोच्छाहित्या	"	"
सोच्छाहिमो	"	"
सोच्छाहिस्सा	"	"
सोच्छिमो	"	"
सोच्छिस्सामो	"	"
सोच्छिहामो	"	"
सोच्छिहित्या	"	"
सोच्छिहिमो	"	"
सोच्छिहित्या	"	"
सोच्छेमो	"	"
सोच्छेस्सामो	"	"
सोच्छेहामो	"	"
सोच्छेहित्या	"	"
सोच्छेहिमो	"	"
सोच्छेहिस्सा	"	"
सोणहा	स्तुषा	१६६
सोरिअं	शौर्यं	२०२
सोहा	शोभा	१६८
संका	शङ्का	७
संङ्का		
संकतो	संक्रान्तः	१३०
संजदो	संयतः	६२
संभा	संध्या	१६६
संवत्तो	संवर्त्तः	११६
सविल्लइ	संवेष्टते	३४३
संबुदी	संवृत्तिः	१७५
	ह	
हदो	हतः	६३
हम्मइ	हन्ति	३७०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हरिसइ	हर्षति	३५४
हलद्रा	हरिद्रा	१६५
हलद्दा(द्रा)	हरिद्रा	१७४
हलद्दा	हरिद्रा	१६५
हलद्दी	हरिद्रा	१७४
हलिओ	हालिकः	४५
हविधानं	वभूव	३३२
हस्सइ	हस्यते	४०५
हसिज्जइ	हस्यते	४०३
हसिअइ	हस्यते	४०५
हलिओ	हालिकः	४५
हिअयं	हृदयं	१६०
हित्थं	त्रस्तं	४१३
हिरी	हीः	१८१
हीरइ	ह्रियते	४०६
हुअं	भूतं	४१०
हुण्णइ	जुहोति	३७५
हुणिज्जइ	हृयते	४०७
हुण्णीअइ	हृयते	४०७
हुच्चइ	हृयते	४०७
हुच्चंतो	भवन्	४१८
हुवइ	भवति	३१६
हुवइत्य	भविष्यति	३३७
हुवइत्या	भवथ, भवयः	३२४
हुवउ	भवतु	३३७
	वभूव	३३१
हुवए	भवति	३१६
हुवज्ज	भवति	३२२
	भवन्ति	३२३
	भवतः	३२३
हुवज्जा	भवति	३२२
हुवज्जा	भवन्ति	३२३
	भवतः	३२३
हुवम	भवामः	३२७
	भवावः	३२७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हुवमि	भवामि	३२६
हुवमु	वभूव	३३२
	भवामः	३२७
	भवावः	३२७
	भविष्यामि	३३६
	भवानि	३३७
हुवसो	भविष्यामः	३३७
	भवाम	३३७
	भवामः	३३७
	भवावः	३३७
	वभूवमि	३३२
हुवस्साम	भविष्यामः	३३७
हुवस्सामि	भविष्यामि	३३६-३३७
हुवस्सामु	भविष्यामः	३३७
हुवस्सामो	भविष्यामः	३३७
हुवसि	भवसि	३२४
हुवसु	वभूवथि	३३२
	भवितासि	३३४
	भव	३३७
हुवसे	भवसि	३२४
हुवस्सं	भविष्यामि	३३७
हुवह	वभूव	३३२
	भवथः	३२४
	भवथ	३३४
	भवत	३३७
	भवितास्य	३३४
हुवहाम	भविष्यामः	३३७
हुवहामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवहामु	भविष्यामः	३३७
हुवहामो	भविष्यामः	३३७
हुवहिइ	भविता	३३३
हुवहिए	भविष्यति	३३७
हुवहित्या	भविष्यामः	३३७
हुवहित्या	भविष्यामः	३३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हुवहिम	भविष्यामः	३३७	हुवाहिमि	भविष्यामि	३३६
हुवहिमि	भविष्यामि	३३६			३३७
		३३७	हुवाहिमु	भविष्याम	३३७
हुवहिमु	भविष्यामः	३३७	हुवाहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवहिमो	भविष्यामः	३३७	हुवाहिस्ता	भवितास्मः	३३७
हुवहिय	भविष्यति	३३७		भविष्यामः	३३७
हुवहिस्ता	भवितास्मः	३३७	हुविश्रं	श्रभूत्	३३७
	भविष्यामः			बभूव	३२६
हुवहिसि	भविष्यसि	३३७	हुविज्जइ	भूयते	४०३
	भवितासि	३३४	हुविस्था	भविष्यथ	३३७
हुवहिसे	भविष्यसि	३३७	हुविस्था	भावः, भवथ	३२४
	भवितासि	३३४	हुविम	भवामः, भवावः	३२७
हुवहिति	भवितारः	३३४	हुविमु		
	भविष्यन्ति	३३७	हुविमो	भविष्यामः भवाम	३३७
हुवहिह	भविष्यथ	३३७		भवामः, भावः	३२७
	भवितास्थ	३३४	हुविस्साम	भविष्यामः	३३७
हुवाम	भवामः	३२७	हुविस्सामु	भविष्यामः	३३७
	भवावः		हुविस्सामो	भविष्यामः	३३७
हुवामि	भवामि	३२६	हुविहाम	भविष्यामः	३३७
हुवामु	भविष्यामि	३३६	हुविहामु	भविष्यामः	३३७
	भवानि	३३७	हुविहामो	भविष्यामः	३३७
	भवामः			भविष्याम	३३७
	भवावः	३२७	हुविहित्या	भविष्यामः	३३७
हुवामो	भवामः	३२६		भविष्याम	३३७
	भवावः	३२७	हुविहित्ति	भवितारः	३३४
	भवाम	३२७	हुविहिम	भविष्यामः	३३७
	भविष्यामः	३३७	हुविहिमु	भविष्यामः	३३७
हुवावेइ	भावयति	४०२	हुविहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवाहाम	भविष्यामः	३३७		भविष्याम	३३७
हुवाहामि	भविष्यामि	३३७	हुविहिस्ता	भवितास्मः	३३७
		३३६		भविष्यामः	३३७
हुवाहामु	भविष्यामः	३३७	हुवीश्र	बभूव	३२६
हुवाहामो	भविष्यामः	३३७		श्रभूत्	३३७
हुवाहित्या	भविष्यामः	३३७	हुवीश्रइ	भूयते	४०३
हुवाहिम	भविष्यामः	३३७	हुवेइ	भवति	३१६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
	भावयति	४०२
हुवेड	भवतु	३३७
	वभूव	३३१
हुवेए	भवति	३१६
हुवेज्ज	भवति	३२२
हुवेज्जा	भवन्ति	३२३
	भवतः	३२३
	भवति	३२२
हुवेसः	भवामः	३२७
	भवावः	३२७
हुवेमि	भवामि	३२६
हुवेमु	वभूव	३३२
	भवामः	३२७
	भवावः	३२७
	भवानि	३३७
	भविष्यामि	३३६
हुवेमो	भविष्यामः	३३७
	भवाम	३३७
	भवामः, भवावः	३२७
	वभूविस	३३२
हुवेस्ताम	भविष्यामः	३३७
हुवेस्तामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवेस्तामु	भविष्यामः	३३७
हुवेस्तामो	भविष्यामः	३३७
हुवेसि	भवसि	३२४
हुवेसु	भवितासि	३३४
	वभूविय	३३२
	भव	३३७
हुवेसे	भवसि	३२४
हुवेस्तं	भविष्यामि	३३७
		३३६
हुवेह	वभूव	३३२
	भवयः भवय	३२४
	भवत	३३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
	भवितास्य	३३४
हुवेहाम	भविष्यामः	३३७
हुवेहामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवेहामु	भविष्यामः	३३७
हुवेहामो	भविष्यामः	३३७
हुवेहिइ	भविता	३३३
	भविष्यति	३३७
हुवेहिए	भविष्यति	३३७
हुवेहित्या	भविष्याम	३३७
हुवेहिम	भविष्यामः	३३७
हुवेहिमि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवेहिमु	भविष्यामः	३३७
हुवेहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवेहिस्ता	भवितास्मः	३३७
	भविष्यामः	३३७
हुवेहित्ति	भविष्यसि	३३७
	भवितासि	३३४
हुवेहित्से	भवितासि	३३४
	भविष्यसि	३३७
हुवेहिह	भविष्यथ	३३७
	भवितास्थ	३३४
हुवेहित्ति	भविष्यन्ति	३३७
	भवितारः	३३४
हुवेति	भवन्ति, भवतः	३२३
हुवेतु	भवन्तु	३३७
	वभूवुः	३३२
	भवितारः	३३४
हुवन्ति	भवतः, भवन्ति	३२३
हुवन्तु	भवितारः	३२४
	भवन्तु	३३७
	वभूवुः	३३२
हे अग्नि	हे अग्ने	१४०
हे पाराश्रण	हे नारायण	२६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हे भक्तारा	हे भक्तः	१५३
हे मणसिणि	हे मनस्विनि	१७७
हे रण्य	हे श्रण्य	१८५
हे राश्र	हे राजन् !	२३३
हे राश्र		
हे सेण्जे	हे शय्ये	१६२
होश्रावेइ	भावयति	४०२
होइ	भवति	३१६
	बभूव	३३२
होइज्जइ	भूयते	४०३
होइत्यां	भवथः, भवथ	३२४
होईअइ	भूयते	४०३
होउ	बभूव	३३१
	भवतु	३३७
होएइ	भावयति	४०२
होज्ज	भवन्ति, भवतः	३२३
होज्जइ	भवति	३२१
होज्जा	भवन्ति, भवतः	३२३
होज्जाइ	भवति	३२१
होज्जंति	भवन्ति, भवतः	३२३
होज्जांति		
होज्जेइ	भवति	३२१
होज्जेति	भवन्ति, भवतः	३२३
होम	भवावः, भवामः	३२६
होमि	भवामि	३२६
होमु	भविष्यामि	३३६
	भवानि	३३७
	भवावः	३२७
	भवामः	३२७
	बभूव	३३२
होमो	भवावः	३२७
	भवामः	३२७
	बभूव	३३२
	भवामः	३३७
	भविष्यामः	३३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
होस्साम	भविष्यामः	३३७
होस्सामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
होस्सामु	भविष्यामः	३३७
होस्सामो	भविष्यामः	३३७
होसि	भवसि	३२४
होसु	बभूविय	३३२
	भवितासि	३३४
	भव	३३७
होस्सं	भविष्यामि	३३७
		३३६
होह	भवथ, भवथः	३३४
	भवितास्थः	३३४
	भवत	३३७
होहाम	भविष्यामः	३३७
होहामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
होहामु	भविष्यामः	३३७
होहामो	भविष्यामः	३३७
होहिइ	भविता	३३३
	भविष्यति	३३७
होहित्य	भविष्यत	३३७
होहित्या	भविष्यामः	३३७
होहिम	भविष्यामः	३३७
होहिमि	भविष्यामि	३३६
		३३७
होहिमु	भविष्यामः	३३७
होहिमो	भविष्यामः	३३७
होहिस्सा	भविष्यामः	३३७
	भवितास्मः	३३७
होहिसि	भवितासि	३३४
	भविष्यसि	३३७
होहिह	भविष्यत	३३७
होहिहां	भवितास्थ	३३४
होहिति	भवितास्मः	३३४
	भविष्यन्ति	३३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
होहीअ	वभूव	३३०		भवितारः	३३४
	अभूत्	३३७		भवन्तु	३३७
होति	भवन्ति	३२३	हं	अहम्	२६५
होतु	वभूवुः	३३२			

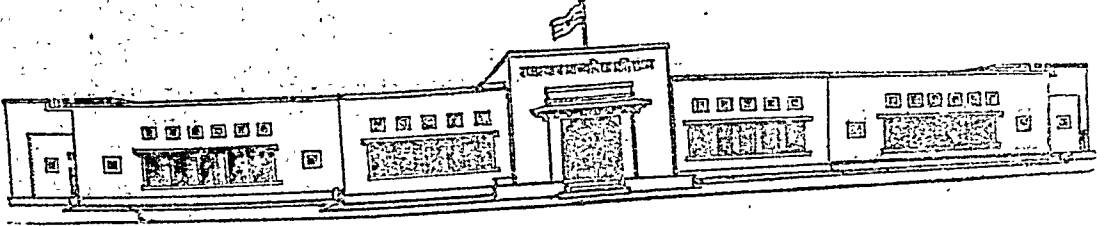
सानन्दं प्राकृतानन्दे शब्दानामनुसूचिका । मुनीनां प्रीतये सेयं जिनविजयसूरीणाम् ॥ १
 दृगिन्दुनभनेत्राव्दे सासे भाद्रपदे शुभे । कृष्णः षट्म्यां गुरी वारे कृता गोपालशर्मणा ॥ २



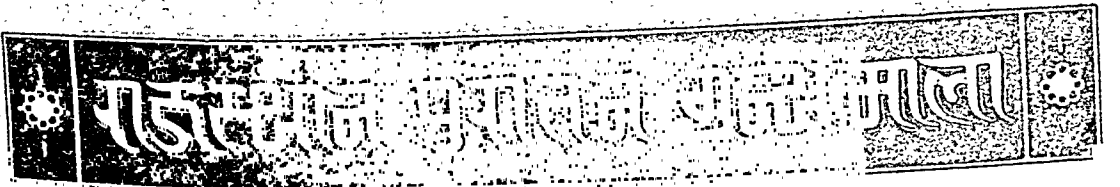
राजस्थान सरकार

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
(Rajasthan Oriental Research Institute)

जोधपुर



सूची-पत्र



प्रधान सम्पादक - पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

अक्टूबर १९६३ ई०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-साला

प्रधान सम्पादक-पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

१. संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश

१. प्रमाणमंजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक - मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर । मूल्य-६.००
२. यन्त्रराजरचना, महाराजा-सवाईजयसिंह-कारित । सम्पादक-स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद, जयपुर । मूल्य-१.७५
३. मर्हाषिकुलदैभवम्, स्व० पं० मधुसूदनश्रीभा-प्रणीत, भाग १, सम्पादक-म० म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी । मूल्य-१०.७५
४. मर्हाषिकुलदैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन श्रीभा प्रणीत, भाग २, मूलमात्रम् सम्पादक-पं० श्रीप्रद्युम्न श्रीभा । मूल्य-४.००
५. तर्कसंग्रह, अन्नभट्टकृत, सम्पादक-डॉ. जितेन्द्र जेटली, एम.ए., पी-एच. डी., मूल्य-३.००
६. कारकसंबंधोद्योत, पं० रभसनन्दीकृत, सम्पादक-डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य-१.७५
७. वृत्तिदीपिका, मोनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक-स्व.पं. पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य । मूल्य-२.००
८. शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक-डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच.डी. । मूल्य-२.००
९. कृष्णगीति, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका-डॉ. प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१.७५
१०. नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका-डॉ. प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१.७५
११. शृङ्गारहारावली, श्रीहर्षकवि-रचित, सम्पादिका-डॉ. प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच.डी., डी.लिट् । मूल्य-२.७५
१२. राजचिनोदमहाकाव्य, महाकवि उदयरजप्रणीत, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उपसञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-२.२५
१३. चक्रपाणिविजय महाकाव्य, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक-पं० श्रीकेशवराम काशीराम शास्त्री । मूल्य-३.५०
१४. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक-प्रो. रसिकलाल छोटालाल पारिख तथा डॉ० प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-३.७५
१५. उक्तिरत्नाकर, साधसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक-पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजयजी, पुरातत्त्वाचार्य, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-४.७५
१६. दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक-पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य । मूल्य-४.२५
१७. कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथविरचित, इन्हीं कविवर की अपर संस्कृत कृति श्रीकृष्णालीलामृत सहित, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., मूल्य-१.५०
१८. ईश्वरविलासमहाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक-भट्ट श्रीमथुरानाथशास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर । स्व. पी. के. गोडे द्वारा अंग्रेजी में प्रस्तावना सहित । मूल्य-११.५०
१९. रसदीपिका, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम.ए. मूल्य-२.००
२०. पद्ममूक्तावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक-भट्टश्रीमथुरानाथशास्त्री, साहित्याचार्य । मूल्य-४.००
२१. काव्यप्रकाशसंकेत, भाग १ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पा०-श्रीरसिकलाल छो० पारिख, अंग्रेजी में विस्तृत प्रस्तावना एवं परिशिष्ट सहित । मूल्य-१२.००

